Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

112760

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ध पत्रिका

वर्ष-२६
अङ्क-२

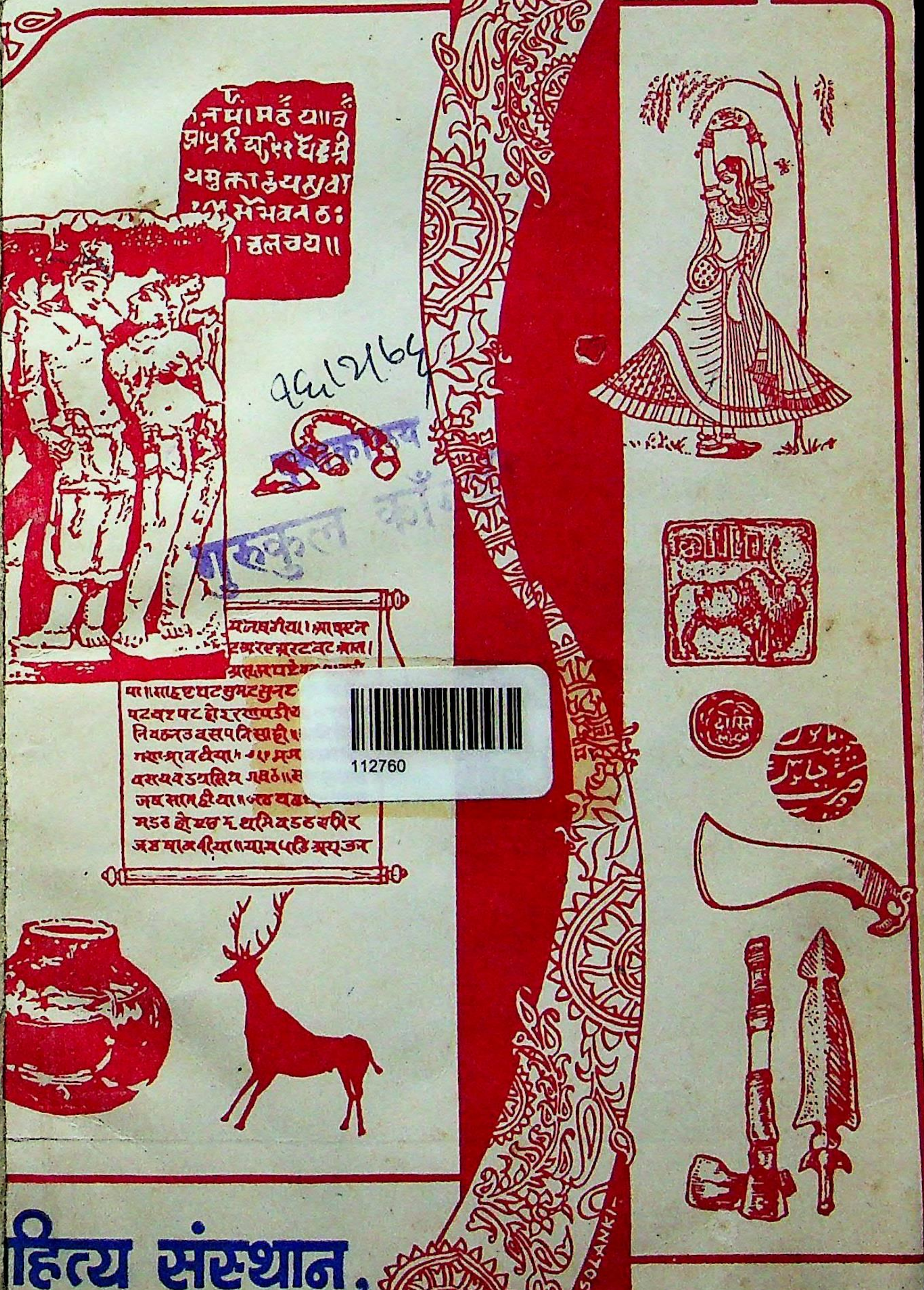

112760

हित्य संस्थान,
जस्थान विद्यापीठ, उदयपुर.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुरातन इतिहास, पुरातत्त्व, साहित्य,
भाषा, दर्शन, कला व संस्कृति की
त्रैमासिक अनुसंधानिका

परामर्शदाता
डॉ० रघुवीरसिंह
डॉ० दशरथ शर्मा
डॉ० मोतीलाल मेनारिया
श्री रत्नचन्द्र अग्रवाल
श्री अगरचन्द नाहटा

इस अङ्क का मूल्य : तीन रुपया

वार्षिक { देश में—दस रुपया
विदेश में—पन्द्रह रुपया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

112760

शोध-पत्रिका

वर्ष २६, अंक २

अप्रेल-जून, १९७५

सम्पादक

डॉ० देवीलाल पालीवाल

प्रबन्ध-सम्पादक

उमाशंकर शुक्ल

साहित्य संस्थान, राजस्थान विद्यापीठ, उदयपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषयानुक्रम

क्रम संख्या	लेख	लेखक	पृष्ठ
१	प्राचीन हस्तलिखित सामग्री की सुरक्षा राष्ट्रीय हित का तकाजा (सम्पादकीय)	—डॉ० देवीलाल पालीवाल	३–४
२	Swami Dayanand in Rajputana	—Prof. Sri Ram Sharma	५–२२
३	मानववाद की परिकल्पना और भक्ति-कालीन कवियों का योगदान	—डॉ० रमाकान्त शर्मा	२३–२८
४	पूर्व-मध्ययुगीन गुर्जर देश के ब्राह्मण नामों का विवेचन : एक आभिलेखिक अध्ययन	—डॉ० गौरीशंकर तिवारी	२९–४९
५	राजस्थानी चारण साहित्य की ऐतिहासिक काव्य-कृतियां	—डॉ० जगमोहनसिंह परमार	५०–६५
	शोध सामग्री : सर्वेक्षण		
६	बून्दी-टोंक के भित्ति चित्र	—श्री ब्रजमोहनसिंह परमार	६६–७१
७	स्वामी दयानन्द का एक अप्रकाशित पत्र	—श्री भगवतीलाल सचेती	७२–७४
	विमर्श		
८	अचलदास खीची री 'वचनिका' का रचना-काल	—श्री वेद प्रकाश गर्ग	७५–७९
	समीक्षा		
	पृथ्वीराज रासो-इतिहास और काव्य	—डॉ० ब्रजमोहन जावलिया	८०–८२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राचीन हस्तलिखित सामग्री की सुरक्षा राष्ट्रीय हित का तकाजा

पिछले दिनों नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित हिन्दी ग्रंथों की त्रैमासिक खोज रिपोर्ट तथा हस्तलिखित संयुक्त ग्रंथ प्रथम एवं द्वितीय खंड का प्रकाशनोद्घाटन किया गया। उस समय केन्द्रीय ऊर्जामंत्री श्री कृष्णचन्द्र पंत ने हस्तलिखित लेखों को अधिक स्थायित्व प्रदान करने हेतु वर्तमान उपलब्ध वैज्ञानिक साधनों के उपयोग पर जोर दिया। इसी अवसर पर भारत के शिक्षामंत्री प्रो० नुरूल हसन ने प्राचीन हस्तलिखित सामग्री को ऐतिहासिक-शोध की दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण बताते हुए उसके सुरक्षा एवं व्यापक अध्ययन पर बल दिया। इसी प्रकार के विचार समय समय पर देश के गणमान्य व्यक्ति, विचारक एवं अधिकारी व्यक्त करते रहते हैं। इसके बावजूद प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथों, दस्तावेजों, ताम्रपत्रों आदि की सुरक्षा और उनके वैज्ञानिक विधि से अध्ययन की दृष्टि से कोई विशेष प्रगति दृष्टिगत नहीं होती।

कतिपय राज्यों को छोड़कर देश के अधिकांश भागों में प्राचीन हस्तलिखित सामग्री की सुरक्षा एवं समुचित अध्ययन के कार्य की बात तो अलग रही, ऐसी सामग्री के सर्वेक्षण एवं उपलब्धि की जानकारी प्राप्त करने का कार्य तक नहीं किया गया है। समाचार पत्रों में जगह-जगह पर इस प्रकार की बहुमूल्य सामग्री के लापरवाही के कारण नष्ट होने अथवा अज्ञानवश नष्ट किये जाने के समाचार प्रकाशित होते रहते हैं। ऐसी घटनाओं पर भारी अफसोस जाहिर किया जाता है किन्तु उसके पश्चात् की स्थिति में कोई परिवर्तन दृष्टिगत नहीं होता। यह भी सत्य है कि प्राचीन शोध-सामग्री के सर्वेक्षण, संग्रह एवं अध्ययन का कार्य व्यापक स्तर पर स्वतन्त्रता प्राप्ति से पूर्व स्वयंसेवी सार्वजनिक शोध संस्थानों द्वारा शुरू किया गया था। ऐसी संस्थाओं ने मुख्यत: महाराष्ट्र, बंगाल, पंजाब, उत्तर प्रदेश आदि राज्यों में बड़ा मूल्यवान कार्य किया। उनका अनुसरण करते हुए अन्य राज्यों में भी स्वयंसेवी संस्थाओं ने कार्य शुरू किया। राजस्थान में भी प्राचीन सामग्री के सर्वेक्षण एवं संग्रह का कार्य यत्र-तत्र उसी समय प्रारम्भ किया गया। राजस्थान विद्यापीठ ने इस राष्ट्रीय कार्य को आगे बढ़ाने की दृष्टि से सन् चालीस के बाद ही योजना बनाकर कार्य शुरु किया जिसके परिणामस्वरुप साहित्य संस्थान-शोध विभाग की विधिवत् स्थापना हुई एवं साहित्यिक एवं ऐतिहासिक शोध-खोज का कार्य प्रारम्भ किया गया। हस्तलिखित सामग्री के सर्वेक्षण एवं संग्रह के साथ-साथ उसी समय शोध-संदर्भ ग्रंथ—राजस्थान में हिन्दी के हस्तलिखित ग्रंथों की खोज के चार भाग साहित्य संस्थान ने प्रकाशित किये, जिसके लिये देश भर में भारी प्रशंसा हुई।

किन्तु स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद कई कारणों से स्वयंसेवी संस्थाओं के ये मूल्यवान प्रयास कमजोर होते गये हैं, जबकि ऐसे राष्ट्रीय महत्त्व के कार्य को अधिक बल एवं प्रोत्साहन मिलना चाहिये था। स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व ऐसे कार्यों में मुक्त जनसहयोग मिलता था, न केवल आर्थिक सहायता की दृष्टि से, अपितु सामग्री की जानकारी देने एवं जुटाने की दृष्टि से भी। किन्तु दुर्भाग्यवश अब स्थितियां बदल गई हैं और ऐसे कार्यों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को सभी स्तर पर राष्ट्रीय महत्त्व नहीं दिया जा रहा है। स्वयंसेवी संस्थाओं को सामग्री सर्वेक्षण, संग्रह एवं प्रकाशन की दृष्टि से न केवल आर्थिक सहयोग की कमी होती गई है बल्कि उनके लिये सामग्री की उपलब्धि में भी कठिनाइयां आती गई हैं। इस स्थिति को पैदा करने में प्राचीन शोध सामग्री की तस्करी एवं व्यावसायिक दृष्टिकोण ने बड़ा प्रभाव डाला है। ऐसी स्थिति में राज्य सरकारों को हस्तक्षेप करके योजनाबद्ध रूप से यह कार्य करना एवं स्वयंसेवी संस्थाओं द्वारा करवाना चाहिये था। किन्तु पिछले कई वर्षों से साहित्य संस्थान द्वारा इस दृष्टि से किये जा रहे प्रयासों का कोई फल नहीं निकला है। संस्थान द्वारा आयोजित प्रदेश के शोधकर्मियों के सम्मेलनों एवं सेमिनारों में इस दृष्टि से प्रस्ताव पारित करके राज्य सरकार का ध्यान इस राष्ट्रीय कार्य की ओर खींचा गया है तथा साहित्य संस्थान की ओर से बराबर शिक्षा विभाग को निवेदन किया गया है, किन्तु उसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा है। यद्यपि राज्य के शिक्षा विभाग ने पिछले आठ-दस वर्षों में राज्य के शोध-संस्थानों के कार्य-मूल्यांकन की दृष्टि से कई बार विशिष्ठ समितियां गठित की हैं किन्तु उन समितियों के प्रतिवेदन एक के बाद एक आलमारियों में बन्द कर दिये गये हैं।

खेदजनक बात तो यह है कि विश्वविद्यालयों की स्थापना के बाद शोध कार्य की दृष्टि से उनसे अपेक्षित प्रयास भी सम्पन्न नहीं हुए हैं। यदि यह कहा जाय कि राजकीय एवं राजनैतिक क्षेत्रों में प्रायः शोध कार्य को "प्राचीन मुर्दे उखाड़ने" का कार्य मात्र माना जाता है तो सम्भवतः गलत नहीं होगा। वस्तुतः आज की कई राजनैतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक समस्याएं हमारे प्राचीन के प्रति हमारे गलत ज्ञान एवं समझ के कारण हैं। यह गलत ज्ञान और समझ लगभग दो सौ वर्षों की ब्रिटिश दासता की स्थितियों के कारण तथा ब्रिटिश साम्राज्य के चाकर लेखकों द्वारा फैलाये गये असत्य एवं भ्रामक विचारों के कारण भारतीय समाज में पैदा हुए। राष्ट्रीय दृष्टि से ऐसी कई सामाजिक-सांस्कृतिक समस्याएं हैं, जिनकी जड़ें प्राचीन में हैं और जिनको हल करने के लिये मात्र राजनैतिक उपाय किये जाते हैं। किन्तु ये राजनैतिक उपाय तब तक समस्याओं को समूल नष्ट करने में सफल नहीं हो सकते जब तक कि सामाजिक स्तर पर विदेशी दासता के दौरान पैदा हुए गलत एवं अराष्ट्रीय विचारों एवं भ्रांतियों के खिलाफ वैचारिक संघर्ष नहीं चलाया जाता। प्राचीन ऐतिहासिक शोध सामग्री के प्रकाशन से जो तथ्य प्रकट हो रहे हैं और जो ज्ञान उपलब्ध हो रहा है, वे इस प्रकार के वैचारिक संघर्ष में राष्ट्र के लिये बड़ा उपयोगी सिद्ध हो रहे हैं। साम्राज्यवादियों ने भारत के प्राचीन में सिर्फ अनेकता, दासता, फूटपरस्ती, संकीर्णता, भेदभाव, असमानता एवं अन्य सामाजिक-सांस्कृतिक हीनता एवं बुराइयां ही देखी हैं। किन्तु राष्ट्रीय शोध द्वारा उद्घाटित तथ्य इसके विपरीत कहानी कह रहे हैं। शोधकर्मियों के अनवरत प्रयासों से प्रकट होने वाले तथ्यों एवं ज्ञान ने राष्ट्रीय एकता, समन्वय और सद्भाव पैदा करने में राष्ट्रीय नेताओं की बड़ी मदद की है। यह कार्य जारी रहना चाहिये। यह आवश्यक है कि राजनैतिक स्तर पर कार्य करने वाले सार्वजनिक कार्यकता प्राचीन शोध-खोज के इस राष्ट्रीय महत्त्व को भली भांति हृदयंगम करें।

—डॉ० देवीलाल पालीवाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Swami Dayanand in Rajputana

Prof. Sri Ram Sharma

2. Marwar
His Last Days and Death

Swami Dayanand left Udaipur on 1 March 1883 by road for Nimbahera and from there travelled by railway to Chitor. He had not yet made up his mind about his future programme but had planned to stay at Chitor for three days.[1] While he was there he received an invitation on 4 March from Rajadhiraj Nahar Singh, Chief of Shahpura, to visit his state. The chief had also sent his representatives to pursuade Swami Dayanand to visit Shahpura. Accordingly, Swami Dayanand left Chitor on 9 March for Rupaheli where arrangements had been made for his journey by road to Shahpura some ten miles from there. He reached Sharhpura the same day at 4. P. M.[2] The chief came to Swami Dayanand's camp in the evening and paid his respects. He stayed there for about two hours. This programme continued for five days and,thereafter,he decided to study MANUSMRITI under Swami Dayanand. As at Udaipur, chapters, seventh, eighth and ninth were studied. Occasionally, the chief accompanied Swami Dayanand in his morning walks and in some lonely place Swami Dayanand taught him Pranayam (control of breath).

1. *Letters and Notices, 390.*
2. Letters and Notices, 303; Ghasi Ram, II, 318; Laxman, 882; Lekh Ram, 570.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Naturally this opened the way to the study of YOGA SUTRAS and sometime, thereafter, of VAISESAK DARSANA.

Besides instructing the chief, Swami Dayanand continued his usual programme. He spent his mornings in his work on the COMMENTARY ON THE RIGVEDA. After his mid-day meal he had a short nap for about fifteen minutes and, thereafter, he examined the proofs and the press-copies and looked after his correspondence. At About 4 o' clock in the evening he would be ready for meeting such enquirers as came to see him. Usually at this time he would expound some principle of religion or of daily conduct to those who were present. After his evening meal this programme was repeated if there were still some people interested in religious matters. He went to sleep precisely at 10 o'clock every night as soon as his head touched the pillow. He rose every morning at 4 o' clock.

Swami Dayanand had planned probably a longer stay at Shahpura. But he received a letter on 30 April 1883 form Rao Raja Tej Singh inviting him to Jodhpur. He showed the letter to Nahar Singh who was not very willing to interrupt his studies so abruptly. Swami Dayanand wrote back to Rao Raja Tej Singh that he should wait for another letter from him before sending a representative of the State to Shahpura. In about twenty days' time, Swami Dayanand hoped, the Chief of Shahpura would let him go. Swami Dayanand was not, however, very anxious to accept the invitation without further enquiries. Earlier a false rumour had gained ground that he had been imprisoned for life by the Maharaja of Jodhpur. In his letter of 28 March 1883 from Shahpura to Bihari Lal, Swami Dayanand had contradicted the rumour which had been published in some newspapers.[1] He now consulted Kaviraja Shyamal Das in Udaipur about the advisability of his visiting Jodhpur and even suggested that he might consult the Maharana

1. Letters, 397.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

in the matter.[1] Swami Dayanand was not sure whether the invitation was from the State or from Rao Raja Tej Singh.[2] He sent the original letter of Rao Raja Tej Singh to Kaviraja Shyamal Das and once again asked him whether he should accept the invitation.[3] Swami Dayanand by that time knew the pace at which things moved in Indian States. He hoped to hear from Kaviraja Shyamal Das before Rao Rajo Tej Singh moved further in the matter. Kaviraja Shyamal Das had some trouble with his eyes then. He might not have even liked to commit himself in writing on such a delicate issue.

Meanwhile, Munshi Damodar Das and Barhat Amar Dan reached Shahpura on 21 May 1883 in order to take Swami Dayanand from Shahpura to Jodhpur.[4] Rao Raja Tej Singh seemed to have read Swami Dayanand's letter in answer to his invitations as implying his readiness to visit Jodhpur. Swami Dayanand, thereafter, decided to leave Shahpura on 26 May for Jodhpur.[5]

He left Shahpura on 26 May reaching Ajmer on 27th evening.[6] Here he made a short stay and left Ajmer on 28 May for Pali, the last railway station in Jodhpur State. The state had sent Charan Navldan and Sadulji to meet him at the railhead where arrangements had been made for his travel by road to Jodhpur. He reached Jodhpur on 31 May.[7] Suitable arrangements were made for Swami Dayanand's stay at Jodhpur in Bhai Faizullah Khan's house.[8] Soon after his arrival, Maharaj Pratap Singh and Rao Raja Tej Singh called

1. Letters, 412.
2. *Letters*, 424, Letter to Rao Raja Tej Singh of 10 May 1883.
3. Letters, 417.
4. Lekh Ram, 859.
5. *Letters, 321, 322.*
6. *Letters, 422, 423.*
7. Letters, 424.
8. Letters, 425.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

upon him.[1] Swami Dayanand issued a public notice on 2 June that from 3 June he would give discourses on various religious and social subjects every evening from 6 to 8 P.M.[2] It has been suggested that Swami Dayanand started his public lectures the day after the Maharaja visited him. Lekh Ram and Ghasi Ram have given the time of the lectures as 4 to 6 in the evening. In view of Swami Dayanand's notice issued on 2 June after Maharaj Pratap Singh, the Prime Minister of the State, had called on him, it is difficult to believe that he remained inactive for about four weeks till the Maharaja of Jodhpur himself had visited him. It is possible that a second series of discourses from 4 to 6 P.M. was started from 28 June or the time of discourses changed to 4 to 6 P.M. Ramanand's letter of 25 June 1883 speaks of daily visits of enquirers after truth, and even speaks of some lectures delivered by Swami Dayanand as well. This letter was written before the Maharaja had called on Swami Dayanand. Swami Dayanand's own letter of 30 June to Babu Nand Kishor Singh[3] declares that only two public lectures had been delivered till then. But it also adds that a large number of people called on him every day, naturally, seeking religious enlightenment.

Swami Dayanand evinced his keen interest in the Ruling House by writing a letter to Maharaj Pratap Singh on 23 June.[4] In this letter he expressed his anxiety about the health of Maharaj Pratap

1. Lekh Ram, 860, Ghasi Ram, II, 326
2. *Letters*, 432.
3. Letters, 435, 436.
4. Lekh Ram dates this letter as written on 22 September 1883, (864). But Bhagwad Dutt has rightly suggested that the letter was not written on Ashwin Vadi 3 which was a Wednesday and not a Saturday as put down in this letter. Ashad Vadi 3 was a Saturday and the abbreviation 'A' in the letter, therefore, stands for Ashad and not Ashwin (*Letters*, 431, note 1).

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Singh and his brother and reminded him that both the Ruler and his Prime Minister were responsible for the welfare of some sixteen lakhs of people in the State. The way in which they spent their time was not simply a matter which affected them alone, it affected their subjects as well. He told him that he would draw up a programme for them suggesting how they could spend their time to better effect. He complained of the laziness of the Maharaja which, he thought, would be cured by the daily time table he would suggest for them both. Swami Dayanand seems to have been irked by the Maharaja's failure to call on him and in this letter he informed Maharaj Pratap Singh that after the proposed discussion with orthodox Pundits on 27 June he intended to leave Jodhpur. Thus the letter seems to have had its effect, and the Maharaja called on Swami Dayanand on 26 June at his camp. He had been ill when Swami Dayanand arrived at Jodhpur and now hastened to pay his respects. The Maharaja behaved like an humble disciple come to pay his respects to his guru and would not sit on the chair provided for him.[1] Swami Dayanand, however, insisted on his occupying the second chair in the room. The Maharaja spent about two hours listening to Swami Dayanand's discourse and promising to visit him more frequently in the future, took his leave at 8. P.M.[2]

---

1. Gopal Hari Sharma declares that Swami Dayanand was sitting on a raised platform and insisted on Maharaja's sharing it with him (Vol. III, 158.)
2. Letter dictated by Swami Dayanand and written by Damodar Das in Urdu on 27 June 1883; Letters 433, 434; Gopal Hari Sharma, III, 158; letter of Swami Dayanand to Shahpuradhish written on 30 June 1883; Letters 436. Some biographers have put Maharaja's call on 17 June and thus cut short his period of silence by ten days. Pandit Gopal Hari Sharma declares wrongly that the Maharaja came to call on Swami Dayanand soon as he heard of his arrival, Vol. III, 158; Lekh Ram (860) declares that the Maharaja came to visit him seventeen days after Swami Dayanand's arrival; Laxman II,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Swami Dayanand's discourses seem to have created some stir in the city. A religious discussion challenging Swami Dayanand seems to have been talked about. He suggested that if one was to be held, the Prime Minister should be present.[1] In his discussion with a Muslim scholar at Udaipur the Maharana himself was present. There was, therefore, nothing extraordinary in Swami Dayanand's suggesting that here the Prime Minister should attend the discussion. The talk ultimately came to nothing and no discussion was held.

Another attempt at challenging Swami Dayanand to a religious discussion was made by the Chakarankat sect of the Vaisnavas.[2] This again came to nothing as the opposition insisted on having one of themselves as a moderator in the debate. Swami Dayanand offered to meet his opponent at his own place. But the opposition refused to accept the suggestion.

As usual many neo-Vedanatists came to convert him to their own views but they found Swami Dayanand's logic too much for them and returned disappointed.

Among those who called on Swami Dayanand here were some Muslims as well, including the former Prime Minister of Jodhpur, Bhayya Faizullah Khan. On hearing Swami Dayanand criticising Islam

---

(890)nautrally follows Lekh Ram; Ghasi Ram, II, 325, says the same. Swami Dayanand's letter to Shahpuradhish is, however, conclusive. Maharaj Sir Pratap Singh declares wrongly in his official Biography that as soon as he heard of Swami Dayanand's arrival along with his brother, the Maharaja, he came to call on him. The brother accompanying him in this first visit was Rao Raja Tej Singh. Cf. *Biography of Maharaja Sir Pratap Singh*, 193, 194.

1. Cf. *Letters*, 430, 431.
2. Laxman, II, 892; Ghasi Ram, II, 328; Lekh Rem, 861; Letters 430, 431.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Faizullah khan lost his temper and told Swami Dayanand that he should thank his stars that he was not living in an independent Muslim state in which such criticism would have cost him his life. Swami Dayanand had been threatened too often by enraged persons, losing their sense of proportion when he questioned their beliefs and was therefore, in on way perturbed. He told Bhayya Faizullah Khan that in that case he would have probably assigned to some brave Rajput the duty of taking care of him.[1]

Swami Dayanand had hoped that, as in Udaipur and Shahpura, he would be able to influence the Ruler and thereby affect the administration in the State for the better. But he found Jodhpur riddled with evils of many kinds and the Ruler not ready to adopt the remedy suggested, or bring about a change in the atmosphere which could be helpful. He was able to bring about some little form[2] The introduction of Hindi as the language of office-record and translations and the use of the cloth produced in Jodhpur for State purposes. His stay in Jodhpur did not seem to affect either the Ruler or the administration very much. By 30 July Swami Dayanand got nearer to, at least, Colonel Pratap Singh if not to the Maharaja himself[3]

He addressed a letter to the Maharaja in which after praising him for many of his qualities, he drew his attention to some of his failings and advised him to give up drinking, gambling, keeping the company of loose women aad flaunting a mistress. He also advised him, as he had done the Maharana of Udaipur, to devote at least six hours daily to matters of State administration. He gravely warned him against running after women outside his own spouses.[4] This letter was followed

---

1 Laxman, II 892; Ghasi Ram, II, 328; Lekh Ram, 861; Letters 430, 431.

2 *Letters and Notices*, 438.

3 Letter of 30 July to Barhat Krishan Ji; *Letters*, 442.

4 *Correspondence*, 98 and ff; Cf. *Letters*, 443.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

by another letter.[1] Finally probably, early in September Swami Dayanand addressed a very strong letter to Maharaja Jaswant Singh in two parts; the personal admonition to him was contained in the second confidential part. In the interest of his chiefs and his subjects Swami Dayanand asked Maharaja Jaswant Singh to give up his relations with his mistress, Nanhi Bhagtan. He told him that instead of his paying visits to the ailing relative of his mistress it would redound more to his credit if he called upon his ailing chiefs and joined them in their festivities. He also reminded him that his eldest son and successor would follow him in his footsteps, and thus his way of life would have a cumulative effect. In order to bring him round to his views he praised him for his not imitating Europeans in their dress and asked him to go further and remould his way of life as suggested above so that thousands upon thousands of his subjects might derive benefit from his greater attention to their welfare. He also advised him to appoint a Hindu as a tutor to the Maharaj Kumar lest he should learn the vices which he could easily imbibe from a Christian or a Muslim. As Swami Dayanand had not been able to influence the Maharaja's way of life very much, he declared that his visit to Jodhpur had not been of much use and had simply caused needless expenditure to the State. He informed the Maharaja that he would not stay in Jodhpur for more than twenty five days more unless some thing special caused him to believe that his stay was necessary and could prove beneficial to the State.[2]

Meanwhile on the night of 12 September there had been a theft in Swami Dayanand's camp. A bag containing some valuables worth about Rs 550 was stolen by Kalu, a servant in his camp whom he had employed at Shahpura. Swami Dayanand lodged a formal report

1 *Letters*, 450.

2 *Correspondence*, 92, 97; *Letters*, 463-465. This letter is undated. Bhagwad Dutt auggests that it was written on 8 September, 1883.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

with the police and Informed the State Government but no trace of the culprit could be found.[1] As the servant was an inhabitant of Bharatpur State Swami Dayanand wrote to the Secretary, Arya Samaj, Ajmer so that the Agent to the Governor General could be moved to ask the Bharatpur State to make enquiries in the matter.[2] Nothing, however, came of the enquiries made by the Jodhpur State or action, any taken, by the Agent to the Governor General.[3]

This naturally upset Swami Dayanand and on 24 September he decided to leave Jodhpur soon[3]. Fortunately he had received an invitation from Masuda about this time and wrote back that he would leave Jodhpur on 1 October[4], if rains did not make travelling impossible.

On 27 September Swami Dayanand caught cold. It had not yet left its grip on him, when on the night of 29 September his sleep was disturbed by vomiting accompanied by some pain. He does not seem to have taken it seriously enough to disturb those around him. After every vomit–he had three–he himself fetched water and cleansed his mouth. On account of his disturbed sleep that night he overslept and rose later than usual in the morning. As he left his bed he had another attack of vomiting. This time he not only cleansed his mouth but induced vomiting to ease himself.[5] To remove the foul smell he

---

1 Lekh Ram, 864; *Letters*, 466.

2 *Correspondence*, 191, 193; Letters to the Secretary, Arya Samaj in the register of *Desh Hiteshi*, cited in *Letters*, 470.

3 Inspite of Pandit Lekh Ram's clear indication and Swami Dayanand's own letter of 13 September some biographers, including Ghasi Ram (II, 326) place this theft wrongly on the night of 25 or 26 September.

4 Letters. 471, 472, 473.

5 Ghasi Ram asserts that when on rising next morning he had

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

had sweeet–smelling dried herbs burnt in the room. He followed it up by getting a decoction of some Indian medicine prepared, and took it in order to relieve his stomach-ache.[1] Swami Dayanand does not at this time seem to have suspected any thing injurious to his health in what he had taken the previous night.

Surajmal, the medical officer attached to the jail, was now called.[2] When he came he found Swami Dayanand running a temperature. He gave some medicine to stop vomiting and lower the temperature. The temperature came down but the trouble in the stomach continued. At about 4 P. M. Maharaj Pratap Singh was informed. He ordered Alimardan Khan, the Chief Medical Officer of the State, to attend Swami Dayanand in his illness.

When Alimardan Khan came in the evening, he had a belt tied round Swami Dayanand's stomach to keep it warm and suggested cupping Swami Dayanand. As it was late in the evening, he postponed it to the next morning.[3]

---

another vomit, Swami Dayanand suspected that he had been given some thing to eat in which poison was mixed. Lekh Ram says that Swami induced vomiting on 30 th morning because he had some suspicion, (Lekh Ram, 865.) Lekh Ram adds in parenthesis that his local research later on revealed that ground glass had been given in milk.

1 Lekh Ram, 865.

2 Lekh Ram, 865; Gopal Hari Sharma, III, 161. Cf. however, Ghasi Ram, II, 336 where it is asserted that Rao Raja Tej Singh informed Maharaj Pratap Singh. Lekh Ram and Gopal Hari Sharma declare that when Rao Raja Tej Singh came at 8 P. M. Alimardan was already there.

3 Gopal Hari Sharma, III, 161, 162; Lekh Ram, 865.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

It had rained heavily on 29 September. Swami Dayanand wrote to Masuda that on account of the rains he would not leave Jodhpur on 1 October, but would leave after a week or so[1].

On 1 October, Swami Dayanand was cupped. This relieved him of the pain he had felt when he coughed. On the morning of 2 October Swami Dayanand suggested that he should be given a purgative. On 3 October a purgative was administered. Alimardan khan, it has been suggested, deliberately,[2] miscalculated the amount of the dose to be administered. The motion started coming in quick succession. At 10 A. M. when the doctor came next morning Swami complained of their frequency. On 6 October Swami Dayanand told the doctor that it was time the motion stopped. Alimardan, however, declared that to stop them was not advisable. They would stop by themselves after the stomach had been cleansed[3]

The motions continued and weakness naturally increased. Very often Swami Dayanand fainted after every motion.[4] Meanwhile blisters had appeared in Swami Dayanand's mouth, on the tongue,in the throat, on the forehead and on the head. Hiccough also started troubling him. On account of all these troubles Swami Dayanand was in great pain but he bore it patiently.[5] Alimardan Khan's treatment continued till

1 Letters, 482.

2 Devinder Babu (in Ghasi Ram) and following him Sarda have given an analysis of the medicine given by Alimardan. This is probably based on the information given by Suraj Mal to Devinder Babu.

3 Lekh Ram, 865.

4 Lekh Ram, 865, Alimardan Khan does not seem to have done anything to mitigate the increasing weakness of Swami Dayanand.

5 He made no suggestion, as he had done earlier, about his reatment.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

15 October even though Swami Dayanand got no better. Swami Dayanand did not realize the seriousness of the disease he was suffering from. That is why when the stipulated seven or eight days after 1 October had gone by, he did not inform the Rao of Masuda that on account of his illness,he could not leave Jodhpur as promised earlier. on 12 October a member of the Arya Samaj, Ajmer read in the *Rajputana Gazett* that Swami Dayanand was ill at Jodhpur. Worse news about Swami Dayanand had appeared in some of the newspapers earlier; the members of the Arya Samaj for some time took no notice of it. But finally Lala Jeth Mal left Ajmer and reached Jodhpur on 15 October to find Swami Dayanand ill. When Jeth Mal complained that Swami Dayanand should have informed his well-wishers outside Jodhpur, Swami Dayanand told him that illness was a natural phenomena to which human body was subject. It was not necessary for him to trouble others about it.[1]

Even after much suffering for a fortnight he had not yet realized how seriously ill he was. It was now suggested that he should leave Jodhpur and go elsewhere, where more competent medical aid might be available. On this the Residency surgeon, Dr. Rodemus, was called to examine Swami Dayanand. He favoured the suggestiion that Swami Dayanand should go to Abu[2] and probably suggested that there he might be put under the treatment of the Chief Medical officer of Rajputana, Col. Spensor. Maharaja Jaswant Singh, Thereupon, agreed to Swami Dayanand's leaving Jodhpur and made suitable arrangements for his comfortable stay at Abu at his own residence. Arrangements were now set on foot for Swami Dayanand's leaving Jodhpur for Abu.[3]

---

1 Lekh Ram, 868; Gopal Hari Sharma. III, 162; Ghasi Ram, II, 339.

2 Ibid.

3 Lekh Ram, 869.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Maharaja Jaswant Singh called on Swami Dayanand on 16 October just before his departure. He expressed his regret that Swami Dayanand had to leave Jodhpur while ill. He requested him to visit Jodhpur again after regaining his health. To make his journey to Abu comfortable he did all that was necessary. Surajmal was ordered to accompany him, probably right up to Mount Abu. The Maharaja's own palanquin was brought out to carry him comfortably. As Swami Dayanand got into it, the Maharaja paid him all the honours due from a disciple to his Guru.[1]

To escape the discomfort to travel in the day, Swami Dayanand travelled at night. He reached Rohit next morning and rested there for the day. Pali was reached on 18 October. Surajmal and Jethmal had accompanied Swami Dayanand throughout his journey. At Pali Dayanand gave leave to Surajmal to return to Jodhpur to look after his ailing wife. Jethmal went to Ajmer to consult a Hakim about Swami Dayanand's illness. He met Swami Dayanand at Marwar Junction with the medicine obtained from Pir Imam Ali, a famous Indian physician of Ajmer. This was to slacken Swamiji's thirst which had been troubling him greatly.

From Marwar Junction Swami Dayanand travelled to Abu Road by rail and from there to Abu by road. While he was being carried from Abu Road, Lachhman Das, a Punjabi Sub-Assistant Surgeon, was coming from Abu to go by train from Abu Road to Ajmer, to which place he had been transferred. He met Swami Dayanand's party and enquired about the identity of the person being carried in the 'royal' palanquin. On learning that the patient was

---

1 Gopal Hari Sharma, 166

2 Lakh Ram tells us that Pirji gave Jeth Mal a medicine for slackening Swami Dayanand's thirst and Pirji named the disease as well (868).

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Swami Dayanand. Lachhman Das decided to accompany him to Abu and take him under his treatment. His treatment greatly relieved Swami Dayanand. Desirous of continuing the treatment, Lachhman Das applied for leave on 23 October. Col. Spensor, the Chief Medical officer of Rajputana, was surprised to find Doctor Lachhman Dass still at Abu and would not grant him further leave to stay at Abu to treat Swami Dayanand. As requested by the Maharaja he and his assistant Gurcharan Das. visited Swami Dayanand and prescribed for him. Maharaj Pratap Singh came to Abu on 26 October and after visiting Swami Dayanand he returned to Jodhpur. Suggestions were made to Swami Dayanand that he should move down to Ajmer. Possibly he felt some improvement in his condition at Abu and would not at first agree to leaving the place. Ultimately he was persuaded to leave Abu, As Pir Imam Ali had warned Lala Munna Lal that the rains and cold at Abu might have proved harmful to Swami Dayanand's health. He might have discovered by now that Abu was too cold and too wet for him.[1]

On 26 October Swami Dayanand left Abu for Ajmer. The journey to Abu Road was performed by road in a palanquin. At Abu Swami Dayanand had expressed a desire to take some curd, probably because he thought that his main trouble was dysentry and curd might give him some relief. When he reached Abu Road curd was found available and he took as much of it as he desired.[2]

Swami Dayanand was then placed in a first class compartment. To look after him during the journey to Ajmer, some of his attendants also occupied the same compartment.

1 Ghasi Ram suggests that he had some sleep on 24 Oct. Ghasi Ram, II, 346.

2 Letters of Munna Lal to Swami Dayanand; *Correspondence*, 98, 99, (ed) Munshi Ram. This letter was written while Swami Dayanand was preparing to leave Marwar Junction. Cf. Appendise II.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Though the train reached Ajmer at 3. A. M. several Arya Samajists of Ajmer who had been informed of his journey, were present at the railway station to receive him. He tried to get up from his berth and come down to the platform. The exertion proved too much for him and he fainted. He was then carried out of the train and placed in a palanquin which took him to Bhanai House, the residence of Rao Bahadur Singh of Masuda.

As soon as he reached there Lachhman Das was sent for. He examined Swami Dayanand and found him now in the grips of pneumonia. He began his treatment. Within three days it seemed, he was able to bring the disease well under control. On 28 October Swami Dayanand was well enough to persuade some Arya Samajists who had come from outside to go back to their places. Lachhman Das found the improvement in his patient's condition so great that he became sure that the crisis was over and that the disease would soon disappear. He went so far as to assert that within three days Swami Dayanand would be on his legs again.[1] On 28 October Swami Dayanand suggested to those in attendance upon him that they should take him to Masuda. They replied that they would do so an soon as he had recovered his health.[2]

On 29 October Swami Dayanand asked his attendants to help him to sit up in bed. When they did so, he told them that he did not need any support. The Arya Samajists present were very happy because this apparently implied that his condition was on the mend.[3] Bnt this seemed to have been the last flicker of a powerful flame.

---

1 Ghasi Ram, II, 348.

2 Gopal Hari Sharma's account of Swami Dayanand's illness has been rep roduced in an English translation in an appendix to this article.

3 Lekh Ram. 870.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

In the evening Lachhman Das left Swami Dayanand's bedside, feeling that his patient was well on the road to recovery. He left strict directions that care should be taken to protect Swami Dayanand from cold wind. When he returned after taking his evening meal he discovered, to his dismay, Swami Dayanand's bed in the verandah and his patient expressing thankfulness for the cool breeze that was blowing there. He waited for sometime and then had Swami Dayanand's bed taken inside. Lachhman Das was naturally upset at Swami Dayanand's thus having been exposed to cold. He became afraid that his patient's condition might get worse.

Young Guru Dutt from Lahore had reached Ajmer by then. Lachhman dass thought that he needed a youngman with him to keep vigil on Swami Dayanand during the night. He conveyed his fears to Guru Dutt and enlisted his help. Both of them undertook to sit by Swami Dayanand's bedside by turns Young Guru Dutt took the first turn and sat watching Swami Dayanand when at about 12 O'clock he found his condition deteriorating. He awakened Lachhman Das who, on examining Swami Dayanand, found him in a critical condition. He immediately cupped him. This brought some relief. But Lachhman Das was still worried. The next morning he suggested that some more qualified and experienced physician might be consulted. A reply-paid telegram was sent to Dr. Mukand Lal, a famous Indian physician of Agra.

Pir Imam Ali was also called early next morning.[2] Not satisfied with this, the Arya Samajists called Dr. Newman, Civil Surgeon of Ajmer. He examined Swami Dayanand. Swami Dayanand had not left his bed for a month. His ailment had certainly been troubling him very much. Doctor Newman was surprised at the patience with which Swami Dayanand was bearing his suffering. Doctor Newman did not

1 Lekh Ram, 870; Ghasi Ram, II, 348, 349.

2 Ghasi Ram II. 349, 350; Sarda, 329.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

at first accept Lachhman Das's suggestion that the patient was surffering from acute pneumonia. His attention must have been drawn to some other symptoms of the patient. But an examination of the lungs convinced him that both lungs had got deeply congested. This had to be attended to immediately. He prescribed for acute pneumonia and the treatment he suggested was soon followed. After some time Swami Dayanand felt uncomfortable and had the poultice applied to his back but at Dr. Newman's suggestion it was removed.[1]

As the evening progressed Swami Dayanand and those attending on him became convinced that the end was drawing near. Swami Dayanand had the printed copies of his Trust-Deed distributed among those who were present He summoned all the Arya Samajists present to his bedside and as his eyes sought them out he seemed to be bidding them good bye. He spent some time in meditation and recitation of some VEDA MANTRAS and followed it up by declaring in the firm faith of a believer in God. "As this is your will, I accept it cheerfully !"[2] Soon after this he drew in his breath and as he expelled it he breathed his last at 6 P. M. on 30 October 1883.[3]

---

1 Ghasi Ram, II, 350.

2 Gopal Hari Sharma, III, 171.

3 When Pandit Lekh Ram contacted Pir Imam Ali several years later on, he declared that he was called upon to examine Swami Dayanand on 30 October. (Lekh Ram, 87). But pir Imam Ali who seems to have forgotten by then how he had been contacted, earlier, declared that he had either received a telegram or was contacted by someone in person. He learnt either from the telegram or the messenger, that *Swami Dayanand* believed that he had been poisoned. Ghasi Ram and Sarda, however, agree that Pirji gave Lala Jethmal or Kanwal Nain no medicine for removing the effect of poison. Munshi Devi prasad told me in 1922 that arsenic had been administered to Swami Dayanand through the

112760

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Among those at his bedside was an agnostic, Guru Dutt. Though he was a member of the Arya Samaj, Lahore, his belief in God was shaky. The peaceful end of Swami Dayanand who bore all pain and sufferings in quiet submission to God's will shook his agnosticism to its very foundations and he went back to Lahore a firm believer in God.

The next morning Swami Dayanand's body was cremated according to his wishes. He had asked his ashes to be scattered to the four winds or used to fertilize a field. He was afraid that otherwise a mausoleum might he built to house them which may get the veneration which other such buildings were attracting in India and elsewhere.

---

agency of a gardener. A story was, later on, circulated in a letter published in *Saddharm Pracharak*, *Jullundhar*, which declared that Swami Dayanand almost immediately discovered that he had beeen poisoned by the person who gave him milk that night, and sent for him and gave him money enough to flee from Jodhpur immediately.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानववाद की परिकल्पना और भक्तिकालीन कवियों का योगदान

डॉ० रमाकान्त शर्मा

पुनर्जागरण : रिनेसांस और मानववाद: ह्यूमेनिज्म एक दूसरे से जुड़ी हुई अवधारणाएं हैं। इस सम्बन्ध में डॉ० ई० चेलिशेव का कथन ध्यान देने योग्य है–"जिस प्रकार यूरोपीय पुनर्जागरण युग के साहित्य और कला में मानववाद अन्तर्निहित था, उसी प्रकार भारत में भक्तिकाव्य के विकास में साधारण पार्थिव मनुष्य के अन्तर्जगत में रुचि तथा परिवेश के साथ उसके अन्तस्सम्बन्ध के मानवीय संरक्षण एवं प्रकृति के उद्घाटन की आकांक्षा सम्मिलित थी। भक्तिकाव्य मनुष्य की खोज करता है और आत्मा में झांकता है। ऐसा होने पर मानव का देवी–स्वभाव प्रायः पृष्ठभूमि में छूट जाता है और पार्थिव मनुष्य अपनी सारी भावनाओं और पीड़ाओं के साथ हमारे सामने आता है। भक्तिकाव्य में मनुष्य स्वयं अपनी उपासना करता है और उसमें असीम आनन्द प्राप्त करता है।"[1]

मानववाद 'ह्यूमेनिज्म' शब्द लेटिन भाषा के 'ह्यूमेनिटस' शब्द से उत्पन्न हुआ है। ह्यूमेनिटस का अर्थ अनन्त ज्ञान है। प्राचीन रोमन और ग्रीक ग्रन्थों के अध्ययन करने वालों को मानववादी कहा गया।[२] यूरोप में मानववादी अवधारणा का जन्म इटली के फ्लोरेन्स नगर में १४वीं से १६वीं शताब्दी के मध्य हुआ था। पेट्रार्क, दान्ते, मेक्याविलि आदि मानववादी विचारकों ने सम्पूर्ण यूरोप के देशों को प्रभावित किया। पश्चिमी जगत में अन्धकारयुग की समाप्ति में मानव-

---

1 E. Chelyshev (Dr.), On the Problem of the Renaissance Epoch in Indian culture, Page-6

२ डॉ० शर्मा एवं डॉ० श्रीवास्तव, आधुनिक विश्व का इति०, पृष्ठ १६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वादी विचारधारा ने सर्वाधिक महत्वपूर्ण योगदान किया है। अन्धकारयुग अर्थात मध्यकाल में धार्मिक घटाटोप के कारण समस्त मूल्यों और प्रतिमानों का स्त्रोत किसी न किसी दिव्य सत्ता को माना जाता था और मनुष्य को गिरा हुआ प्राणी समझा जाता था। मानववादियों ने यह घोषित किया कि मनुष्य ही मनुष्य का प्रतिमान है। मानववादी यह मानते हैं कि मनुष्य में जो पाशविक और दिव्य है, दोनों के मध्य कुछ ऐसा है, जो पूर्णतः मानवीय है और उसी को नैतिकता, कला, सौन्दर्यबोध तथा अन्य आचार-विचार का प्रतिमान मानना चाहिये।[1]

मानववाद की विचारणा को केवल यूरोप की उपज मानना असंगत होगा। भारत का दृष्टिकोण भी मानववादी रहा है। हमारे प्राचीन वाङ्मय में सम्पूर्ण विश्व के प्राणियों के प्रति प्रेम, भ्रातृत्व-भाव तथा सहयोग आदि मानववादी विशेषताओं को सर्वाधिक महत्ता दी गई है। जहां "वसुधैव कुटुम्बकम्" को प्रमुख सूत्र के रूप में स्वीकार किया गया हो उस देश के विशाल हृदय तथा मानववादी चेतना का कहना ही क्या? जो देश अनेक जातियों एवं अनेक वंशों की मिलन-भूमि रहा है, उसे मानववादी देश नहीं कहेंगे तो क्या कहेंगे?[2] जिस समय यूरोप के पुनर्जागरण काल में मानववाद अपने चर्मोत्कर्ष पर था ठीक उसी समय: १४वीं से १६वीं शताब्दी के मध्य: भारत में भी सन्त–भक्त कवियों ने मानववादी विचारधारा का जोरशोर से प्रचार किया। मध्यकालीन भक्ति–आन्दोलन ने दक्षिण से उत्तरी भारत में फैलकर लोकजीवन को नया मोड़ दिया। इसकी सबसे बड़ी देन सार्वभौम मानवता के आधार पर लोकधर्म और संस्कृति के समस्त सूत्रों को इकट्ठा करना था। इसके प्रवर्तकों और प्रचारकों ने जातिपांति और वर्ग-वैशिष्ट्य के भेद को मिटाकर सब मनुष्यों को समान घोषित किया। रामानन्दी सूत्र–

जातिपांति जाने नहिं कोई।
हरि को भजे से हरि को होई॥

—उनकी ललाटलिपि बन गया था।[3] भारतीय मध्ययुगीन पुनर्जागरण और मानववादी विचारधारा के अग्रदूत स्वामी रामानन्द ने सार्वभौम मानववाद पर आरूढ़ होकर समाज के सभी तत्वों को एकता के सूत्र में पिरोने का सफल प्रयास किया। चैतन्य-मत में मानववाद था और यह माना जाता था कि भगवान का मानव रूप ही उनका वास्तविक रूप है। इसी दृष्टि से चण्डीदास ने कहा था कि मनुष्य रूपी सत्य सबसे बड़ा है।

---

१ हिन्दी साहित्य कोश, भाग-१, पृष्ठ–४०४-४०५
२ रामधारीसिंह दिनकर; संस्कृति के चार अध्याय, पृष्ठ-भूमिका से
३ डॉ० बुद्धप्रकाश, भारतीय धर्म और संस्कृति, पृष्ठ १६२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और कुछ नहीं: "सबार ऊपरे मानुष सत्य, ताहर ऊपरे नाईः ।" सन्त कबीर तो सबसे बड़े मानववादी विचारक हुए ही हैं उन्होंने मानव समाज की भौतिक एकता की और सर्व-साधारण का ध्यान आकर्षित करते हुए अपनी रचनाओं के अन्तर्गत कई स्थलों पर जाति, कुल, धन तथा धर्म सम्बन्धी वैषम्य को लेकर विचार व्यक्त किये हैं। कबीर कहते हैं कि– "गर्भावस्था में तो कोई जाति या कुल का चिह्न नहीं रहा करता और सबकी उत्पत्ति एक ब्रह्म बिन्दु से ही हुआ करती है। फिर पण्डित ब्राह्मण कब से हो गया ! यदि वह ब्राह्मण वा ब्राह्मणी का उत्पन्न किया हुआ है तो उसकी उत्पत्ति के ढंग में भी कुछ विभिन्नता होना चाहिये थी। परन्तु वह भी सभी की भांति जन्म लेता है तो फिर वह किस प्रकार ब्राह्मण हो गया और दूसरे शुद्ध बन गये अथवा वे किस प्रकार साधारण रक्त रह गये और वह पवित्र दूध हो गया। सच बात तो यह है कि जो ब्रह्म का विचार कर सकता है, वही ब्राह्मण है।"[1] कबीर की दृष्टि में मनुष्य का कर्म मुख्य है, उसका वंश नहीं। ऊंचे वंश में उत्पन्न कुकर्मी व्यक्ति उसकी दृष्टि में उतना ही गर्हित है जितना शराब से भरा हुआ स्वर्ण कलश। अपने मानववादी दृष्टिकोण के कारण ही कबीर शास्त्र ज्ञान की तुलना में मानव के अपने अनुभव और प्रेमभावना को अधिक महत्व देते हैं। इसलिये उन्होंने पण्डित को फटकारते हुए कहा है—

तू कहता कागद की लेखी, मैं कहता आंखिन की देखी।

और इसी कारण उन्होंने पुस्तक ज्ञान का विरोध किया है जो प्रेम की पीड़ा उत्पन्न नहीं करता—

कबीरा पढ़िया दूरी करि, आधि पढ़्या संसार।
पीड़ न उपजी प्रीति सूं, तो क्यों करि करे पुकार।[2]

कबीर के समान रैदास, दादू, नानक आदि सन्त कवियों ने भी मानववादी विचार प्रकट किये हैं। रैदास ने जाति या वंश के आधार पर मनुष्य और मनुष्य के बीच के भेदभाव को अस्वीकार किया है। दादूदयाल ने मानव जीवन को बहुत महत्व दिया है। उन्होंने मानव–देह को अमूल्य बताते हुए नरनारायण के समकक्ष रखा है–

बार बार यहु तन नहीं, नरनाराइंण देह।
दादू बहुरि न पाईये, जनम अमोलिक एह ॥[3]

---

१ पं० परशुराम चतुर्वेदी, उत्तरी भारत की सन्त परम्परा, पृष्ठ २१२

२ डॉ० माताप्रसाद गुप्त, सम्पादक, कबीर ग्रन्थावली, पृष्ठ ६५

३ पं० परशुराम चतुर्वेदी, सम्पादक, दादूदयाल ग्रन्थावली, पृष्ठ १०९

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस दोहे से यह व्यंजित है कि मनुष्य को उसका शरीर श्रेष्ठ कर्म के लिये प्राप्त हुआ है, इसलिये उसका अधिक से अधिक सदुपयोग करना चाहिये।

गुरू नानक भी महान मानववादी विचारक थे। नानक का मुख्य उद्देश्य मानव में एकता स्थापित करना था। उनका उपदेश था कि-मनुष्य मात्र की भलाई करो, मनुष्य मात्र से प्रेम करो तथा प्रत्येक प्राणी से भ्रातृभाव और स्नेह करो। इधर सगुण भक्त कवियों में सूर और तुलसी दोनों को ही मानववादी कहा जा सकता है। सूरदास ने अपने काव्य में कृष्ण के राजत्व के स्थान पर उसके गोपत्व की प्रतिष्ठा की है। सूरदास के कृष्ण गोपों के बीच में एक समान्य मनुष्य के रूप में विचरण करते हुए दिखाई देते हैं, यद्यपि वे अपेक्षाकृत अधिक सम्पन्न गोप नन्द के संरक्षण में पलते हैं तथापि मानो सूरदास उनकी श्रेष्ठता के पक्ष में नहीं हैं। वे उन्हें साधारण गोपों के बीच एक साधारण गोप के रूप में ही देखना चाहते हैं। इसीलिए खेल-खेल में अन्य गोपों के मुख से वे कृष्ण की इस श्रेष्ठता का प्रतिवाद करवाते हैं—

खेलत में को काको गोसैंयां।[1]

कृष्ण के मथुरा चले जाने पर सूरदास ने गोपियों के मुख से उनके राज-वैभव के प्रति वितृष्णा प्रकट करवाई है। गोपियां उनके बड़प्पन पर व्यंग्य करती हुई कहती हैं-

कौन काज बृंदावन के सुख, दही भात की छाक
अब वे स्याम कूवरी दोऊ, बने एक ही ताक।।
वे प्रभु बड़े सखा तुम उनके, जिनकें सुगम अनीति।
या जमुना जल की सुभाव यह, सूर विरह की प्रीति।।[2]

तुलसीदास ने भी अपनी प्रबल आध्यात्मिक चेतना के बावजूद मानव जीवन को मूल्यवान ठहराया है। उनका कहना है--

बडे भाग मानुषतनु पावा। सूरदुर्लभ सब ग्रंथहिं गावा।।[3]

इस सम्बन्ध में डॉ० जगदीश शर्मा का कथन ध्यान देने योग्य है-मानस को भक्ति-ग्रंथ मात्र मानने वाले समीक्षकों ने उसे आध्यात्मिक दृष्टि से तो देखा है किन्तु

१ पं० रामचन्द्र शुक्ल, सम्पादक. भ्रमरगीत-सार, पृष्ठ ५५

२ वही, पृष्ठ १२

३ पं० विश्वनाथ प्रसाद मिश्र; सम्पादक, रामचरित मानस, पृ० ४१५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानवीय मूल्यों की दृष्टि से उसकी परीक्षा नहीं की है, क्योंकि उन्होंने उसके पारलौकिक तत्व के भीतर लौकिक दृष्टि की शोध अनावश्यक समझी है। परन्तु बात ऐसी नहीं है। जहां तक मानस कथा के फलागम का प्रश्न है, राम राज्य मानवीय सुख की कल्पना है।[1] तुलसीदास की दृष्टि में सबसे बड़ा धर्म परोपकार है और सबसे बुरी बात परपीड़न है।

परहित सरिस धर्म नहिं भाई। पर पीड़ा सम नहिं अधमाई॥[2]

उन्होंने सन्त-असंतों का जो वर्णन किया है उसमें सन्तों को मानवीय गुणों से युक्त और असन्तों को मानवीय गुणों से रहित बतलाया है। इससे स्पष्ट है कि तुलसीदास की दृष्टि में मानवीय मूल्य बराबर रहे हैं। तुलसीदास की भक्तिभावना मनुष्यों के बीच भेदभाव को निषेध करती है। इस बात को लक्ष्यकर डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी ने लिखा है कि-"इस समस्या का उन्होंने यही समन्वय किया कि अगर छोटी जाति का आदमी भक्त हो तो वह मुहूर्त-भर में ऊंची जाति के भक्तों से ऊपर उठ जाता है, भरत सम भाई, हो जाता है।"

मुक्तिबोध भी यह मानते हैं कि सामन्ती दृष्टिकोण के बावजूद तुलसीदास के काव्य में मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठा हुई है। उनका कहना है-"तत्कालीन मानव-सम्बन्ध, विश्व-दृष्टि तथा जीवन-मूल्यों के सर्वोच्च प्रतीक की मानवता, वह सचेष्ठ आन्तरिकता: जो तत्कालीन आदर्शों के बनी हुई थी: हम पर छा जाती है, किन्तु उनके भीतर जो तत्कालीन मानव सम्बन्ध है उनका कहीं भी भंग न करते हुए राम ने निषाद और गुह से भी आलिंगन किया, शबरी के बेर खाये, केवट से दोस्ती की, वनवासी असभ्यों को गले लगाया, तत्कालीन मानव सम्बन्धों का वास्तविक निर्वाह उन्होंने अपने इन्हीं आदर्श क्षणों में किया। उनसे भी वे मानव-सम्बन्ध अधिक घनीभूत ही हुए हैं। निषाद निषाद ही रहा किन्तु राम का रामत्व सामन्ती मानवादर्श में जगमगा उठा। तत्कालीन मानव सम्बन्धों के घेरे के भीतर मानवता की जितनी भी सर्वोच्चता सम्भव थी, उतनी तुलसीदास के राम में समा गई। इसीलिए तत्कालीन समाज के आदर्श चरित्र राम हैं। राम की इस आदर्शमयी आन्तरिकता के चित्र-उनकी भीतरी मानवता के ये हमें आज भी द्रवीभूत करते हैं।[3]

---

१ डॉ० जगदीशप्रसाद शर्मा, रामचरितमानस का मनोवैज्ञानिक अध्ययन, पृ० १४१

२ पं० विश्वनाथप्रसाद मिश्र, सं० रामचरित मानस, पृ० ४१४

३ गजानन माधव मुक्तिबोध, नये साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र, पृ० १२४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सच यह है कि हिन्दी का मध्ययुगीन काव्य भक्ति, नीति, काव्य-रीति, शृंगार और अभिव्यंजना की दृष्टि से जितना समृद्ध है उतना ही वह अपने युग के सामाजिक राजनीतिक, धार्मिक, पारिवारिक और आर्थिक सम्बन्धों को भी व्यक्त करने वाला है।[१] इस प्रकार से वह पूर्ण मानववादी है।

अन्ततः हम यह निस्संकोच कह सकते हैं कि यूरोप के समान भारत में भी मध्ययुगीन भक्ति-साहित्य में मानववादी विचारधारा का व्यापक प्रचार-प्रसार हुआ है।

–व्याख्याता, हिन्दी,
राजकीय कालेज
बाड़मेर : राजस्थान

१ डॉ० गायत्री वैश्य, मध्ययुगीन हिन्दी काव्य में समाज, भूमिका से।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूर्व-मध्ययुगीन गुर्जरदेश के ब्राह्मण-नामों का विवेचन: एक आभिलेखिक अध्ययन

डॉ० गौरीशंकर तिवारी

भारतवर्ष के सांस्कृतिक इतिहास में व्यक्तिगत नामों की एक महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है और अब भी है। सामान्यतः नामों से वंश, धर्म, जाति एवं व्यक्ति के सांस्कृतिक लक्षण की सूचना उपलब्ध होती है।[१]

नामों के दो बड़े समूह 'मनुष्य नाम' एवं 'स्थान नाम' का महत्त्व मानव जीवन में सदा रहता है। सही रूप से यदि विचार किया जाय तो दोनों नाम मनुष्य की भाषा के अंग हैं तथा इनसे मनुष्य के भूतकाल के इतिहास और संस्कृति पर प्रकाश पड़ता है। पश्चिम के देशों में स्थानीय नामों का ब्यौरेवार अध्ययन किया गया है जिनसे जातियों की भाषा, फैलाव और रहन-सहन सम्बन्धी पर्याप्त जानकारी मिलती है। प्रस्तुत लेख में आभिलेखिक साक्ष्यों की सहायता से पूर्व-मध्ययुगीन गुर्जर देश के ब्राह्मण-नामों का विवेचन किया गया है।

त्रैकूटक, संगमसिंह एवं कलचुरिकालीन ब्राह्मणों के नाम

पांचवीं एवं छठी शताब्दीकालीन त्रैकूटक, संगमसिंह एवं कलचुरि दानपत्रों पर आधारित गुर्जरदेशीय ब्राह्मण-नामों से सम्बन्धित अधोलिखित सूची ध्यातव्य है:—

नाम का प्रथम भाग

नण्ण, नाग, अनन्त, प्रजापति, शिव, भाणु, भव, बोध, वाप।

---

१ संकालिया. हंसमुख धीरजलाल—"कलचरल सिग्निफिकेन्स ऑफ दि पर्सनल एण्ड दि प्लेस नेम्स फ्राम वाकाटक इन्सक्रिप्शन्स"
—डेक्कन कालेज रिसर्च बुलेटिन, भाग १८ (१९५७), पृ. १७३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उक्त सूची से अवगत होता है कि गुर्जरदेश के ब्राह्मण परिवार में देवी-देवताओं के नाम को आधार बनाकर नामकरण किया जाता था। विष्णु से सम्बन्धित नाम की श्रेणी के अन्तर्गत उक्त नण्ण [नन्न नारायण का मन्दिर बंगाल में धर्मपाल के समय था जिसका पुजारी लाट (गुजरात) द्विज था], प्रजापति एवं अनन्त ब्राह्मण नाम आते हैं। इसके अतिरिक्त शिवपरक नाग शिव, नाग एवं भव है। ऐसा विदित होता है कि तत्कालीन ब्राह्मणों में विष्णु एवं शिव का महत्त्व था।

नक्षत्रयी या नाक्षत्रिक नाम केवल भाणु (भानु या सूर्य) मिला है।

सम्बन्धसूचक बप्प नाम मिला है। बप्प से तात्पर्य बाप या पिता होता है। गुर्जर देश में सम्भवतः पिता को बाप कहा जाता था। आज भी उत्तर भारत के अधिकांश गांवों में बाप शब्द पिता के लिये प्रयुक्त होता है।

गुर्जरदेशीय नामों की सूची के अधिकांश नाम शुद्ध संस्कृत भाषा में उल्लिखित है जबकि अल्प नाम प्राकृत भाषा में हैं।

शुद्ध संस्कृत भाषा से सम्बन्धित अद्योलिखित नाम विचार्य है–

नाग, अनन्त, प्रजापति, शिव, भव, बोध

इसके अतिरिक्त प्राकृत नाम भी ध्यातव्य हैं :—

नण्ण, भाणु, बप्प

उक्त 'ण' से समाप्त होने वाले देशी या प्राकृत नामों का प्रचलन गुर्जरदेशीय ब्राह्मण परिवारों में था।

उपरोक्त तथ्यों की सहायता से कहा जा सकता है कि गुर्जरदेश के ब्राह्मणों में शुद्ध संस्कृत भाषा प्रचलित थी एवं प्राकृत भी कतिपय परिवारों में प्रभाव रखती थी।

नामों की सूची

क्र.सं.	ब्राह्मण नाम	गोत्र	राजा का नाम	समय	अभिलेख प्राप्ति स्थान	संदर्भ	वि. वि.
1	नण्ण स्वामी	धरोना	धरसेन	क० व० 207 = 457 ई०	पर्दी	कार्पस[1] 4, पृ० 24	
2	नामशर्मा	भारद्वाज	व्याघ्रसेन (त्रैकूटक)	क० द० 247 = 490 ई०	सूरत	,, पृ० 27	

---

१ मिराशी–कार्पस इन्सक्रिप्सनम इण्डिकेरम, भाग 4, पृ० 24

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

3	अनन्तदत्त	छन्दोगि	संगमसिंह	क० व० 292 = 541 ई०	सुनाओकला	कार्पस 4, पृ० 35
4	प्रजापति	गालव	”	”	”	” ”
5	शिवदेव	लौकाक्षि	”	”	”	” ”
6	भाणुदेव	लोहायन	”	”	”	” ”
7	भवरूचि	पौर्ण	”	”	”	” ”
8	अनन्त स्वामी	कौत्स	शंकरंगण (कलचुरि)	छठी शती उत्तरार्द्ध अन्तिम भाग	संखेड़ा	” पृ० 46
9	बोधस्वामी	काश्यप	बुद्धराज कलचुरि	क० व० 360 = 610 ई०	वडनेर	” पृ० 50
10	बप्पस्वामी	पाराशर	”	क० व० 361 = 611 ई०	सर्सवनी	” पृ० 55

गुर्जरकालीन ब्राह्मणों के नाम

सातवीं-आठवीं शताब्दीकालीन गुजरात के अधिकांश ब्राह्मण परिवारों में भिन्न-भिन्न प्रकार के नाम रखे जाते थे जिनके सम्बन्ध में सूचनाएं तत्कालीन गुर्जरकालीन दानपत्रों पर आधारित निम्नलिखित सूची से मिलती हैं–

नाम का प्रथम भाग

भट्टि, गोप, विशाख, अग्नि, द्रोण, वत्र, तापि, दत्त, भागि, पितृ, कर्क, आवूक, वाट, शैल, घोष, महादेव, वाव, महिधर, धर, नन्दि, रामिल, धर्म, इन्द्र, आदित्य, ईश्वर, धर, दाम, भद्र, वायु, रुद्र, पूर्ण, सूर्य, दत्त, देव, नारायण, षष्ट, आचड आदि।

गुर्जरकालीन ब्राह्मण परिवारों में नाम चयन का आधार नक्षत्रयी या नाक्षत्रिक देवी-देवताओं के नाम को बनाया जाता था। उक्त सूची से विदित होता है कि इस प्रकार की श्रेणी के अन्तर्गत अधोलिखित नाम आते हैं–

नक्षत्रयी नाम

आदित्य	रुद्र (1)
अग्नि	विशाख
इन्द्र	वायु (1)
कर्क	सूर्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आदित्य, अग्नि, इन्द्र, रुद्र, एवं वायु नक्षत्र देवताओं के नाम हैं।

गुर्जरदेश के अधिकांश ब्राह्मणों के नाम देवी–देवताओं के नाम से प्रारम्भ किये जाते थे जिनका नीचे उल्लेख किया जाता है–

देवी-देवतापरक नाम

धर्म	नन्दि
दत्त	राम
देव	नारायण
दामोदर	रुद्र
गोविन्द	ईश्वर
महादेव	

उक्त नामों से अवगत होता है कि यम, विष्णु (कृष्ण), शिव एवं राम जैसे विशिष्ट देवताओं का प्रभाव गुर्जर ब्राह्मणों में था। यम से सम्बन्धित ब्राह्मण नाम धर्म है। दत्त, दामोदर, गोविन्द, राम, ईश्वर एवं नारायण नाम विष्णुपरक प्रतीत होते हैं। देव, महादेव, नन्दि एवं रुद्र को शिवनाम कहा जाता है। ऐसा ज्ञात होता है कि गुर्जर ब्राह्मण पौराणिक देवताओं के उपासक थे।

गुर्जरदेशीय ब्राह्मणों के कतिपय परिवारों में गोत्र एवं पूर्वज के नाम को भी नामकरण में आधार बनाया जाता था। यथा–

द्रोण

पितृ

जातिपरक या जातीय नामों का प्रचलन भी गुर्जरकालीन ब्राह्मणों में था। इस प्रकार के अधोलिखित नाम ध्यातव्य हैं–

दान धन आदि से सम्बन्धित नाम हैं जो वैश्य जाति का प्रतिनिधित्व करता है। इससे यह संकेत मिलता है कि गुर्जर ब्राह्मणों का नाम–चयन में विस्तृत दृष्टिकोण रहता था।

नदीपरक नाम भी गुर्जरकालीन ब्राह्मणों में प्रयुक्त होता था। एक ब्राह्मण का नाम तापि था जो सम्भवतः ताप्ती नदी के नाम पर रखा गया।

वाद्य से सम्बन्धित ब्राह्मण नाम भी प्रचलित थे। यथा–

घोष, दुन्दुमी

कतिपय ब्राह्मणों के नाम पहाड़ आदि से शुरु किये जाते थे यथा शैल।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्राह्मण परिवारों में भट्टिनाम प्रयुक्त होता था। भट्टि भट्ट से बना है जो बहुधा विद्वान् ब्राह्मणों के नामों के साथ प्रयुक्त होने वाली उपाधि मानी जाती है।

कुछ ब्राह्मणों के कुछ नाम ऐसे हैं जिनका अर्थ स्पष्ट नहीं होता, यथा—-
आबूक, वाट, चष्ट, आचड

इस प्रकार के नाम शकों एवं क्षत्रपों के नामों की श्रेणी के अन्तर्गत आते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि विदेशी भाषाओं का प्रभाव गुर्जरकालीन ब्राह्मणों पर था।

उपरोक्त नामों के अनुशीलन से अवगत होता है कि गुर्जर राजाओं के समय में गुजरात के ब्राह्मणों में शुद्ध संस्कृत भाषा बोली जाती थी या इस भाषा का विशेष प्रभाव था। अधिकांश ब्राह्मणों के नाम शुद्ध संस्कृत भाषा के हैं। भाषा के अतिरिक्त यह स्पष्ट विदित होता है कि ब्राह्मणों पर शैव एवं वैष्णव धर्म का प्रभाव अधिक था क्योंकि इनसे सम्बन्धित देवी-देवताओं के नामों से ब्राह्मण नामों का चयन किया जाता था।

गुर्जरकालीन ब्राह्मण नामों की सूची

ब्राह्मण नाम	गोत्र	राजा का नाम	समय	अभिलेखप्राप्ति स्थान	सन्दर्भ वि० वि०
भट्टि	वत्स	दद्द द्वितीय	क.व. ३८० ६२९ ई०	कैरा	कार्पस, ४, २,पृ. ६२
गोपादित्य	,,	,,	,,	,,	,,
भट्टिगण	,,	,,	,,	,,	,,
विशाख	,,	,,	,,	,,	,,
अग्निशर्मा	,,	,,	,,	,,	,,
द्रोण	,,	,,	,,	,,	,,
भट्टिदामन वत्र	काश्यप	,,	,,	,,	,,
द्वितीय शर्मा	डौण्डकीय	,,	,,	,,	,,
तापिशर्मा	,,	,,	,,	,,	,,
दत्रस्वामी	,,	,,	,,	,,	,,
भागिस्वामी	,,	,,	,,	,,	,,
पितृशर्मा	,,	,,	,,	,,	,,
भट्टि	,,	,,	,,	,,	,,
द्रोड़	,,	,,	,,	,,	,,
कर्क	धूमरायण	,,	,,	,,	,,
आवूक	,,	,,	,,	,,	,,
वाट शर्मा	कौण्डिन्य	,,	,,	,,	,,
शैल	,,	,,	,,	,,	,,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धर्मधर	हारित	दद्द द्वितीय	क.व.३८० ६२९ ई०	कैरा	कर्पास ४,२, पृ० ६२
घोष	कौण्डिन्य	"	"	"	"
महादेव	"	"	"	"	"
बाव	"	"	"	"	"
धर	माठर	"	"	"	"
विशाख	"	"	"	"	"
नन्दि	"	"	"	"	"
रामिल	"	"	"	"	"
इन्द्र शर्मा	भारद्वाज	"	"	"	"
आदित्यरवि	"	"	"	"	"
तापिशूर	"	"	"	"	"
इन्द्रशूर	"	"	"	"	"
ईश्वर	"	"	"	"	"
धर	"	"	"	"	"
दामधर	"	"	"	"	"
ईश्वर	"	"	"	"	"
भद्र	चौलि	"	"	"	"
वायु शर्मा	"	"	"	"	"
द्रोणस्वामी	"	"	"	"	"
रुद्रादित्य	"	"	"	"	"
पूर्णस्वामी	"	"	"	"	"
सूर्य	भारद्वाज	"	क.व.३९२- ६४२ ई.	संखेड़ा	कार्पस ४,२, पृ०७७
दत्त	प्रागायण	जयभट्ट तृतीय	क.व. ४५६- ७०६ ई.	नवसारी	" पृ० ८६
देवस्वामी		गुर्जर			
नारायण	शाण्डिल्य	जयभट्ट तृतीय	क.व. ४६०- ७१० ई.	अजनेरी	" पृ० ९३
षष्ट स्वामी	"				
आचड	कौण्डिन्य	" चतुर्थ	क.व. ४८६- ७३६ ई.	प्रिन्स आफ वेल्स	" पृ० १०५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आदित्यनाथ	कौण्डिन्य	जयभट्ट चतुर्थ	क.व. ४८६-७३३ ई.	प्रिन्स आफ वेल्स	कार्पस ४, २	पृ. १०५
दुन्दुभी	भारद्वाज	दद्द तृतीय	क.व. ४२७-६७७ ई.	"	"	पृ० ६२१

राष्ट्रकूटकालीन ब्राह्मण नाम

नवीं शताब्दीकालीन राष्ट्रकूटों के दानपत्रों से सूचना मिलती है कि गुर्जरदेशीय ब्राह्मण परिवारों में अधोलिखित व्यक्तिगत नाम प्रयुक्त होते थे–

नाम का प्रथम भाग

सोम	सर्वदेव	नाहर	महेश्वर	द्रोण	शर्मा
वप्पुक	गोव	नैव	भौल्ला	अण्ह	नासेन
लिम्ब	आदित्य	योग	अग्नि	नाग	नाण
रेवा	नीव	ईश्वर	बप्प	शिव	देव
सिंह	नन्न	भातृ	नैना	लाल्ल	जज्जुक
दत्तं	समवौरा	नाग	दामोदर	राणप	प्रभाकर
सिद्ध्य	वेन्नप	त्रिविक्रम	नेम	भोमिक	भट्ट

उक्त सूची से विदित होता है कि राष्ट्रकूटकालीन ब्राह्मणों के नामों में देवी–देवताओं के नाम प्रचलित थे। विष्णु एवं शिव से सम्बन्धित नामों को नाम चयन का आधार बनाया जाता था। इनसे सम्बन्धित निम्नलिखित नाम ध्यातव्य हैं:–

देवी–देवतापरक नाम

सर्वदेव	महेश्वर	नाग	ईश्वर	शिव	देव
नन्न (नन्न-नारायण?)	दामोदर	त्रिविक्रम	वित्थल (विष्णु का नाम है जो महाराष्ट्र में प्रचलित है)[1]		
योग					

विष्णुपरक नाम की श्रेणी के अन्तर्गत नन्न, (नन्न नारायण?) वित्थल, दामोदर एवं त्रिविक्रम ब्राह्मण नाम हैं। इसके अतिरिक्त योग, सर्वदेव, महेश्वर, नाग, ईश्वर एवं देव शिव के नाम प्रतीत होते हैं। ऐसा अवगत होता है कि तत्कालीन ब्राह्मण परिवारों में शिव एवं विष्णु की उपासना की जाती थी। यह संभव है कि इन देवतानामों को धारण करनेवाले ब्राह्मण अपने नाम वाले देवता के उपासक न हों किन्तु यह कहा जा सकता है कि ब्राह्मण उक्त देवताओं से प्रभावित होकर नाम चयन किया करते थे।

---

१ संकालिया, पृ० ११७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रकूट ब्राह्मणों के नाक्षत्रिक नाम भी होते थे। सूची से अवगत होता है कि ब्राह्मणों में नाक्षत्रिक देवी–देवताओं के नामों से नाम प्रारम्भ किये जाते थे। यथा–

नक्षत्रयी नाम

आदित्य	रेवा (रवि ?)
अग्नि	रेव
भानु	सोम

यदा-कदा राष्ट्रकूटकालीन ब्राह्मणों के नाम सम्बन्ध सूचक हुआ करते थे। यथा–

मातृ
बप्प (बाप या पिता ?)
बप्पुक

क्षत्रियपरक नामों का प्रचलन भी तत्कालीन ब्राह्मण परिवारों में था। एक ब्राह्मण का नाम सिंह से शुरू हुआ है। इससे ज्ञात होता है कि ब्राह्मणों में नामकरण करते समय संकुचित दृष्टिकोण व्याप्त नहीं था।

राष्ट्रकूटों के समय में ब्राह्मणों के अधिकांश नाम ऐसे हैं जो शुद्ध संस्कृत भाषा में नहीं है एवं उनका निश्चित रूप से अर्थ स्पष्ट नहीं होता। सम्भवतः वे किसी बाहरी यथा कन्नड़ या अन्य भाषा के हैं या वे देशी नामों की श्रेणी के अन्तर्गत रखे जा सकते हैं। इस प्रकार के अधोलिखित नाम विचार्य हैं–

वप्पुक	लाल्ल
गोव	जज्जुक
नेव	समबौरा
अण्ह	सोभा (शोभा ?)
नासेन	सगुल (सगुन या सगुण ?)
लिम्ब	राणप
नाण	सिद्धप
भीला	वेन्नप
नीवा	भौमिक
नन्न या नण्ण	नैना

देशी नामों का वर्गों में विभाजन–यथा "क" से समाप्त होने वाले नाम—

वप्पुक
जज्जुक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भौमिक

''ण'' या 'न' से समाप्त होने वाले नाम

नाण

नण्ण

''न'' से समाप्त होने वाले नाम

नासेन

नन्न

नैना

''प'' से समाप्त होने वाले नाम

राणप

सिद्धप

वेनप

बप्प

''ब'' से समाप्त होने वाला नाम

लिम्ब

''भ'' से समाप्त होने वाला नाम

सोभा (शोभा ?)

''र'' से समाप्त होने वाले नाम

समकौरा

नाहर

''ल'' से समाप्त होने वाले नाम

वित्थल

सगुल (सगुण या सगुन ?)

भौला (भौला ?)

लाल्ल

''व'' से समाप्त होने वाले नाम

गोव

नेव

नीवा

''ह'' से समाप्त होने वाला नाम

अण्ह

उक्त नाम देशी या प्राकृत भाषा के नाम प्रतीत होते हैं। इन नामों के देखने से यह भी शंका उत्पन्न होती है कि उनमें विदेशी भाषाओं के तत्त्व भी हो सकते हैं। सम्भवत: शकों या क्षत्रपों की भाषा का भी प्रभाव पड़ा हो ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपरोक्त राष्ट्रकूटकालीन ब्राह्मणों के विभिन्न प्रकार के नामों से सम्बन्धित तथ्यों पर विचार करने से यह अवगत होता है कि उनमें दो प्रकार की भाषा प्रचलित थी, यथा-१–शुद्ध संस्कृत भाषा, २–देशी या प्राकृत (कन्नड़ भाषा ?)। प्राकृत नामों का नृवंश विद्या की दृष्टि से अध्ययन भी विशेष महत्त्वपूर्ण प्रतीत होता है।

राष्ट्रकूटकालीन नामों की सूची

ब्राह्मण नाम	गोत्र	राजा का नाम	समय	अभिलेख	सन्दर्भ वि०वि०
सोभ	लातायन	गोविन्दराज	शक सं.७३५	तोर्खेद	ए.इ.3, पृ. ५५-५६
सर्वदेव्र	,,	,,		,,	,,
नाहर	गौतम	,,		,,	,,
महेश्वर	,,	,,		,,	,,
द्रोण	वार्षगेय	,,		,,	,,
शर्मा	,,	,,		,,	,,
सोम	कात्यायन	,,		,,	,,
वप्पुक	,,	,,		,,	,,
सर्वदेव	मुद्गल	,,		,,	,,
गोव	वत्स	,,		,,	,,
नेव	,,	,,		,,	,,
भौल्ला	,,	,,		,,	,,
गोवशर्मा	,,	,,		,,	,,
अण्हादित्य	गौतम	,,		,,	,,
नासने	,,	,,		,,	,,
द्रोण	,,	,,		,,	,,
लिम्बादित्य	अग्नेयस	,,		,,	,,
आदित्य	पराशर	,,		,,	,,
योग	शाण्डिल्य	,,		,,	,,
अग्निशर्मा	मुद्गल	,,		,,	,,
नेवरेव	,,	,,		,,	,,
नाग	माठर	,,		,,	,,
नाणसर	,,	,,		,,	,,
खेसमा	योगन	,,		,,	,,
भौला	,,	,,		,,	,,
नीवादित्य	भारद्वाज	,,		,,	,,
ईश्वर	कौश	,,		,,	,,
बप्पस्वामी	वर्णगेय	,,		,,	,,
				,,	,,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गोवशर्मा	वर्णणेय	गोविन्दराज		तोर्खेद	ए.ई. ३ पृ. ५५-५६
शिवादित्य	लावायन	,,		,,	,,
देवभट्ट	,,	,,		,,	,,
सिंह	,,	,,		,,	,,
नन्न	कात्यायन	,,		,,	,,
मातृशूर	अग्नेयस	,,		,,	,,
महेश्वर	,,	,,		,,	,,
नैना	,,	,,		,,	,,
लाल्ल	भारद्वाज	,,	श.सं. ७३५ ८१३ ई०	,,	,,
जज्जुक	,,	,,		,,	,,
दत्त	सौदान	,,		,,	,,
अग्मिशर्मा	अग्नेयस	,,		,,	,,
नेवादित्य	कौश	,,		,,	,,
समवीरा	,,	,,		,,	,,
जज्जुक	वर्णणेय	,,		,,	,,
आदित्य	गौतम	,,		,,	,,
आदित्य चीह	मुद्गल	,,		,,	,,
सोभा	,,	,,		,,	,,
अग्निशर्मा	,,	,,		,,	,,
रेवा	अग्नेयस	,,		,,	,,
नागकुमार	कौण्डिन्य	सुवर्णवर्ष	श.सं.७४६- ८२५ ई०	ब्रह्मनपल्ली	ए. इ. २३, पृ. ८४
दामोदर	कौण्डिन्य	,,	,,	,,	,,
सगुल दीक्षित	हारित	बुद्धवर्ष		संजन	ए. इ. १४, पृ. १५०
रेवा	,,	,,		,,	,,
राणपभट्ट	लक्ष्मण	इन्द्रराज	श.क.सं. ८३६- ९१५ ई०	,,	,,
प्रभाकर भट्ट	,,	,,	,,	,,	,,
सिद्धपभट्ट	,,	,,	,,	,,	,,
वेन्नपभट्ट	,,	,,	,,	,,	,,
त्रिविक्रमभट्ट	,,	,,	,,	,,	,,
नेमादित्य	,,	,,	,,	,,	,,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भोमिक	अत्रि	गोविन्दराज	श सं. ७३८-८१० ई.	ए.इ. १६, पृ. २५४
भट्टजय	"	"	"	"

चालुक्यकालीन ब्राह्मणों के नाम

प्रारम्भिक एवं परवर्ती चालुक्यों के दानपत्रों (७ वीं शदी, १२ वीं सदी) से विदित होता है कि गुजरात के ब्राह्मण परिवारों में निम्नलिखित व्यक्तिगत नाम प्रचलित थे—

नाम का प्रथम भाग	
किक्कक	श्री
भागिक्क	वल्ल
गोभि	लुला
मातृ	उया
सामन्त	माधव
प्रीति	भाभा
त्रिविक्रम	बालण
नण्ण	विष्णु
कांचल	वेणी
गोविन्दलि	जानक
देल्हण	दामोदर

उक्त सूची से ज्ञात होता है कि चालुक्यों के समय ब्राह्मणों के नाम देवी-देवताओं के नाम से प्रारम्भ किये जाते थे, यथा–विष्णुपरक नाम-त्रिविक्रम, नण्ण (नन्न = नारायण?), गोविन्दलि (गोविन्द ?), श्री, माधव, विष्णु, दामोदर। ऐसा लगता है कि वे विष्णु से प्रभावित थे या इनमें विष्णु या वैष्णव धर्म का प्रभाव किसी न किसी रूप में था।

सामंतवादी नाम का प्रयोग कतिपय ब्राह्मण परिवारों में प्रचलित था, यथा-सामंत।

चालुक्यकालीन ब्राह्मणों के प्राकृत या देशी नामों का भी उल्लेख दानपत्रों में किया गया है। इन नामों का निश्चित रूप से अर्थ स्पष्ट नहीं होता, यथा–

किक्कक	वल्ल
भोगिक	लुला
गोभि	उया
नण्ण	भाभा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कांचल बालण
गोविन्दलि

उक्त सभी ब्राह्मण नाम प्राकृत भाषा के हैं। ऐसा अवगत होता है कि ब्राह्मणों में सम्भवतः बोलचाल की भाषा प्राकृत थी। प्राकृत नामों को अधोलिखित श्रेणी में रखा जा सकता है-

'क' से समाप्त होने वाले नाम
किक्कक
भोगिक्क
'ण' से समाप्त होने वाले नाम
नण्ण
बालण
'भ' से समाप्त होने वाला नाम
भाभा
'म' से समाप्त होने वाला नाम
गोमि
'ल' से समाप्त होने वाले नाम
कांचल
गोविन्दलि
वल्ल
लुल्ला
'य' से समाप्त होने वाला नाम
उया

उपरोक्त तथ्यों से ज्ञात होता है कि चालुक्यकालीन ब्राह्मण परिवारों में शुद्ध संस्कृत भाषा का प्रभाव कम था जबकि प्राकृत का प्रभाव विशेषरूप से था। ब्राह्मणों पर वैष्णव धर्म का प्रभाव था।

चालुक्यकालीन नामों की सूची

ब्राह्मण नाम	गोत्र	राजा का नाम	समय	अभिलेख प्राप्ति स्थान	सन्दर्भ वि. वि.
किक्कक स्वामी	काश्यप	शीलादित्य (चालुक्य)	क. व. ४८१ ६७१ ई.	नवसारी	कार्पस ४,१, पृ. १२५
भोगिक्कस्वामी	"	"	"	"	"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गोमिस्वामी	काश्यप	शीलादित्य	क. व. ४८१	नवसारी	कार्पस ४, १,
मातृस्थविट	,,	(चालुक्य)	६७१ ई.	"	पृ. १२५
सामन्तस्वामी	,,	"	"	"	"
प्रीतिशर्मा	भारद्वाज	जयसिंह (चालुक्य)	क. व. ४३६- ६८५ ई०	नासिक	" पृ. १३०
त्रिविक्रम	भारद्वाज	"	"	"	" "
नण्णस्वामी	शाण्डिल्य	शीलादित्य चालुक्य	क. व. ४४३- ६६३ ई०	सूरत	" पृ. १३४
मातृश्वर	"	,,	,,	"	"
कांचल	वत्स	पुलकेशिराज (चालुक्य)	क. व. ४६० ७३७ ई.	नवसारी	" पृ. १४१
गोविन्दलि	"	"	"	"	"

परवर्ती चालुक्यकालीन ब्राह्मणों के नाम

श्रीधर	शाण्डिल्य	भीम द्वितीय	वि.सं. १२७३-	श्रीधर की देवपाटन प्रशस्ति	ए.इ. २, पृ. ४४०-४४२
वल्ल	"	मूलराज		"	"
लुला	"	कुमारपाल		"	"
उयाभट्ट	"	"		"	"
माधव	"	"		"	"
भाभा	"	"		"	"
वालण	"	कुमारपाल	वि.सं.१२०८- ११५१ ई.	व मगर प्रशस्ति	ए.इ. १, पृ. ३०१
विष्णु	"	"		,,	
वेणि	"	"			"
जानक	"	भीमदेव	वि.सं.११२०- १०६३	पालनपुर	ए.इ. २१. पृ. १७८
देल्हण	अगस्त	जयसिंह	क.व.६१८- ११६२ ई०	जबलपुर	कार्पस ४, पृ. ३२९

सैन्धव राजवंशीय ब्राह्मणों के नाम

उत्तरी काठियावाड़ (गुर्जर देश) के ब्राह्मण नामों का उल्लेख सैन्धव दानपत्रों (६ वीं शताब्दी) में हुआ है। इन दानपत्रों पर आधारित निम्नांकित नामसूची विचार्य है:-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाम का प्रथम भाग

शिव	भट्ट
शंखधर	कुलचन्द्र
रुद्र	माधव
सागर	कल्याण
गुहेश्वर	

सैन्धव शासकों के समय ब्राह्मण परिवारों में नाम-चयन का आधार शिव एवं विष्णु का नाम होता था। उक्त सूची में उल्लिखित विष्णु से सम्बन्धित ब्राह्मण नाम शंखधर एवं माधव है। शिव नाम की श्रेणी में ब्राह्मण शिव, रुद्र एवं गुहेश्वर के नाम उल्लेखनीय हैं। इससे ज्ञात होता है कि ब्राह्मणों का अधिक विश्वास शिव एवं विष्णु में था।

कतिपय परिवारों में ब्राह्मण नाम भट्ट से प्रारम्भ किया जाता था। भट्ट से तात्पर्य विशिष्ट विद्वान् यथा-आधुनिक शब्द 'प्रोफेसर'। इससे उनके विद्वान् होने की प्रवृत्ति का संकेत मिलता है।

ब्राह्मण नाम का आधार नदी या सागर भी हुआ करता था। सागर नाम का भी उल्लेख मिलता है। ऐसा संकेत मिलता है कि ब्राह्मणों में सागर की तरह गम्भीरता की प्रवृत्ति व्याप्त थी ?

सैन्धवकालीन ब्राह्मणों में नाम चयन शुभ, मंगल एवं कल्याण की भावना या प्रवृत्ति से प्रेरित होकर किया जाता था, यथा—

कुलचन्द्र
कल्याण

उक्त सभी नामों के अनुशीलन से ज्ञात होता है कि ब्राह्मण की बोलचाल की भाषा शुद्ध संस्कृत थी। ब्राह्मण के नाम विशुद्ध संस्कृत भाषा के हैं। इससे उनकी शुद्ध संस्कृतजन्य संस्कृति परिलक्षित होती है।

देवी-देवतापरक नामों से उनके धार्मिक विश्वास का संकेत मिलता है। ऐसा प्रतीत होता है कि उनकी आस्था पौराणिक देवता-शिव एवं विष्णु में सर्वाधिक रूप से रहा करती थी।

नामों की सूची

ब्राह्मण नाम	गोत्र	राजा का नाम	समय	अभिलेख	सन्दर्भ	विवि.
शिवरुद्र	वशिष्ठ	राणक	गु. सं. ५५५-८७४ ई०	—	ए.इ. २६,	पृ. २१६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शंखधर	वशिष्ठ	राणक	गु.सं. ५५५ ८७४ ई०	–	ए.इ. २६, पृ० २१६
रुद्र	वत्स	अग्गुक तृतीय	गु.स. ५६७ ८८६ ई०	–	तत्रैव पृ० २२१
सागर	"	"	"		"
गुहेश्वर	"	"	गु.स. ५१५- ८३४-३५	–	" पृ० २०६
कुलचन्द्र					
माधव	सांकृत्य	अग्गुक द्वितीय	गु.स. ५१३- ८३२ ई०	–	" पृ० २०१

मैत्रककालीन ब्राह्मणों के नाम

वल्लभी के मैत्रक राजाओं के दानपत्रों से ब्राह्मणों के व्यक्तिगत नाम के सम्बन्ध में सूचना मिलती है।

नाम का प्रथम भाग

अणहक	अग्नि	आखंडल	ईश्वर
कुमार	गंग	गुहआत	धंचक
चट्ट	चमस	चुनुक	तट्ट
दामोदर	देव	दत्त	धम्मिल
धनपति	नारायण	नण्ण	पिट्टलेश्वर
प्रभन्दत	बप्प	बाव	बुध
भट्टि	महेश्वर	माधव	मदन
मित्र	मातृ	यज्ञ	रोव्ध
रोध	वत्र	विष्णु	विश्वदत्त
विशाख	शंकर	श्येन	श्रीधर
स्गगल	सांव	संग	स्कन्द
स्ष्ठि			

उक्त सूची से यह ज्ञात होता है कि वल्लभी के मैत्रक राजाओं के काल में ब्राह्मणों में अनेक प्रकार के नाम रखने की परम्परा थी।

कुछ नाम मिले हैं जिन्हें नक्षत्र नाम कहा जाता है। यथा–

आदित्य	भानु
अग्नि	मित्र
चन्द्र	विशाख

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नक्षत्र नाम रखने की परम्परा गुजरात में भी रही है जिसके समर्थन की पुष्टि गुर्जर एवं चालुक्य अभिलेखों से होती है।

नक्षत्र नामों के अतिरिक्त ब्राह्मणों के पौराणिक देवतापरक नाम मैत्रक अभिलेखों में मिलते हैं जो अधोलिखित हैं :-

ईश्वर	गुहत्रात	चन्द्र	दामोदर
दत्त	देव	नारायण	पिट्टलेश्वर
बाव	बुद्ध	मदन	माधव
महेश्वर	मातृ	मित्र	यज्ञ
रुद्र	विष्णु	विश्वदत्त	शंकर
श्रीधर	सांब	स्कन्द	सष्ठि

उपरिवर्णित देवतापरक नामों से ज्ञात होता है कि मैत्रककाल में शिव एवं विष्णु से सम्बन्धित देवतापरक नाम कम हैं जबकि राष्ट्रकूटों के अभिलेखों में अधिक संख्या में इस प्रकार के नाम मिलते हैं।

पौराणिक देवी-देवताओं के नामों के साथ-साथ ब्राह्मणों के कुछ नाम मैत्रक अभिलेखों में ऐसे भी प्राप्त हुए हैं जो क्षत्रिय या वैश्य नाम की तरह जान पड़ते हैं। जैसे—

वैश्य नाम	क्षत्रिय नाम
दास	सिंह
धनपति	

उक्त सूची से विदित होता है कि मैत्रककालीन ब्राह्मणों में नामकरण का क्षेत्र संकुचित नहीं था।

इसके अतिरिक्त मैत्रक अभिलेखों में कुछ अन्य प्रकार के नाम मिले हैं एवं कुछ नाम जो शुद्ध संस्कृत रूप में नहीं जान पड़ते हैं, वे नाम निम्न हैं :-

अन्य नाम	शुद्ध संस्कृतरहित नाम
किक्कक	किक्कक
गुहिल	गिल्लक
नकुल	गोग्गड
नण्ण	सग्गड
वत्रभट्टि	
सग्गड	

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन उपरिवर्णित नामों से यह ज्ञात होता है कि इन ब्राह्मणों का सम्पर्क संभवतः पश्चिमी गुजरात के शक एवं अन्य विदेशी तत्वों से रहा हो। यहां एक जगह 'बप्प' ब्राह्मण के नाम का उल्लेख किया गया है। इस बप्प के सम्बन्ध में डॉ० सुनीतिकुमार चटर्जी का मत है कि इसी से बाप 'पिता' बना है। यह शब्द भी गुजराती ज्ञात होता है।

मैत्रककालीन अभिलेखों के आधार पर उपरिवर्णित ब्राह्मणों के नामों के अवलोकन से एक तथ्य निकलता है कि इनके नामों के दो भाग हैं–

१–संस्कृत नाम

२–प्राकृत नाम

संस्कृत नाम

पौराणिक देवी–देवताओं एवं नक्षत्रों इत्यादि के आधार पर संस्कृत नाम मैत्रक युग के ब्राह्मणों के मिलते हैं, यथा–

अग्नि	ईश्वर	दामोदर	देव
दत्त	धनपति	नारायण	पिट्ठलेश्वर
बुध	महेश्वर	माधव	मदन
मित्र	मातृ	यज्ञ	विष्णु
विश्वदत्त	विशाख	शंकर	श्रीधर
स्कन्द			

इस तरह के नामों की परम्परा अत्यन्त प्राचीन युग से पाई जाती थी। प्राकृत नाम भी मैत्रक अभिलेखों में मिलते हैं जिनके कुछ उदाहरण नीचे दिये गये हैं–

प्राकृत नाम

अणहक	आखंडल	कुमार	गंग
गुहत्रात	धंचक	चट्ट	चमस
चुनुक	तट्ट	धम्मिल	नण्ण
प्रभन्दत	बप्प	भट्टि	रोटध
रोध	श्येन	सग्गल	सष्ठि

इत्यादि नाम ऐसे हैं जो वास्तव में प्राकृत जान पड़ते हैं।

"क" से समाप्त होने वाले नाम

अणहक

'ग' से समाप्त होने वाले नाम

गंग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'घ' से समाप्त होने वाले नाम

रोटघ

रोघ

'ट' से समाप्त होने वाले नाम

चट्ट

तट्ट

भट्टि

'ठ' से समाप्त होने वाले नाम

सष्ठि

'ण' से समाप्त होने वाले नाम

नण्ण

'त' से समाप्त होने वाले नाम

गुहत्रात

प्रभन्दत

'न' से समाप्त होने वाले नाम

श्येन

'प' से समाप्त होने वाले नाम

बप्प

'र' से समाप्त होने वाले नाम

कुमार

'ल' से समाप्त होने वाले नाम

आखंडल

सग्गल

'व' से समाप्त होने वाले नाम

बाव

मैत्रक अभिलेखों में उल्लिखित ब्राह्मणों के नामों को देखने से इस बात का भी परिज्ञान होता है कि मैत्रककालीन ब्राह्मणों में बिना उपपद के भी नाम रखने की परम्परा थी, जिनकी पुष्टि निम्नलिखित नामों से हो जाती है—

अणहक	धंचक	चट्ट	चमस
चनुक	तट्ट	प्रभन्दत	प्रकाश
बप्प	बाव	माधव	रुद्र
रोघ	विशाख	श्येन	शंकर
संगक			

इत्यादि ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस प्रकार के बिना उपपदधारि ब्राह्मणों के नामों के देखने से यह संकेत मिलता है कि ब्राह्मणों के नामकरण में उपपद रखना कोई विशेष आवश्यक नहीं माना जाता था।

इसके अतिरिक्त मैत्रक अभिलेख में केवल एक ही जगह एक ब्राह्मण के दो नाम प्रकाश एवं सग्गल दीक्षित मिला है। सम्भव है इस प्रकार की परम्परा किसी-किसी ब्राह्मण परिवार में रही है। इस प्रकार के दो नाम रखने की परम्परा वैदिक युग में थी। वैदिक काल में एक व्यक्ति के दो नाम होते थे। उनमें से एक नाम गुह्य होता था जो केवल माता-पिता ही जानते थे। वैदिक साहित्य में एक व्यक्ति के दो नामों का उल्लेख मिलता है। उसमें से एक नाम उसका अपना होता था और दूसरा या तो उसका गोत्र नाम होता था या कभी-कभी पैतृक या मातृक होता था किन्तु इस प्रकार का उदाहरण मैतृक युग में एक ही अभिलेख में मिलता है।

नाम-सूची

नाम	समय	राजा का नाम	अभिलेख प्राप्ति स्थान	संदर्भ	वि.वि.
आखंडलमित्र	७६६-६७ई०	शिलादित्य ३	मालेय	कापर्स ३, पृ.१६८	
विष्णु	,,	,,	,,	,, ,,	
रुद्रभूति	५७१-७२ई०	धरसेन २	,,	,, ३ पृ. १६६	
गंग	५२५ ई०	ध्रुवसेन प्रथम	—	एपिग्राफिका इण्डिया ३१, पृ. ३०१	
गंगदेव	,,	,,	—	,, ,,	,,
चुनुक	,,	,,	—	,, ,,	,,
रुद्र	व० सं.२५२	धरसेन २	—	,, ,,	पृ. ३०३
वप्प	—	ध्रुवसेन ३	—	,, ,,	१ पृ. ८८
भट्टि	—	,,	—	,, ,,	,,
विश्वदत्त	—	ध्रुवसेन १	—	,, ,,	१९पृ. ३०४
देव	व० सं. २१०	वल्लभी अभिलेख	—	,, ,,	,, १२६
शांति	,,	ध्रुवसेन	—	,, ,,	१७पृ. १०८
माधव	व० सं. २०७	ध्रुवसेन १	—	,, ,,	,, १४
रोटघमित्र	,, २०६	ध्रुवसेन	कोथिवाड	,, ,,	,, १०९
प्रभन्दत	व.सं.६१०-११	शिलादित्य १	भद्रेणियक	,, ,,	२१पृ.११८
रुद्र	,,	,,	,,	,, ,,	२१पृ.१७३
विष्णुयश	व.सं.३०४	धरसेन ३	भावनगर	,, ,,	,,
मित्रयश	,,	,,	,,	,, ,,	,,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्राह्मण नाम	समय	राजा का नाम	अभिलेख प्राप्ति स्थान	सन्दर्भ			वि. वि.	
सगल या प्रकाश	६६६-६७ई०	शिलादित्य ३	जेसर	एपि० इ०			,,	२१०
शाम्बदत्त	,,	,,	,,	,,	,,		२१ पृ.	,,
चंचक	,,	,,	,,	,,	,,		,,	,,
चट्ट	,,	,,	,,	,,	,,		,,	,,
तट्ट	,,	,,	,,	,,	,,		,,	,,
अग्निस्वामी	६३९-४०ई०	ध्रुवसेन २	नोगव	,,	,,		८ पृ.	१७३
कुमारस्वामी	,,	,,	,,	,,	,,		,,	,,
अगस्ति	,,	,,	,,	,,	,,		,,	,,
संगरवि	,,	,,	,,	,,	,,		,,	१९४

उक्त नामों के विवेचन से ज्ञात होता है कि पूर्व-मध्ययुगीन गुर्जरदेश (गुजरात) के ब्राह्मणों में नामकरण की जो प्रवृत्ति थी, उसका कई दृष्टि से महत्व है। वैदिक परम्परा से लेकर पौराणिक, स्मार्त-विषयक, धार्मिक, भाषा वैज्ञानिक, नृतत्व वैज्ञानिक, देशज, प्राकृत अथवा ग्रामीण, नक्षत्र मण्डलिक, कृषि सम्बन्धी तथा अन्य विविध प्रकार के सांस्कृतिक महत्व के नाम तत्कालीन अभिलेखों में देखने को मिलते हैं जिन पर एतद् सम्बन्धी प्रस्तुत शोध पत्र में विस्तृत विचार किया गया है। ऐसा प्रतीत होता है कि गुर्जरदेशीय ब्राह्मणों में नामकरण की यह प्रवृत्ति या तो पारंपरिक है या परम्परा टूट जाने के कारण विकृत नामावली का विकास होता गया।

अध्ययन–अध्यापन, यज्ञ करना और यज्ञ कराना तथा दान देना, दान लेना, ये ब्राह्मणों के परम्परा-प्रसूत षट्कर्म माने जाते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि पूर्व-मध्ययुगीन गुजरात में परम्परानुसार यदि एक तरफ संस्कृतजन्य संस्कृति से सम्बद्ध ब्राह्मण-नाम शुद्ध संस्कृत में होते थे तो दूसरी तरफ विघटन की स्थिति में अशिक्षित वातावरण के निकट होने के कारण प्राकृत या गंवार नाम भी प्रचलित थे।

प्रवक्ता, साकेत पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज,
फैजाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजस्थानी चारण साहित्य की ऐतिहासिक काव्य-कृतियां

● डॉ० जगमोहनसिंह परिहार

राजस्थान का विगत इतिहास मानव-जीवन की अनुपम गाथा है। यहां के इतिहास में वीरता की जो अद्भुत छवि दिखाई देती है, राजस्थानी साहित्य वस्तुतः उसी का प्रतिबिम्ब है। शूरवीरों के रक्त से सिंचित इस गौरवशाली वसुन्धरा पर त्याग, बलिदान, स्वाभिमान और शौर्य की जो अद्भुत-अमिट कहानियां अंकित है, उन्हें विस्मृत नहीं किया जा सकता।

चारण साहित्य का मूल्यांकन करते समय हमारे सामने अनिर्वचनीय विशेषताओं के बिम्ब-प्रतिबिम्ब सजीव, साकार तथा जीवन्त हो कर प्रकट होने लगते हैं। जिस भाषा ने कायर से कायर व्यक्ति को अद्वितीय शौर्य एवं पराक्रम की प्रतिमूर्ति बना दिया, वह भाषा कितनी अनुपम और विलक्षण होगी, इस सत्य का अनुमान नहीं लगाया जा सकता।

जीवन और जगत की वास्तविकताओं को मूर्त रूप प्रदान करने में डिंगल भाषा बेजोड़ मानी गई है। चारण कवियों ने सुनी-सुनाई कथा-कहानियों को काव्य के आकर्षक और बहुरंगी परिधानों में परिवेष्टित नहीं किया। उन्होंने जीवन और मृत्यु के खेल को अपनी आंखों के सम्मुख होते हुए देखा था। यही कारण है कि उनके काव्य में जीवन की वास्तविकताओं का सत्य-सजीव विवरण, अत्यन्त प्रभावशाली ढग से प्रस्तुत हुआ है।

साहित्य की अन्य विधाओं के साथ-साथ ऐतिहासिक काव्य कृतियों के सृजन की दृष्टि से भी, विक्रम संवत् १६५० से १८०० तक का काल, राजस्थानी साहित्य का स्वर्णकाल कहा जा सकता है। इस काल के कवियों ने उच्चकोटि की काव्यकृतियों का निर्माण कर राजस्थानी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाषा और साहित्य की गौरव-गरिमा में ही चार चांद नहीं लगाये अपितु सत्य घटनाओं को काव्यमय रूप से प्रस्तुत कर उन्होंने इतिहास को भी एक नई दिशा प्रदान की। प्रस्तुत निबन्ध में चारण कवियों द्वारा प्रणीत राजस्थानी साहित्य की प्रमुख ऐतिहासिक काव्य कृतियों का विवेचनात्मक विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है-

१ गजगुण रूपक बन्ध

'गजगुण रूपक बन्ध' के रचयिता कवि केशवदास गाडण मारवाड़ में स्थित गाडणों की वासनी के निवासी[1] और जोधपुर के महाराजा शूरसिंह के कृपापात्र कवि सदमल के पुत्र थे। महाराजा शूरसिंह ने, सदमल की काव्य प्रतिभा एवं कुशाग्रता से प्रभावित होकर उन्हें राज-दरबार में महत्त्वपूर्ण स्थान देने के साथ-साथ संवत् १६५३ में लवेरा के समीप छीड़िया नामक गांव देकर सम्मानित किया था।[2] अपने पिता के समान केशवदास भी प्रतिभा-सम्पन्न और परम्परागत कवि-संस्कारों से युक्त थे। कवि के जन्म और मृत्यु पर प्रकाश डालने वाली युक्तिसंगत जानकारी तो नहीं मिलती परन्तु समसामयिक तथा कवि द्वारा निर्मित रचनाओं के आधार पर उनका रचनाकाल वि० सं० १६५० से १६९० के मध्य ठहरता है। अपने काव्य-चातुर्य से केशवदास ने जोधपुर नरेश गजसिंह के हृदय को जीतकर उनके राज्य में विशेष पद प्राप्त किया। महाराजा गजसिंह ने लाखपसाव देकर कवि को सम्मानित किया था।[3]

गजगुण रूपक बन्ध[4] डिंगल भाषा का वीर रस प्रधान ऐतिहासिक काव्य ग्रन्थ है, जिसमें दूहा, कवित्त, गाहा, अडल, मथाणा इत्यादि लगभग एक हजार छन्दों में जोधपुर के महाराजा गजसिंह की दक्षिण विजय और उस युद्ध में प्रदर्शित शूरवीरता का विस्तृत वर्णन किया गया है। केशवदास ने अपने चरित्र नायक की जन्मजात वीरता, अद्वितीय सौन्दर्य और उतरोत्तर बढ़ती हुई अवस्था का अत्यन्त सजीव,सुन्दर तथा अलंकारिक वर्णन किया है।

---

१ राजस्थानी सबद कोस, भूमिका–सीताराम लालस, पृ० १४२-१४३

२ (अ) मुहता नेणसी ने अपनी संगृहीत गांवों की तवारीखों में छीड़िया गांव के विषय में लिखा है—

छीड़ियो राजा श्री सूरसिंघ जी रो दत्त गाडण।
संडू:दूदावत नूं हूमें माधोदास देटो सदूरो चारण॥

(ब) डॉ० मोतीलाल मेनारिया ने 'राजस्थानी भाषा और साहित्य' में पृ० १५८ पर इन्हें सोजत परगने के चिड़िया ग्राम का निवासी बतलाया है।

३ गाडण 'केसव' गुणे ब्रवे पंचम लख वाइक–सूरजप्रकास, पृ० ९

४ हस्तलिखित प्रतिलिपि–सेठ सूरजमल जालान पुस्तकालय, कलकत्ता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राव अमरसिंघजी रा दूहा–

महाकवि नरहरिदास बारहठ रचित 'राव अमरसिंघजी रा दूहा" अद्यावधि अप्रकाशित एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक काव्य रचना है। इसमें कुल ५०७ सोरठों में, कन्नोज के राजा जयचन्द से लेकर जोधपुर नरेश गजसिंह तक के संक्षिप्त किन्तु प्रामाणिक इतिहास का प्रभावोत्पादक शैली में वर्णन किया गया है। कवि नरहरिदास का जन्म वि.सं. १६४८ में एवं मृत्यु वि.सं. १७३३ में हुई थी। ये रोहड़िया शाखा के चारण लक्खाजी के पुत्र थे और महाराजा गजसिंह के आश्रित थे।

ऐतिहासिक घटनाओं पर आधारित "अमरसिंघजी रा दूहा' नामक काव्यकृति में महाराजा गजसिंह के ज्येष्ठ पुत्र अमरसिंह राठौड़ के अद्वितीय शौर्य–पराक्रम का कमनीय तथा आकर्षक काव्य-शैली में चित्रण किया गया है। अमरसिंह राठौड़ की वीरोचित मृत्यु वि.सं. १७०१ में आगरा में हुई थी।[1] प्रस्तुत कृति का निर्माण कवि नरहरिदास ने अमरसिंह राठौड़ के जीवन-काल में ही किया था। अपनी काव्य-कृति के अन्तिम दोहे में, उस शूरवीर के प्रति अपने हृदय में स्थित आशीर्वचनों की पुष्प-वर्षा करते हुए लिखा है–

रवि जेते राकेस, धर अंबर जां लग धरम।
नखै खँड नरेस, कुल दीपक तां लग अकल ॥[2]

इस ग्रन्थ की एकमात्र हस्तलिखित प्रति बीकानेर के अनूप संस्कृत पुस्तकालय में उपलब्ध है। इस प्रति के आधार पर इस कृति का सृजनकाल वि सं. १६९५ से १७०१ के मध्य ठहरता है। ऐतिहासिक एवं साहित्यिक दृष्टि से उल्लेखनीय कृति "राव अमरसिंघ जी रा दूहा" निःसन्देह महत्वपूर्ण और प्रकाशन के लिये सर्वथा उपयुक्त है।

वचनिका राठौड़ रतनसिंघ महेसदासोत री

संवत् १७१५ में जग्गा खिड़िया ने 'वचनिका राठौड़ रतनसिंघ महेसदासौत री' नामक ग्रन्थ का निर्माण किया। गद्य-पद्य में निर्मित इस काव्यकृति का प्रकाशन हो चुका है।[3] जग्गा, खिड़िया शाखा के चारण और रतना जी के पुत्र थे।[4] 'वचनिका

---

१ (अ) मारवाड़ का मूल इतिहास–पं० रामकरण आसोपा, पृ. १७३
(आ) मारवाड़ का इतिहास (द्वितीय भाग)–रेउ, पृ. ६५४
२ राव अमरसिंघ रा दूहा—हस्तलिखित प्रति, अनूप संस्कृत पुस्तकालय, बीकानेर दोहा सं० पृ. ५०७
३ वचनिका राठोड़ रतनसिंघ महेसदासोत री - सम्पादक डॉ० तेसीतोरी, बंगाल की एशियाटिक सोसाइटी द्वारा प्रकाशित।
४ चारण साहित्य का इतिहास—डॉ० मोहनलाल जिज्ञासु, पृ. २२५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राठौड़ राव रतनसिंह महेसदासौत री' में वीर और शृंगार रस का अद्भुत समन्वय परिलक्षित होता है। इसमें जोधपुर के महाराजा जसवंतसिंह का-औरंगजेब और मुराद की संयुक्त सेना से हुए उज्जैन-युद्ध का वर्णन है। यह युद्ध धरमत के युद्ध के नाम से प्रसिद्ध है। इस युद्ध में अद्वितीय पराक्रम से लड़ते हुए, रतलाम के राठौड़ राजा रतनसिंह वीर-गति को प्राप्त हुए थे। रतनसिंह के अद्भुत पराक्रम और शौर्य से प्रभावित होकर कवि ने ग्रन्थ का नाम 'वचनिका राठौड़ रतनसिंघ महेसदासोत री' रखा। युद्ध की तिथि का उल्लेख करते हुए कवि ने लिखा है—

पख वैशाखह तिथि नवमि पनरोत्तेर वरस्सि।
वारि सुकर लड़िया विहद हिन्दू तुरक वहस्सि ॥

अर्थात् वि० सं० १७१५ में वैशाख के कृष्ण पक्ष की नवम तिथि, शुक्रवार के दिन हिन्दू और मुसलमानों के बीच धरमत का युद्ध हुआ था। फारसी इतिहासकारों ने भी युद्ध का दिन शुक्रवार २२ रजब, १०६८ हिजरी ठहराया है। कविराजा श्यामलदास ने अपने प्रसिद्ध ऐतिहासिक ग्रन्थ 'वीर विनोद' में इस युद्ध की तिथि वैशाख कृष्णा ८ विक्रम संवत् १७१५ तद्नुसार २२ रजब सन् १०६८ मानी है।[1] स्व० डॉ० यदुनाथ सरकार ने धरमत युद्ध का दिन १५ अप्रेल सन् १६५८ माना है जो विक्रम संवत् १७१५ की वैशाख कृष्णा ८ गुरुवार ठहरता है।[2] सूक्ष्म ऐतिहासिक और विश्लेषणात्मक अध्ययन के आधार पर स्पष्ट हो जाता है कि उपरोक्त युद्ध हिजरी तारीख २२ रजब गुरुवार अर्थात १५ अप्रेल १६५८ ई. की संध्या को आरम्भ होकर दूसरे दिन शुक्रवार १६ अप्रेल १६५८ ई० को दिन-भर चला। अतः कहा जा सकता है कि खिड़िया जग्गा द्वारा दी गई तिथि और वार पूर्णतया सही है।[3]

जग्गा खिड़िया ने वचनिका का निर्माण रतनसिंह के पुत्र रामसिंह के दरबार में ही किया था। कवि की काव्य प्रतिभा से प्रभावित होकर रामसिंह ने उन्हें आलोगिया, एकलगढ़, डेरी और दलावड़ो नामक गांव देकर सम्मानित किया था। कालान्तर में दलावड़ो के स्थान पर सैंभलखेड़ा गांव दिया गया, जहां उनके वंशज आज भी रहते हैं।[4] जग्गा की मृत्यु रतलाम में ही हुई और वहीं राजवंशों की श्मशान भूमि शिवबाग में ससम्मान उनका दाह-संस्कार किया गया।

---

१ वीर विनोद, कविराजा श्यामलदास, पृ. ३५४

२ हिस्ट्री ऑफ औरंगजेब, भाग १-२, डॉ० यदुनाथ सरकार, अध्याय १५, पृ.३४८-३५०

३ वचनिका राठौड़ रतनसिंघ महेसदासौत री-सम्पादक श्री काशीराम शर्मा एवं डॉ० रघुवीरसिंह, पृ० ७८-८१

४ चारण साहित्य का इतिहास-डॉ० मोहनलाल जिज्ञासु, पृ० २२६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजरूपक

अठारहवीं शताब्दी में राजस्थानी की श्रेष्ठ रचनाएं प्रदान करने वाले कवियों में वीरभांण का नाम अग्रगण्य है। ये जोधपुर राज्य के घडोई ग्राम के निवासी, रतनू शाखा के चारण और हमीर रतनू के समसामयिक थे।[1] इन्होंने डिंगल के सुप्रसिद्ध ग्रन्थ 'राजरूपक' की रचना कर साहित्य की ही नहीं बल्कि इतिहास की भी अमूल्य सेवा की है।[2] ग्रन्थ में तिथि अनुसार अनेक ऐतिहासिक घटनाओं का विशद्-विस्तृत वर्णन होने से साहित्य के साथ-साथ इसका ऐतिहासिक मूल्य भी अद्वितीय हो गया है। 'राजरूपक' में कवि ने अपने आश्रयदाता जोधपुर के महाराजा अभयसिंह द्वारा अहमदाबाद युद्ध में प्रदर्शित अपूर्व पराक्रम का वर्णन किया है। इस ग्रन्थ में ४६ प्रकाश हैं।[3]

'राजरूपक' एक वृहद-काव्य कृति है जिसमें महाराजा जसवंतसिंह की मृत्यु से लेकर उनके पौत्र अभयसिंह की अहमदाबाद विजय अर्थात् वि० सं० १७३५ से १७८७ तक की ऐतिहासिक घटनाओं की तिथि-क्रमानुसार विस्तृत एवं प्रामाणिक विवरण किया गया है। ग्रन्थ की ऐतिहासिकता का प्रमुख कारण है–वीरभांण का युद्ध क्षेत्र में उपस्थित होना। कवि द्वारा प्रस्तुत युद्ध-वर्णन अत्यन्त सजीव, चित्रात्मक और डिंगल साहित्य की विशेषताओं से परिपूर्ण है।

सूरजप्रकाश

'सूरजप्रकास' ग्रन्थ के रचयिता करणीदान कविया उच्च कोटि के कवि, जोधपुर के महाराजा अभयसिंह के आश्रित तथा वीरभांण रतनू और बखता खिड़िया के समकालीन प्रमुख कवियों में से थे। इनका जन्म १६८५ई० के आसपास हुआ था। ये संस्कृत, प्राकृत, डिंगल, पिंगल, इतिहास तथा ज्योतिष आदि के प्रकाण्ड पंडित थे। कविया करणीदान ने वि०सं० १७८७ में 'सूरजप्रकास' नामक काव्यकृति का सृजन किया, जिसमें महाराजा अभयसिंह और गुजरात के सूबेदार सरबुलन्द खां के मध्य लड़े गये घमासान युद्ध का वर्णन निहित है। युद्ध के समय, युद्ध-क्षेत्र में कवि की उपस्थिति से वर्णित दृश्यों की सजीवता और ऐतिहासिकता में आशातीत अभिवृद्धि हुई है। कविया करणीदान ने 'सूरजप्रकास' नामक विस्तृत ग्रन्थ का सारांश 'विरद-सिणगार' नामक लघु काव्य-कृति में प्रस्तुत किया है।[4]

---

१ राजस्थानी भाषा और साहित्य–डॉ० मोतीलाल मेनारिया, पृ. १७८

२ राजस्थानी सबद कोस—प्रथम खण्ड, श्री सीताराम लालस, पृ. १५८

३ 'राजरूपक' ग्रन्थ का नागरी प्रचारिणी सभा, काशी द्वारा प्रकाशन हो चुका है। ग्रन्थ में ४६ खण्ड हैं जिन्हें प्रकाश के नाम से सम्बोधित किया गया है।

४ विरदसिणगार–कविया करणीदान, छन्द १३६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्रन्थ के आरम्भ में महाराजा अभयसिंह के पूर्वजों का संक्षिप्त विवरण है। साथ ही साथ रामायण की कथा भी लिखी गई है। रामायण कथा के पश्चात् मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री राम के पुत्र कुश से लेकर राजा पुंज की वंशावली तथा जयचन्द से अजीतसिंह तक के सभी राजाओं का संक्षिप्त एवं शौर्यमय विवरण प्रस्तुत किया गया है।

अहमदाबाद–विजय की तिथि 'सूरजप्रकाश' तथा 'विरदसिंणगार' में वि.सं.१७८७ आश्विन शुक्ला १० शनिवार दी गई है, जो प्रामाणिक एवं इतिहास-सम्मत है। पंडित विश्वेश्वर-नाथ रेउ[1] ने महाराजा अभयसिंह की इस ऐतिहासिक–विजय की तिथि वि.सं. १७८७ कार्तिक वदि ५ स्वीकार की है परन्तु इस युद्ध के समय करणीदान एवं 'राजरूपक' ग्रन्थ के रचयिता वीरभांण रतनू उपस्थित थे। अतः इन कवियों द्वारा वर्णित युद्ध, आंखों देखी घटनाओं पर आधारित होने के कारण प्रामाणिक माने जा सकते हैं। 'सूरजप्रकास' में स्पष्ट लिखा है कि वि.सं. १७८७ विजयादशमी शनिवार के दिन महाराजा अभयसिंह की विजय हुई तथा इस विजय के लगभग एक वर्ष पश्चात् कार्तिक वदि दस रविवार के दिन करणीदान ने 'सूरजप्रकास' ग्रन्थ को लिखकर उसे सम्पूर्ण किया था।[2]

राव रायसिंह की सतियों के कवित्त

कुम्भकरण सादू अपने समय के लोकप्रिय कवि तथा मारवाड़ में स्थित नागौर परगने के भदोरा नामक ग्राम के कवि ईश्वरदास सांदू के पुत्र थे। भदोरा ग्राम सांदू शाखा के प्रसिद्ध कवि माला का ग्राम था। कवि माला अकबर के समय विद्यमान थे।[3] कुम्भ-करण सांदू द्वारा निर्मित रचनाओं के अवलोकन से ज्ञात होता है कि वे मालवा तथा राज-स्थान के राठौड़ नरेशों के कवि थे। कुम्भकरण का सम्बन्ध रतलाम राजवंश के साथ-साथ बीकानेर के राजघराने से भी पर्याप्त रहा।[4] विद्वता, प्रकाण्ड ज्ञान तथा सुन्दर काव्य सर्जन के लिये कवि कुम्भकरण का अनेक बार सम्मान किया गया। कविराजा सूर्यमल मिश्रण ने चारण जाति में उत्पन्न छह प्रमुख कवियों में इनका भी नामोल्लेख किया है।[5]

---

१ मारवाड़ का इतिहास (प्रथम भाग) पं. विश्वेश्वरप्रसाद रेउ, पृ. ३३८-३३९

२ सूरजप्रकास–करणीदान कविया, भाग ३, पृ. २७३

३ अकबर पाघ अधार, पेच संवारै पातसा।
हे चारणे चकार, मिणधर सांदू मालदे।।

४ श्री सौभाग्यसिंह शेखावत के 'कुम्भकर्ण सांदू और राव रायसिंह की सतियों के कवित्त' विषयक निबन्ध से।

५ चारन नरहरिदास, कुम्भकरन पूरन सुकवि।
ईसरदास रु आस, बदरिदास हुकमेस पुनि।।
— वंश भास्कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'राव रायसिंह जी री सतियां रा कवित्त' में कवि कुम्भकरण ने नागोर के राव रायसिंह के संवत् १७३३ में देहावसान के समय उनके साथ सती होने वाली रानियों का वर्णन किया है। कवि ने ३३ छप्पय-छन्दों में रायसिंह की पांच रानियों तथा अन्य नारियों का उल्लेख किया है जो रायसिंह की मृत देह के साथ जीवित भस्मीभूत हो गई। मृत्यु तिथि, संवत् एवं नामों के उल्लेख से छन्दों की ऐतिहासिकता बढ़ गई है।

राव अमरसिंह का साका

कवि महेशदास राव अजमेर प्रान्त के राजगढ ठिकाने के स्वामी राजा विट्ठलदास और अर्जुन गौड़ के कृपापात्र थे। ये अपने समय के सम्मानित और जनप्रिय कवि थे। उन्होंने अपने आश्रयदाता के विरोधियों की शूरवीरता का भी सहर्ष वर्णन किया। इससे अनुमान लगाया जा सकता है कि कवि महेशदास वीरता एवं शौर्य के उपासक थे।

राव अमरसिंह का साका ३५ छन्दों की लघु काव्य-कृति है जिसमें कवि ने नागौर के सुभट शूरवीर योद्धा राव अमरसिंह राठौड़ के अद्भुत शौर्य-पराक्रम का ऐतिहासिक वर्णन किया है। इस कृति में अमरसिंह के पूर्वजों का संक्षिप्त विवरण तथा अमरसिंह राठौड़ द्वारा शाहजहां के दरबार में सलावत खां को मौत के घाट उतारने की ऐतिहासिक घटना का सुन्दर विवरण निहित है। 'राव अमरसिंह का साका' सरल, सरस एवं ऐतिहासिक काव्य कृति है। उदाहरण देखिए—

छप्पय

असो राव अमरेस पाटि राजा गजपति।
भड़ त्रंका बोळगै भुजां पूजै असपत्ती॥
नगर तखत नागौर, अखत मोटे बिरदाळो।
नव कोटां नरइंद, साख तेरहां सिघाळों॥
अवतार रूप मानव इसे, करण भत्त सोही करें।
पाताळ वनै अनै आकास पुड़, भारथ जिम ऊङठ भरै॥[1]

राजसिंघ गुण प्रकास

'राजसिंघ गुण प्रकास' ५८ छन्दों में निर्मित खण्डकाव्य कृति हैं जिसमें कवि महे[illegible]दास ने मेवाड़ के महाराणा राजसिंह की मालपुरा-विजय का ऐतिहासिक वर्णन किया है [illegible] राजविलास, राजप्रकास एवं जती जयचन्द्र आदि समसामयिक ऐतिहासिक काव्य ग्रन्थों महाराणा राजसिंह की मालपुरा चढ़ाई का विस्तृत वृतान्त मिलता है। इसी प्रकार

१ राव अमरसिंह का साका, छन्द संख्या ९

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वीर विनोद तथा डॉ० ओझा के मेवाड़ के इतिहास से भी इस युद्ध की प्रामाणिकता सिद्ध होती है। 'राजसिंघ गुण प्रकास' युद्ध की ऐतिहासिकता की दृष्टि से सुन्दर रचना है। इस युद्ध में भाग लेने वाले प्रमुख योद्धाओं के नामोल्लेख से काव्य का महत्व और अधिक बढ़ गया है। मेवाड़ के प्रकाशित इतिहासों में मालपुरा की चढाई वैशाख सुदि १० विक्रमांक १७१५ संवत् मानी गई है। मालपुरा युद्ध में स्वर्ण आदि लूटने तथा दुर्ग की प्राचीरों को ध्वस्त करने की घटना का उल्लेख करते हुए कवि ने लिखा है–

रांणे भंजे मालपुर घुवणाण घिखाया ।।
पट्टण हट्ट पहट्ट तोड़ि गढ खोदि गुमाया ।।
घोंपटि करि सारी धरा द्रहवट्ट लुटाया ।।
सोना हुंदा सांपरति इल मौर उडाया ।।[1]

महाराणा राजसिंह की सेना के दक्ष सेनापति रावत रघुनाथसिंह चूंडावत के रण-चातुर्य का चित्रण करते हुए कवि महेसदास ने लिखा हैं—

रिण रावत रघुनाथ राण कोकियौ रढाळो ।
धर दिल्ली धोंपटां चित धरि एमि सचाळो ।।
यम रघुपति ऊचरै करे प्रारम्भ करारे ।
मालपुरे अजमेरि मुरड़ि संभर धर मारे ।।
नर मरे नाम रहसी अमर, यम चौंडाहर ऊचरै ।
पुनि जनम सुक्रत रजपूत रे, कथ समत्थ भारथ करै ।।[2]

सगतसिंघ रासौ

'सगतसिंघ रासौ' ५०० छन्दों का ग्रंथ है जिसमें मेवाड़ निवासी तथा आसिया शाखा के चारण गिरधर कवि ने दोहा, भुजंगी, कवित्त आदि छन्दों में वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप के छोटे भाई शक्तिसिंह के जीवन-चरित्र का काव्यमय विवरण प्रस्तुत किया है।[3] काव्य की भाषा साहित्यिक डिंगल है। 'सगतसिंघ रासौ' की भाषा-शैली का उदाहरण देखिए-

---

१ श्री सौभाग्यसिंह शेखावत के निजी संग्रह से

२ मरुभारती पत्रिका में प्रकाशित श्री सौभाग्यसिंह शेखावत के 'महाराणा राजसिंह : मालपुरा की चढ़ाई का एक वृत्त' विषयक लेख से।

३ राजस्थानी साहित्य-विक्रम संवत् १६५०-१८०० अप्रकाशित शोध-प्रबन्ध-डॉ० जगमोहनसिंह परिहार, पृष्ठ ७९।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऊदळ' रांणै एक दिन, सभ पूछियौ स कोई,
अणी सिरै कर आहणै, हूं सारै हूं सोइ ॥
मैंगळ मैंगळ सारिखौ, सीह सारिखौ सीह ।
सगतौ 'उदियासिंघ' तण, अंग पित जिसौ अबीह ॥
चख रत्तै मुख रत्तड़ौ, वैस जिहिं कुळ वग्ग ।
सगतै जमदड़ढां सिरे, आफाळियौ करग्ग ॥[1]

रतनरासौ

कवि कुंभकरण का जन्म नाम दलपत था। इनका जन्म नागौर के समीप भदोरा गांव में हुआ था। इनके जन्मकाल के सम्बन्ध में निश्चित् संवत् इत्यादि ज्ञात नहीं है, फिर भी 'रतनरासौ' के अध्ययन से ज्ञात होता है कि ये रतलाम नरेश रतनसिंह के पुत्र रामसिंह तथा रामसिंह के पुत्र शिवसिंह के समय विद्यमान थे।[2] 'रतनरासौ' एक ऐतिहासिक काव्यकृति है जिसमें रतलाम के शूरवीर-नरेश रतनसिंह तथा औरंगजेब के मध्य हुए भयंकर युद्ध का वर्णन किया गया है।

'रतनरासौ' के अनुसार कवि का रचनाकाल संवत् १७३२ के लगभग ठहरता है।[3] शिवसिंह ने संवत् १७४० से संवत् १७५२ तक राज्य किया था। अनुमानतः 'रतनरासौ' की रचना रामसिंह के शासन-काल के अन्तिम वर्षों में हुई होगी। कवि के मतानुसार इस ग्रंथ को सम्पूर्ण करने में बारह वर्ष का समय लगा। अतः इसका रचनाकाल संवत् १७३२ माना जा सकता है।[4]

कवि ने प्रौढ़, सरस तथा संयत भाषा में विविध छन्दादि का प्रयोग कर काव्य को आकर्षक स्वरूप प्रदान किया है। 'रतनरासौ' काव्यकृति की कुछ पंक्तियां देखिए—

लाज खितेति कुंकुम चढ़ाय
सिव भक्त रतन रासौ पढ़ाय
रासौ अगाध सिव कर रतन, कुंभकरण कवि इन्द्र

---

१ राजस्थानी सबद कोस (प्रथम खण्ड)–श्री सीताराम लाळस, भूमिका, पृष्ठ १५३।
२ राजस्थानी सबद कोस (प्रथम खण्ड)–भूमिका, श्री सीताराम लाळस।
३ राजस्थान भारती, भाग ३, अंक ३–४–'रतनरासौ' के रचयिता का वंश परिचय-श्री काशीराम शर्मा।
४ राजस्थानी भाषा और साहित्य–डॉ० मोतीलाल मेनारिया, पृ० २७९।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कित स्रंगार सम इच्छाक छत्र, द्रढ सिध आनन्द
चित चमत्कार सस्फुट वचन, अस्र सस्र चतुर्थ प्रति
'सिवरतनसिंघ' रासौ सरस, अस विधान सुन परि नृपति ।[1]

महाराजा अजीतसिंह री दवावैत

भक्ति रस के प्रसिद्ध कवि माधौदास दधवाड़िया के पुत्र द्वारकादास दधवाड़िया ने संवत् १७७२ में 'महाराजा अजीतसिंह री दवावैत' नामक काव्यकृति का सृजन किया। इस कृति में डिंगल के प्रतिष्ठित कवि द्वारकादास ने जोधपुर के महाराजा अजीतसिंह के शौर्य, पराक्रम एवं वैभव का आकर्षक वर्णन किया है । महाराजा अजीतसिंह ने इस रचना पर प्रसन्न होकर कवि को जयतारण परगने में स्थित बासनी नामक ग्राम प्रदान किया था ।[2] काव्य की भाषा सरल, सरस, आकर्षक तथा प्रसाद गुण सम्पन्न है। उदाहरण देखिए–

इनके खेहां के डंबर, उनके बद्दल के आडम्बर।
इनके नोबत के टंकारे, उनके गाज घनघोरे।
इनके भालों का भाव, उनके बीज के सळाव।
इनके पंचरंगे वांने, उनके इंद्रधनक तांने।
इनके हस्तियां के हलके, उनके एरावत तुलके।
इनके खेत स्वेत दंत, उनके जेही बुक पंत।

देसलजी री वचनिका

जोधपुर राज्यान्तर्गत घड़ोई ग्राम के निवासी तथा डिंगल के विद्वान् और श्रेष्ठ कवि हमीरदान रतनू कच्छभुज के महाराव श्री देशलजी प्रथम के महाराजकुमार लखपतजी के कृपापात्र थे। 'अचळदास खीची री वचनिका' तथा 'रतनसिंघ री वचनिका' के समान 'देसलजी री वचनिका' भी ऐतिहासिक महत्त्व की काव्यकृति है जिसमें कवि ने संवत् १७८५ की होलिका के समय सरबुलन्द तथा कच्छ के महाराव देशल के बीच हुए भीषण युद्ध का वर्णन किया है। इस ऐतिहासिक युद्ध में महाराव देशल की विजय हुई थी। भाषा-प्रवाह, शब्द–चयन तथा काव्यत्व की दृष्टि से यह एक महत्वपूर्ण रचना है। उदाहरण देखिए–

---

१ 'राजस्थानी साहित्य-विक्रम संवत् १६५०–१८००' अप्रकाशित शोध प्रबन्ध, डॉ० जगमोहनसिंह परिहार, पृष्ठ ७८।

२ राजस्थानी सबद कोस (प्रथम खण्ड) भूमि-का–श्री सीताराम लाळस, पृष्ठ १५७।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भळाभळ कुंत खिवै अदभूत, धौळै दिन वेढ़ करै अविदूत ।
हुए असुरांण घणां खळ हांण, सांमी दस नांम रचै घमसांण ।।
ळथोबथ लोह झपेट लपेट, खसै दळ मूंगळ आखळ खेट ।
नागा करिवा वर खाग निनाग, कटै धड़ बेहड़ पग्ग करग्ग ।।[१]

महाराजा अभैसिंघ रा अहमदाबाद झगड़ा रा कवित्त

कवि बखता खिड़िया द्वारा निर्मित 'महाराजा अभैसिंघ रा अहमदाबाद झगड़ा रा कवित्त' १६६ षट्पदियों की वीर रस प्रधान काव्य कृति है जिसमें विक्रम संवत् १७८७ में महाराजा अभयसिंह और सरबुलन्द खो की सैनाओं के मध्य अहमदाबाद में लड़े गये युद्ध का वर्णन है ।[२] इस काव्यग्रंथ से प्रभावित होकर महाराजा अभयसिंह ने विद्वान् कवि को मेड़ता परगने का 'रांणा' नामक गांव प्रदान किया था । यह ग्राम बखता के वंशजों के पास आज भी विद्यमान है ।[3]

डॉ० मोहनलाल जिज्ञासु के मतानुसार कवि की प्रतिष्ठा स्फुट गीतों के कारण थी ।[४] परन्तु यह कथन भ्रामक, निर्मूल तथा अल्प ज्ञान का परिचायक है । बखता खिड़िया की प्रतिष्ठा स्फुट गीतों के कारण नहीं बल्कि 'महाराजा अभैसिंघ रा अहमदाबाद झगड़े रा कवित्त' नामक प्रसिद्ध काव्यकृति के कारण है ।

अहमदाबाद के रण-क्षेत्र में, महाराजा अभयसिंह तथा सरबुलन्दखां की सेनाएं अपने-अपने हृदय में विजयश्री के वरण की अपूर्व कामना संजोए एकत्रित हुई । कवि ने दोनों पक्षों की सेनाओं की साज-सज्जा, अदम्य उत्साह तथा वीरोचित शौर्य का चित्रण करते हुए लिखा है:-

आदि सकति रीझिया श्रोण पीधा तरखाळां ।
रुद्र ज्याइ रीझिया ऊपर पैरी रुण्डमाळा ।।

---

१ श्री सौभाग्यसिंहजी शेखावत के निजी संग्रह से ।

२ 'राजस्थानी साहित्य-विक्रम संवत् १६५०-१८००' अप्रकाशित शोध-प्रबन्ध-डॉ० जगमोहनसिंह परिहार, पृष्ठ १०१ ।

३ 'चारण साहित्य का इतिहास' की मर्म-परीक्षा-श्री सौभाग्यसिंह शेखावत, पृष्ठ १५-१६ ।

४ चारण साहित्य का इतिहास-डॉ० मोहनलाल जिज्ञासु, पृष्ठ २३३ ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रिख नारद रीझिया जिकां हासारस थाया।
दूर अछर रीझिया महासूरा वर पाया॥
सांमळा ग्रीध रिझे सकौ आमख चराचर ऊपरां।
जीविजै अभा दूजा जसा महावाद अजमाल रा॥[1]

कुंडलिया महाराज पदमसिंघ जी रा

४७ कुंडलिया छन्दों में प्रणीत इस काव्य-रचना में चारण कवि गौवर्द्धन लिखमीदासौत ने बीकानेर के महाराजा कर्णसिंह के तृतीय पुत्र पद्मसिंह के अद्भुत शौर्य–पराक्रम का सुन्दर वर्णन किया है। बादशाह औरंगजेब के समय कोंकण के युद्ध में पद्मसिंह द्वारा प्रदर्शित अनुपम शूरवीरता का चित्रण कवि का प्रमुख उद्देश्य रहा है। अनेक स्थलों पर कहावतों तथा सूक्तियों का प्रभावोत्पादक वर्णन कर कवि ने अपनी काव्य-प्रतिभा का प्रमाण प्रस्तुत किया है। उदाहरण देखिए–

चारण भाई खत्रियां, राव कहै कविराव।
वंटायत भारत्थ-अथ, सो किम चूकै दाव॥[2]

राठौड़ करमसैन हिम्मतसिंघोत री झमाल

'राठौड़ करमसैन हिम्मतसिंघोत री झमाल' गाडण कवि गोवर्धन द्वारा विरचित ३२ झमाल छन्दों की वीर रस प्रधान काव्य-कृति है।[3] इसमें कवि ने बीकानेर के राठौड़ कर्मसेन बीदावत द्वारा उमरखान पर की गई विजय का विवरण है। इस कृति की गणना डिंगल भाषा की श्रेष्ठ रचनाओं में की जाती है।

गुण शिवचरित प्रकास

कवि बारहठ नाथा ने ८६ छन्दों की काव्यकृति 'गुण शिवचरित प्रकाश' में राव तिरमल के चतुर्थ वंशधर राव दौलतसिंह के ज्येष्ठ पुत्र राव शिवसिंह के अद्वितीय पराक्रम का अपूर्व वर्णन किया है। राव शिवसिंह ने जयपुर के निर्माता सवाई जयसिंह (आमेर) तथा महाराजा सवाई ईश्वरीसिंह की ओर से लड़े गये अनेक युद्धों में भाग लेकर अपने

---

१ 'महाराजा अभैसिंघ रा अहमदाबाद झगड़े रा कवित्त' हस्तलिखित प्रति, पुस्तक प्रकाश जोधपुर, छप्पय संख्या ११५।

२ पुस्तक प्रकाश, उम्मेद भवन जोधपुर में इतिहास, बंध नं० २।

'राजस्थानी साहित्य–विक्रम संवत् १६५०-१८००' अप्रकाशित शोध प्रबन्ध डॉ० जगमोहनसिंह परिहार, पृष्ठ १११

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वीरोचित शौर्य का प्रशंसनीय प्रदर्शन किया था। महाराजा सवाई जयसिंह और नागोर के अधिपति बख्तसिंह के मध्य हुए सम्वत् १७९८ वि० के गगवाना के युद्ध, महाराजा ईश्वरीसिंह की ओर से संवत् १८०१ वि. में कोटा विजय, राजमहल और सम्वत् १८०५ के बगरु के युद्ध में राव शिवसिंह ने अद्भुत पराक्रम का परिचय दिया।[1] बगरु के युद्ध में ही शूरवीरता का प्रदर्शन करते हुए उन्होंने अपने प्राणों का उत्सर्ग किया था।

सम्वत् १८०१ कातिक सुदि ११ में सम्पन्न काव्य-कृति 'गुण शिवचरित प्रकास' में बारहठ नाथा ने काव्य-सर्जन की प्राचीन परिपाटी से हटकर अपने चरित्रनायक का संक्षिप्त किन्तु सशक्त वर्णन प्रस्तुत किया है। इस काव्य-कृति में कवि ने राव शिवसिंह की फतहपुर विजय और सवाई जयसिंह एवं नागोर के शासक बख्तसिंह के मध्य हुए सम्वत् १७९८ वि. के युद्ध को ही काव्य का प्रमुख विषय बनाया है। फतहपुर के युद्ध के समय जयपुर-नरेश की सहमति से राव शिवसिंह ने अपने बंधु-बांधवों तथा अन्य परिजनों को निमन्त्रण दिया। निश्चित् समय पर दोनों पक्षों की सेनाएं आमने-सामने पहुंच गई। शूरवीरों की वेशभूषा, अस्त्र-शस्त्रों तथा युद्ध के परिणामस्वरूप वीरों के क्षत-विक्षत शरीर पर टूट पड़ने वाले मांस-भक्षी पक्षियों की चेष्टाओं का चित्रण करते हुए कवि ने लिखा हैं–

कुहक्कइ-बाण कबाण कटट्ठ। चिलां भणकार अपार चटट्ठ॥
तड़त्तड़ तीर पड़े तिण बार। अण घण भादव छट अपार॥
धमाधम सेल बहै खग धार। प्रहारत मीर क़टै अणपार॥
कंवारिय बींद घड़ा कळिचाल। तिकै जमहूंत करै रिणताळ॥
असा सिवसिंघ तणा उमराव। गजा सिर मीर लगाडिय घाव॥
बगत्तर टोप कटै सणबन्ध। कटे नर-कोपर काळिज कंध॥
फतैपुर सेनि पड़ा तड़फंत। कबूतर लोटण जांणि कुदंत॥
सदासिव कारिज मालि़ सरंत। उरां अछरा बहु बीर बरंत॥
भूखी रत जोगणि पत्र भरंत। कई पळचार आहार करंत॥
लड़े इंदरेस गयो लंगसाइ। गयो मुखि आब निवाब गमाइ॥
जीतौ जिण बार सिवो जुड़ि जंग। भंजे दल़ खांन किया बल़ भंग॥[2]

---

१ वरदा में 'बारहठ नाथा विरचित 'गुण शिवचरित प्रकास' विषयक श्री सौभाग्यसिंह शेखावत के निबन्ध में से।

२ श्री सौभाग्यसिंह शेखावत के निजी संग्रह से।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अजमेर के समीप हुए गगवाणा के युद्ध का भी राजस्थान के इतिहास में महत्त्वपूर्ण स्थान है। यह युद्ध जयपुर नरेश जयसिंह और नागौर के शासक बख्तसिंह की सेनाओं के मध्य हुआ था। गगवाणा के इस युद्ध में राव शिवसिंह ने जयपुर-पक्ष की ओर से भाग लेकर अपने शौर्य का सुन्दर प्रदर्शन किया था। गगवाणा के युद्ध में राव शिवसिंह द्वारा प्रदर्शित क्षत्रियोचित शूरवीरता का उल्लेख करते हुए कवि नाथा ने लिखा है–

पुणे महाराज लिखे परवांन। दल़ावत आव सिवा दइवांन॥
गयो खड़ि तामह जूरि गरीठ। दलां सिर जोध दिनंकर दीठ॥
मया महाराज करै मन सुद्ध। जोड़े कुण दान करै कुण जुद्ध॥
वणै कोइ पूरब लेख विचार। करै कुण और करै करतार॥
सदा सनमंध सगा विधि साख। लडेवाइ काजि मिलै दल़ लाख॥
लगै घर बेध लियां घर लाज। मंडे रण खेत बिन्है महाराज॥
अड़ी रज आभ खड़ी रंभ आइ। घड़ी चहु नौबति बाजि अघाइ॥
अणी मिल़ फौज बणी दहुं ओर। कल़ेहणि वार भड़ांवरि कोर॥
अजैगढ खेत बिन्है अणचल्ल। हुए दहुं फौजहि माचि हमल्ल॥
सजै बखतेस अठी जयसींग। धरा कजि आहुड़िया बिहुं धींग॥[1]

कवि ने इस काव्य-ग्रन्थ की समाप्ति 'कलश' गीत के साथ की है। गीत के प्रत्येक दोहे में विद्वान् कवि ने शिव के वाहन, शृंगार, चन्द्रमा, भस्मी, मुण्डमाला, क्रुद्ध नेत्र तथा अमृत आदि विशेषताओं का शौर्य के अमर आराधक राव शिवसिंह में आरोपण किया है। निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि बारहठ नाथा द्वारा निर्मित 'गुण शिवचरित प्रकाश' अत्यन्त प्रभावोत्पादक काव्यकृति है।

राव रतन री वेलि

कवि कल्याणदास मेहड़ु विरचित 'राव रतन री वेलि' डिंगल साहित्य की उत्कृष्टतम लघु काव्य-कृति है जिसमें स्वाभिमानी वीरों की जन्मभूमि बूंदी के परम पराक्रमी राजा रतनसिंह की अद्वितीय शूरवीरता का वर्णन किया गया है। राव रतनसिंह बादशाह अकबर और जहांगीर के समसामयिक थे।[2] वंशभास्कर में रतनसिंह का शासन काल १६६४ से १६८८ तक बतलाया गया है। 'राव रतन री वेलि' एक खण्डकाव्य

---

१ श्री सौभाग्यसिंह शेखावत के निजी संग्रह से।

२ श्री सौभाग्यसिंह शेखावत के 'कल्याणदास महड़ु री कही राव रतन री वेलि विषयक निबन्ध में से।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कृति है जिसमें तीन षट्पदियां तथा १२१ छन्द हैं। साहित्य संस्थान के पुस्तकालय के अप्रकाशित ग्रन्थ विभाग में संवत् १७१९ के बड़े मेन्युस्क्रिप्ट में सुरक्षित है।

वेलि के आरम्भ में कवि ने शक्ति और गणपति की वन्दना की है। फिर भगवान राम के विविध स्वरूपों का कीर्तिगान किया है। तदन्तर कवि अपने चरित्र-नायक के पूर्वजों की शौर्यमय वंश-परम्परा का उल्लेख करते हुए अपने मूल विषय की ओर अग्रसर हुआ है। कवि कल्याणदास ने राव रतनसिंह को मान में दुर्योधन, दान में कर्ण, राजाओं में देवराज, देवों में कुबेर तथा भीष्म एवं अर्जुन के समान पराक्रमी बतलाया है।

'राव रतन री वेलि' वस्तुतः डिंगल साहित्य की लघु किन्तु सुन्दर काव्यकृति है जिसमें कवि ने नवीन प्रतीकों तथा उद्भावनाओं से वर्णित दृश्य की सजीवता एवं बोध-गम्यता को बढा दिया है।

इन्द्रसिंघ रूपक

'इन्द्रसिंघ रूपक' इतिहास, भाषा और काव्य की दृष्टि से एक महत्वपूर्ण रचना है जिसमें कवि सगता सांदू ने खैरवा के वीर योद्धा इन्द्रसिंह के शौर्य का वर्णन किया है। प्रस्तुत खण्ड-काव्य कृति में गाथा १३, दोहे १३३, कवित्त ७३, निशानी २५, रसावला ७ तथा बेअक्षरी, झंपताल, नाराच, मोतीदाम, अमृतगति इत्यादि ३३४ छन्द तथा २ वार्ता अर्थात् ५६७ छन्दों में कवि ने अपने चरित्र-नायक तथा उससे सम्बन्धित अन्य शूरवीरों के अद्भुत कार्यकलापों का प्रभावोत्पादक वर्णन किया है।

काव्य के आरम्भ में कवि ने गणपति और सरस्वती की वन्दना कर मारवाड़ के राठोड़ शासकों का परिगणनात्मक पद्धति से वर्णन किया है। बादशाह शाहजहां के पुत्रों में उत्तराधिकार के प्रश्न पर लड़े जाने वाले उज्जैन युद्ध, जसवन्तसिंह का जमरूद में निधन, महाराजा अजीतसिंह का जन्म, अजीतसिंह का शासनारूढ़ होना, उनकी मृत्यु, अभयसिंह का राज्यारोहण, सरबुलन्द खां के साथ उनका युद्ध तथा बीकानेर पर सैन्य अभियान का विस्तृत वर्णन किया है।

विक्रम संवत् १६५० से १८०० के अन्तराल में निर्मित उपरोक्त रचनाओं के संक्षिप्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि राजस्थान के साहित्यकारों ने साहित्य निर्माण के साथ-साथ इतिहास-निर्माण की दिशा में भी उल्लेखनीय भूमिका अभिनीत की है। यहां के कवियों ने अपने अभिनन्दनीय काव्य के द्वारा एक ओर तो राजस्थान की सभ्यता-संस्कृति तथा अन्य गौरवशाली प्रतिमान-परम्पराओं का सुन्दर रूप से निरूपण किया है और दूसरी ओर आँखों देखी सत्य घटनाओं का वर्णन कर भारतीय इतिहास को एक नई दिशा, एक नई दृष्टि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रदान की है। इस प्रकार से कहा जा सकता है कि आलोच्यकाल में निर्मित उच्चकोटि के ऐतिहासिक काव्य के प्रणेता उच्चकोटि के साहित्यकार होने के साथ-साथ उच्चकोटि के इतिहासकार भी थे।

— डॉ० जगमोहनसिंह परिहार
५७६, सरदारपुरा, रोड नं० १०-सी
जोधपुर (राजस्थान)

साहित्य संस्थान का
राजस्थानी साहित्य
एवं
लोक साहित्य

- प्राचीन राजस्थानी गीत (१२ भाग) ३२.५०
- राजस्थानी दोहावली २.५०
- मांझल रात ४.००
- बगड़ावत लोक गाथा ७.५०
- राजस्थानी लोक गीत (६ भाग) १५.००
- राजस्थानी वार्ता (सात भाग; पांचवां भाग अप्राप्य) २१.५०
- राजस्थानी भीलों के लोकगीत (तीन भाग) ७.५०
- राजस्थानी भीलों की कहावतें २.५०
- मेवाड़ी कहावतें (अप्राप्य)
- राजस्थानी भाषा (")
- आदिनिवासी भील २.५०

प्राप्ति स्थान
व्यवस्थापक,
प्रकाशन विभाग
साहित्य संस्थान,
राजस्थान विद्यापीठ, उदयपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शोध सामग्री : सर्वेक्षण

बूंदी-टोंक के भित्तिचित्र

● ब्रजमोहनसिंह परमार

वर्ष १९७३-७४ में लेखक ने बूंदी-टोंक जिलों का सर्वेक्षण किया, जिसके फलस्वरूप बूंदी, दुगारी. कावर, टोंक, टोडारायसिंह, उनियारा और नगर स्थित मन्दिरों, हवेलियों और गढ़ों के भित्तिचित्रों की खोज की गई, यहां उनके विषय में शोधकर्त्ताओं के अध्ययन हेतु जानकारी दी जा रही है :-

१ छत्रमहल के भित्तिचित्र

बूंदी राजमहलों में छत्रमहल, आमेर के दीवानेखास की भांति संगमरमर के दस पहलू स्तम्भों पर आधारित है, जिसके निर्माण का श्रेय राव शत्रुसाल या छत्रसाल (१६३१-१६५९ ई०) को दिया जाता है। इस महल की दीवारों और ताकों में सैंकड़ों पद्धति के चित्र बने हैं. जिनमें शरशैया पर लेटे भीष्मपितामह के चतुर्दिक कृष्ण आदि राजपुरुष, राजदरबार, विष्णु के सम्मुख बूंदी के राव, शिव की अभ्यर्थना करते ऋषिगण आदि चित्र विशेषरूपेण उल्लेखनीय है। चित्र बूंदी शैली के हैं और इनका समय निर्धारित करना शेष है, वैसे शत्रुसाल के[1] समय और पूर्व के लघुचित्र (आर्चर सन् १९५९) प्रकाश में आ चुके हैं।

२ चित्रशाला, बूंदी राजप्रसाद

बूंदी राजमहलों का निर्माण १६-१९वीं शती के मध्य वहां के हाड़ा शासकों द्वारा समय-समय पर कराया गया, जिनमें राव सुरजन (सन् १५५४ ई. -१५८५ई०) व रतनसिंह (१६०७-१६३१ ई.) और उम्मेदसिंह (सन् १७४९-१७७३ ई.) के राज्यकाल महत्वपूर्ण हैं। स्थापत्य और कला की दृष्टि से इन राज-

---

१ पेंटिंग ऑफ इंडिया (स्कीरा सन् १९६३) पृ. १४०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रसादों में १८वीं सदी का चित्रशाला भाग अत्यधिक उत्कृष्ट है, जिसके तिवारे सुन्दर भित्ति-चित्रों से युक्त हैं और साल व चौबारों के किंवाड़ों में हाथीदांत की पच्चीकारी देखने योग्य है। समय के परिवर्तन का प्रभाव इस पूरे राजप्रासाद पर भी पड़ा है, जिससे छतों से पानी की रिसन के कारण कई स्थानों पर दीवारों का आरायशी पलस्तर फूल कर उपड़ गया है, जिससे उन स्थानों के चित्र सदा के लिए समाप्त हो गए हैं, यदि समय रहते इस राजप्रासाद को संरक्षण न प्रदान किया गया तो धीरे-धीरे शेष भित्तिचित्र भी समाप्त हो जायेंगे। इन भित्तिचित्रों की निर्माण-विधि बहुचर्चित "आलगीला" पद्धति हैं।

चित्रशाला बूंदी के भित्तिचित्रों के वर्ण्य-विषय-धार्मिक (शिव-पार्वती, दुर्गा, रंगनाथ जी, महारास, गोवर्धनधारी, चीरहरण, यमुनातीरे वेणुनाद, विश्वमित्र के साथ राम लक्ष्मण का वन-गमन और राम की बारात आदि) राजदबार व सवारी, शेर व शूकर की मृगया, प्रेमाख्यानों (ढोलामारू, रूपमती, बाजबहादुर आदि) और राग-रागिनियों से सम्बन्धित हैं। चित्रों और विषयों की विविधता को ध्यान में रखते यह कहा जा सकता है कि चित्रशाला को चित्रों से सजाने के लिये कई चितेरों को काम पर लगाया होगा। क्योंकि सब कलाकार एक जैसे नहीं होते, इसलिए यहां के चित्रों के रेखाकर्म और रंग योजना में अन्तर स्पष्ट दिखता हैं, फिर भी महारास, चीरहरण, गोवर्धनधारी, 'माहेमिरातव" का जुलूस, चक्री खेलते नायिका और आखेट और प्रकृति के चित्रण में कलाकार की कुशलता का परिचय मिलता हैं। जहां तक नारी[1] के चित्रण की बात हैं, बूंदी के चितेरों ने तत्कालीन सामन्ती वातावरण में उसे जिन २ रूपों देखा, उसका वैसा ही चित्रण किया, इसलिए वेशभूषा और अंग-सौष्ठव के आधार पर यहां दो प्रकार की नारियां भित्तिचित्रों में देखने को मिलती हैं:–

दो प्रकार की नारियां

पहले प्रकार के नारी चित्र वे हैं, जिनकी नारियों की वेश-भूषा, आमोद-प्रमोद, हाव–भावों में देशीपन झलकता है-जैसे सद्यः[2] स्नात नायक की प्रतीक्षा करती कदली और माधवी लता के पास खड़ी नायिकायें, मदनालसा, चक्री खेलते नायिका, गौड़ी और टोड़ी रागिनियों आदि के रूप में चित्रित नायिकाओं के चित्र। दूसरे प्रकार की नारियों के चित्रण में विदेशी न कह कर[3] मुग़ल प्रभाव अधिक निखार पा गया हैं, जो स्वाभाविक ही

---

१ आस्पेक्टस ऑफ इण्डियन आर्ट, पृष्ठ १२४–१२५ (पी० पाल०), लोडेन सन् १९७२

२ पेंटिंग ऑफ इंडिया (स्कीरा, सन् १९६३) पृष्ठ १४९।

३ लीव्स फ्राम राजस्थान (कार्ल खेण्डेलवाल) मार्ग ४, सं० ३, पृष्ठ १५।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं क्योंकि १६ वीं शती से लेकर १८ वीं शती के बूंदी नरेशों ने मुग़लों के दरबारी और दक्षिण भारत में उनके सूबेदार रहे, जहां से वे अपने साथ मुस्लिम वेश-भूषा, आमोद-प्रमोद के साधन और अन्य सुरुचिपूर्ण परम्पराओं को अपने साथ लाये, जिनकी झलक हमें अश्वारोहिणी, कबूतरों की उड़ान, मदिरा और हुक्के का आनन्द लेती, बाज़ को कलाई पर बिठाये नायिका वाले भित्तिचित्रों में देखने को मिलती है। इसके अतिरिक्त इस प्रकार के चित्रों में कुछ ऐसे चित्र भी हैं, जिनमें दोनों प्रकार का सामंजस्य मिलता है। जैसे कुछ नायिकाओं की वेशभूषा तो मुस्लिम है, परन्तु उनके हाव-भाव व आमोद-प्रमोद के साधन देशी ही है, जैसे मेना तथा सारस युग्म के साथ वाली, पारिजात पुष्प और वीणा-धारिणी के चित्र।

इन भित्तिचित्रों की रंग-योजना में पृष्ठभूमि को हरे रंग, मकानों को श्वेत रंग से चित्रित किया गया है। शबीहें भी प्रायः श्वेत रंग की हैं, परन्तु इनके वस्त्रों यथा-पगड़ी, पाजामा, झगा, ओढ़नी, घाघरा, चोली, पहरन-पिशवाज को लाल, नीले, पीले, हरे, काले, सफेद वर्णों से रंगा गया है, जिन पर सुनहरे गोटे, फूलकरी, पटोले, आदि भांति २ की डिजायनें भी बनी हैं। नदी या जलाशय के पानी की लहरों को नीले रंग के ऊपर बारीक व सफेद रेखाओं के द्वारा दर्शाया गया है।

३ बड़े महाराज का महल

यह महल बूंदी राजमहलों के नीचे स्थित हैं। आजकल इसमें राजकीय कन्या पाठशाला है। स्थापत्य की दृष्टि से यह महल १८ वीं शती के प्रतीत होते हैं। इसके ऊपरी कक्षों की दीवारों पर सवारियां, शिकार आदि के चित्र बने हैं, जो बूंदी शैली-१८ वीं शती के उत्तरार्द्ध या प्रारम्भिक १९ वीं शती के प्रतीत होते हैं इसलिए इनके रेखाकर्म और रंग-योजना में वैसा सौन्दर्य देखने को नहीं मिलता जैसा पहले के चित्रों में है।

४ आदिनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर, बूंदी के भित्तिचित्र

बूंदी नागर के नाहर का चौहट्टा स्थित इस जैन मन्दिर के सभामण्डप की दीवार पर जैन धर्म के २२वें तीर्थंकर नेमिनाथ के पंचकल्याणकों को चित्रित किया गया है। ये भित्तिचित्र १८वीं शती के हैं। इन चित्रों के अध्ययन से तत्कालीन सामाजिक स्थिति पर अच्छा प्रकाश पड़ता है।

५ बूंदी कोतवाली के भित्तिचित्र

यह हवेली राव भावसिंह (१६५९-१६८२ ई.) द्वारा विनिर्मित बताई जाती है। इस हवेली में राव भावसिंह की गद्दी की आज भी पूजा होती है। इसी गद्दी के ऊपर दीवार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और ताकों में लगभग ८' ४' के स्थान में भित्तिचित्र बने हैं, जिसके वर्ण्यविषय–वशिष्ठ द्वारा राम के तिलक के समय ब्रह्मा, शिव, विष्णु और ऋषिगण खड़े अंकित हैं। इसके अतिरिक्त होली आदि के दृश्य भी अंकित हैं।

६ भित्तिचित्र, दुगारी

दुगारी, बूंदी से लगभग ६० मील उत्तर-पूर्व में स्थित है और बूंदी रियासत के बड़े ठिकानों में से रहा है। प्राकृतिक दृष्टि से आज भी यह स्थान रमणीक है। यहां के पुष्कर की पाल के किनारे आम और कदली के उपवन दर्शक को प्रत्येक ऋतु में आकर्षित करते हैं। इन वाटिकाओं के निकट पहाड़ी पर दुगारी का गढ़ है जिसमें सीताराम मन्दिर के तीनों तिवारों में आलागीला पद्धति के भित्तिचित्र हैं, जिनके विषय रामायण और भागवत की पौराणिक कथाओं पर आधारित हैं और कालक्रमानुसार १८वीं शती के उत्तरार्द्ध के प्रतीत होते हैं और शैलीगत भेद के आधार पर ये चित्र जयपुर चित्र–शैली के अधिक निकट प्रतीत होते हैं। चित्रों की पृष्ठभूमि का रंग हरा, शबीहों का रंग सफेद, जिनके वस्त्राभूषणों पर सुनहरे और लाल रंग का अधिक प्रयोग हुआ है।

आजकल इस गढ़ में कोई निवास नहीं करता है और न ही इस मंदिर में सेवा पूजा होती है, इसी कारण गढ़ और चित्रों वाले इस मन्दिर की दशा बिगड़ती जा रही है।

७ मथुरेश मन्दिर, टोंक

यह मन्दिर टोंक शहर के बाहर जयपुर रोड़ के बायीं ओर स्थित है। इसका निर्माण श्री रामानन्द बालचन्द ने वि.सं. १६३० में कराया था। आजकल यह मन्दिर जीर्ण-शीर्ण दशा को प्राप्त हो रहा है, परन्तु इसके द्वार के ऊपर ताकों में गणेश, राधा के केश संवारते कृष्ण, रागिनी टोड़ी और आशावरी चित्रित हैं। ये चित्र आलागीला (फ्रेस्को) पद्धति से बने हैं।

८ टोडारायसिंह

टोडारायसिंह टोंक जिले की तहसील का मुख्यालय और ऐतिहासिक स्थान है। जो अपनी वापिकाओं, मन्दिरों और महलों के लिए प्रसिद्ध है। यहां के महलों के एक कक्ष में बहुत ही सुन्दर और उत्कृष्ट भित्तिचित्र रहे होंगे जो वांछित देखरेख और संरक्षण के अभाव के कारण अधिकांशत: समाप्त हो गए हैं। यहां अब कुछ नारी शबीहें बची हैं जिनपर मुगल कला का प्रभाव स्पष्टत: परिलक्षित होता है। ये नारी आकृतियां अपने हाथों में फल, मोरछल और सुराही लिए हुए है और ऐसा प्रतीत होता है कि यह दृश्य कृष्ण अथवा किसी अन्य लौकिक नायक की अगवानी हेतु जाती प्रतीत होती है। चित्र की पृष्ठभूमि में वानस्पतिक चित्रण है। इनके वेशभूषा में हरे, नीले, कत्थई और पीले रंगों का प्रयोग हुआ है और उनके निर्माण में आलागीला पद्धति अपनाई गई प्रतीत होती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसी कक्ष में दो नारी आकृतियां सीधे पत्थर पर उरेही गई हैं और उनमें ऐसी रंग-साजी की गई है जो अब तक नहीं मिटी है।

९ उनियारा

उनियारा टोंक से ३५ किलोमीटर पूर्व में स्थित है। यहां के राव, कछवाहों की मरुका शाखा के हैं जिन्हें उनकी वीरता के कारण मुगल बादशाहों से उनियारा के साथ-२ नगर, ककोड़ बनेठा के परगने मिले थे। यहां के शासकों में संग्रामसिंह व सरदारसिंह प्रथम बड़े ही कलाप्रेमी हुए। जैसा कि मध्ययुगीन परम्परा थी कि प्रायः राजा या जागीरदार अपने-अपने महलों में शीशमहल या चित्रशाला का निर्माण कराते थे। ऐसी ही चित्रशाला उनियारा गढ़ के महलों में भी है, जिसके निर्माण का श्रेय उनके वंशज सरदारसिंह[1] प्रथम को देते हैं। इस चित्रशाला के तीन खंड है जिनमें क्रमशः धार्मिक चित्र, राग-रागिनी और बारहमासा विषयक चित्र बने हैं। ये चित्र दीवारों पर गरदनें में बने हैं और इनके नीचे स्वयं उनियारा के रावराजा और मुगल बादशाहों, मेवाड़, कोटा और बूंदी के राजाओं के चित्र बने हैं। इन चित्रों के विषय में महत्वपूर्ण बात यह है कि सब राजाओं और यहां तक कि उनके दरबारियों के नाम काली स्याही से लिखे हैं।

इन चित्रों के रेखाकर्म में वह गतिशीलता देखने को नहीं मिलती जो बूंदी के समसामयिक भित्तिचित्रों में देखने को मिलती है। रंगयोजना में, श्वेत, श्याम, लाल, पीले रंगों का प्रयोग हुआ है। शबीहें प्रायः एकचश्मी हैं और चेहरों पर छाया की रेखायें स्पष्ट हैं, जो शाहआलमकालीन मुगल प्रभाव की परिचायक हैं। इसके अतिरिक्त इन चित्रों के वानस्पतिक चित्रण में बूंदी शैली का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखता है तथा आकृतियों के जूड़ों में मालवा का प्रभाव और शिव-पार्वती और उनियारा के रावों की चारों बड़ी शबीहों में जयपुर शैली का प्रभाव दिखता है। कई शैलियों के प्रभाव की बात यों समझी जा सकती है कि आवश्यकता पड़ने पर कई स्थानों से कलाकार बुला लिये जाया करते थे अथवा वैवाहिक सम्बन्धों के कारण विभिन्न स्थानों के कलाकार या उनकी कलाकृतियां स्वतः ही भेंट-स्वरूप मिल जाती थी जिनकी नकल करके स्थानीय कलाकार चित्र बनाया करते थे।

१० नगर

टोंक से नगर ३५ किलोमीटर दूर पूर्व में स्थित है। यह स्थान अत्यधिक प्राचीन है। ईसा से २०० वर्ष पहले यहां मालवों का गणराज्य स्थापित था, जिनके सिक्के यहां के प्राचीन टीले की खुदाई से मिले हैं। १६–१७ वीं शती में यह स्थान उनियारा के नरूकों के कब्जे में आया जिनके वंशजों ने यहाँ महलों में भित्तिचित्र बनवाये।

---

१ राजस्थान ललित कला अकादमी, वार्षिकी ६३, पृष्ठ ३३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ये भित्तिचित्र फ्रेस्को अथवा आलागीला पद्धति से बनाये गये। इनकी पृष्ठभूमि हरी और शबीहें प्रायः सफेद रंग की हैं। पारम्परिक वेशभूषा में पुरुषों की पगड़ियां बूंदी की खंजरदार पगड़ियों से मिलती-जुलती हैं। इन चित्रों के वर्ण्यविषय–नारी पात्रों (टोड़ी[1] आदि) बीजा–सोरठ (पनघट पर नायक) ढोला-मारू, शिकार, दरबार, तीज (श्रावण) दशहरे की सवारी, समसामयिक पड़ौसी रियासतों के शासकों की शबीहें, जैसे-उम्मेदसिंह शाहपुरा) गोपालसिंह (करौली), महाराव होल्कर, सूरजमल (भरतपुर) दुरजनशाल (कोटा), बुधसिंह (बूंदी) के चित्र हैं। इसके अतिरिक्त कृष्णलीला सम्बन्धी चित्र भी यहां बने हैं जिनमें चीरहरण, दानलीला, वेणुवादन और महारास के चित्र विशेष रूपेण उल्लेखनीय हैं।

इन चित्रों का रेखाकर्म, रंगयोजना और प्राकृतिक चित्रण ज्यों का त्यों बूंदी शैली से मिलता-जुलता है। या यों कहा जाये कि नगर बूंदी शैली का एक दूसरा केन्द्र था। कालक्रमानुसार नगर के भित्तिचित्र १८ वीं शती के प्रतीत होते हैं।

नगर की रंगशाला के दो किवाड़ों पर दर्पणकन्या के चित्र (२६"×१२") वड़े ही उत्कृष्ठ हैं। इनकी निर्माण विधि इस प्रकार है, कि पहले लाख का प्रलेप किया गया, फिर उसके ऊपर काले, सफेद रंग के माध्यम से आकृति को उभारा गया। बूंदी चित्रों की नायिका जैसी दोनों नारी आकृतियां भी छरहरी और लम्बी हैं।

अधीक्षक, कला सर्वेक्षण,
पुरातत्त्व व संग्रहालय विभाग,
राजस्थान, जयपुर

---

१ जर्नल आफ यू० पी० हिस्टारिकल क्वाटर्ली; सन् १९४७, भाग १–२, पृष्ठ २१ तथा रागाज एण्ड रागिनीज (प्रो० सी० गांगुली) पृष्ठ १६५ (अपेंडिक्स १५) में टोड़ी को दीपक राग की रागिनी (मेषकरन मत) और इसी पुस्तक के पृष्ठ १९९ की अपेंडिक्स १८ के अनुसार टोड़ी को राग हिन्डोल की रागिनी (विट्ठल कृत रागमाला) बताया है केन्द्रीय संग्रहालय, जयपुर के संग्रह के जयपुर-शैली वाले रागमाला में भी टोडी को राग हिंडौल की रागिनी के रूप में चित्रित और वर्णित किया गया है, देखिये–

हिंडोलरागः–दोहा–मधुमाधौ गंधारमिलि टोडी औ देसाषी
विलावल हिंडोल संग राग रंग जीव राषी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वामी दयानन्द का एक अप्रकाशित पत्र

● भगवतीलाल सचेती

साहित्य संस्थान, राजस्थान विद्यापीठ, उदयपुर के हस्तलिखित संग्रहालय हेतु शोध सामग्री एकत्रित करने के प्रयास में स्वामी दयानन्द सरस्वती के हस्ताक्षरों से युक्त एक पत्र प्राप्त हुआ है जो अभी तक अप्रकाशित है।

यह पत्र लाहोर से २८ अप्रेल, १८७८ ई. को कविराजा श्यामल दास (प्रसिद्ध इतिहासज्ञ,मेवाड़) के ५ अप्रेल,१८७८ के पत्र के उत्तर में लिखा गया है ! पत्र में कुछ पुस्तकें रेलवे द्वारा भेजने का उल्लेख है तथा इस बाबत मोहनलाल विष्णुलाल पण्ड्या (उदयपुर) एवं कालूराम खजांची (नसीराबाद) का सन्दर्भ दिया गया है। मेवाड़ के तत्कालीन महाराणा (सज्जनसिंह) के ऐश्वर्य वृद्धि की कामना की गई है व पत्र के अन्त में पुरोहित पद्मनाथ (उदयपुर) एवं ठाकुर मनोहरसिंह (लावा सरदारगढ़) को आशीर्वाद दिया गया है।

स्वामी दयानन्द का उदयपुर में सर्वप्रथम पदार्पण ११ अगस्त, १८८२ को हुआ था। पत्र से ज्ञात होता है कि उदयपुर आगमन से पूर्व भी स्वामीजी का मेवाड़ राज्य के प्रतिष्ठित पुरुषों से सम्पर्क था।

पत्र का आकार ८"×५½" है तथा कुल ३१ पंक्तियां दो पृष्ठों में है। प्रारम्भ में सात पंक्तियां संस्कृत में तथा पश्चात् की चौबीस पंक्तियां हिन्दी में है। पत्र काली स्याही में लिखा गया है। स्वामी दयानन्द के हस्ताक्षर लाल स्याही में है तथा उनके स्वयं के हाथ से पत्र के दायें व ऊपर के हाशिये में दो पंक्तियां और लिखी गई हैं। पत्र का मूलपाठ इस प्रकार है,सुविधा के लिये मूलपाठ का ब्लॉक भी आगे दिया जा रहा है—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मूलपाठ

स्वस्ति श्रीमदनवद्यगुणगणालङ्कृत महाशय विद्वभ्यः श्रीयुत कविवर्य्य दधिवाडियोपनाम भूषित श्यामलदासेभ्यो दयानन्द सरस्वती स्वामिन आशिषः समुल्लसन्तुतमाम्। शमत्रवरी वृत्यते तत्रेश्वरानुग्रहेण भवदीयं च नित्य माशासे। अथ देशभाषया वृतान्तो विज्ञाप्यते। कुशल पत्र आपका मि. चैत्र शु. ३ ता. ५ अप्रेल का उचित समय पर हमारे पास पहुंचा। लिखा सो क्रमपूर्वक प्रकट हुआ। पुस्तकें रेल द्वारा आपके पास २५ मार्च को भेज दी गई हैं और पत्र भी पृथक २ श्री पंड्या जी तथा लाला कालूराम खजानची नसीराबाद के पास भेज दिये गये थे परंतु आज की तारीख तक आपकी वा उक्त खजानची जी की ओर से रसीद पुस्तको की नहीं आई कारण विलंब होने का मालूम नही। ऐसा जान पड़ता है कि श्री मोहनलाल विष्णलाल पंड्या जी को कुछ काम अवश्य लगा गया होगा। अब जो पुस्तकें पहुंची हों तो रसीद और पहुंच उनकी लिख भेजना उचित है हमको इस बात के श्रवण करने से अत्यन्त आनन्द प्राप्त हुआ कि हमारे आर्य्यावर्त देश के श्रीमान महाशय श्री महाराणा जी बड़े बुद्धिमान हैं परमात्मा उनका ऐश्वर्य्य प्रतिदिन वृद्धि को प्राप्त करे। अब हमारा कुछ काल लाहौर में वास करके एक पक्ष में पूर्व देश की ओर फिरने का विचार है। अग्रे किमधिकम्। पुरोहित पद्मनाथजी तथा ठाकुर मनोहरसिंह जी आदि सर्दार लोगों से हमारा आशीर्वाद कह दीजिये।

इति। ता० २८ अप्रेल सन् १८७८ ई०

द० दयानन्द सरस्वती

पत्र के दायें और ऊपर के हाशिये पर जो दो पंक्तियां और लिखी हुई है, वे इस प्रकार हैं—

हम लोग यहां अत्यानन्द में हैं सर्व शक्तिमान जगदीश्वर आप लोगों को सर्वदा आनन्द में रक्खे।

इस मूलपाठ वाले पत्र का ब्लॉक आगे के पृष्ठ पर दिया जा रहा है—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वस्ति श्रीमदनव घमुहागरगा लङ्कृते महाशय
विद्वद्भ्यः श्रीयुत कविवर्य्य दधिवाडियोपनाम
भूषित श्यामलदासेभ्यो दयानन्दसरस्वतीस्वा
मिन आशीषः समुल्लसन्तुतमाम्। शमत्रवरी
वर्त्यते तत्रेश्वरानुग्रहेण नव दीर्घं चानेत्य
माशासे। अपदेशानावस्था वृत्तान्तो विज्ञाप्यते।
कुशलपत्र आपका मि० चैत्र सु० ३ ता० ५
अप्रेल का उचित समयपर हमारे पास पहुं
चा। लिखा लोकमपूर्वक प्रकट हुआ।
पुस्तकें रेल द्वारा आपके पास २५ मार्चको
भेजदी गई हैं और पत्रभी पृथक २ श्री
पंड्याजी तथा लाला कालूराम खजानची
नाथीरांवाद के पास भेजदिये गये थे परंतु आज
की तारीख तक आपकी वा उक्त खजानची
जीकी ओरसे रसीद पुस्तकों की नहीं आई
कारण विलंब होने का मालूम नहीं। ऐसा
जान पड़ता है कि श्री मोहनलाल विष्णु
लाल पंड्याजी को कुछ काम अवश्य लग
गया होगा। अब जो पुस्तकें पहुंची हों तो रसीद
और पहुंच उनकी लिख भेजना उचित है

हमको इस बातके श्रवण करनेसे अत्यन्त
आनन्द प्राप्त हुआ कि हमारे आर्यावर्त
देशके श्रीमान् महाराणा श्री महाराणाजी बड़े बुद्धि
मान हैं परमात्मा उनका ऐश्वर्य्य प्रतिदिन
वृद्धि को प्राप्त करे। अब हमारा कुछ काल लाहौर
में वास करके एक पक्ष में पूर्व देशकी
ओर फिरने का विचार है। अग्रे किमधि
कम्। पुरोहित पद्मनाथजी तथा ठाकुर
मनोहरसिंहजी आदि सर्दार लोगोंसे
हमारा आशीर्वाद कह दीजिये। —
इति। ता० २८ अप्रेल सन १८७८ ई०

द० दयानन्दसरस्वती

वरिष्ठ लिपिक संग्राहक,
साहित्य संस्थान,
रा. वि. उदयपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विमर्श

'अचलदास खीची री वचनिका' का रचना-काल

● वेद प्रकाश गर्ग

'अचलदास खीची री वचनिका' को डॉ० तैस्सितोरी[1] तथा उनके मतानुगामी विद्वानों[2] द्वारा अभी तक अचलदास खीची की समसामयिक रचना समझकर, इसका निर्माण-काल सं० १४८० के आसपास निश्चित् किया जाता रहा है, किन्तु इधर कुछ विद्वानों ने इस कृति के उक्त रचनाकाल पर शंका व्यक्त की है और इसे काफी परवर्ती रचना माना है। ऐसा ही एक प्रयास डॉ० हरीश ने अपने 'अचलदास खीची री वचनिका का नया मूल्यांकन' शीर्षक लेख में किया है। डॉ० साहब का यह लेख उनके 'आदिकालीन हिन्दी-साहित्य-शोध' नामक लेख संग्रह[3] में प्रकाशित हुआ है। इस लेख में उन्होंने 'वचनिका' का ऐतिहासिक एवं भाषिक आलोच्य दृष्टि से गम्भीर अध्ययन उपस्थित किया है। 'वचनिका' के तथ्यों का इतिहास के आधार पर परीक्षण कर वे इस निर्णय पर पहुंचे हैं कि 'वचनिका' अचलदास खीची की समसामयिक

---

१ ए डेस्क्रिप्टिव केटेलॉग ऑव बार्डिक एण्ड हिस्टोरिकल मैन्युस्क्रिप्ट्स, भाग १, बीकानेर स्टेट, खण्ड १, पृ० ४०–४१।

२ राजस्थानी भाषा और साहित्य, पृ० १०० डॉ० मोतीलाल मेनारिया; राजस्थानी सबद कोस, भूमिका, पृ० ११९, श्री सीताराम लालस; राजस्थान-भारती, भाग ५, अंक १, पृ० ८४, श्री जुगलसिंह खीची; डिंगल-साहित्य, भूमिका, पृ० २१ डॉ० जगदीश प्रसाद श्रीवास्तव; राजस्थानी भाषा और साहित्य, पृ० ८४, डॉ० हीरालाल माहेश्वरी; अचलदास खीची री वचनिका, इतिहास की दृष्टि से परीक्षण, पृ० ४, डॉ० दशरथ शर्मा।

३ दे पृ. ४२७-४६३।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रचना नहीं है। अतः इसे सं० १४८० के आसपास की रचना स्वीकार करना भ्रमात्मक है। 'वचनिका' के रचयिता शिवदास, जो गाडण शाखा के चारण थे, ने अचलदास खीची से पर्याप्त समय बाद किंवदन्तियों तथा सुनी-सुनायी बातों के आधार पर डिंगल-भाषा में वीर रसात्मक इस छोटी-सी उत्तम कृति का निर्माण किया था। डॉ० साहब ने 'वचनिका' के इस नवीन मूल्यांकन द्वारा विद्वानों की पूर्व-स्थापित मान्यताओं के उन्मूलन के साथ ही 'वचनिका'-विषयक अपने पूर्व प्रकाशित लेख[1] की भूलों का भी निराकरण किया है। विद्वान् लेखक ने 'वचनिका' का नवीन दृष्टि से जो मूल्यांकन प्रस्तुत किया है, वह वास्तव में प्रशंसनीय है। अभी तक अन्य किसी विद्वान् ने 'वचनिका' के इस तथ्य पर ध्यान नहीं दिया था। खुमान रासो, विजयपाल रासो, पृथ्वीराज रासो आदि ग्रंथों की तरह इस 'वचनिका' को भी भूल से विद्वानों ने आदिकालीन रचना समझ लिया है। इसका एकमात्र कारण यह है कि इन ग्रंथों के चरित-नायकों के आविर्भाव-काल को इन ग्रंथों के ही प्रणयन का समय मान लिया है। वस्तुतः ये ग्रंथ उतने प्राचीन नहीं हैं, जितने कि मान लिए गए हैं। इस रहस्योद्घाटन के लिए डॉ. हरीश बधाई के पात्र हैं।

विद्वान् लेखक के लेखगत मन्तव्यों से सहमत होते हुए भी मेरा उनके निष्कर्षोल्लेख से मतैक्य नहीं है। इसलिए, उक्त 'वचनिका' का रचना-काल पुनर्विचारणीय है। उनके लेख की एक-दो अशुद्धियों का निराकरण करते हुए इस लेख द्वारा रचनाकाल-विषयक उनके निष्कर्ष पर अपने विचार प्रस्तुत कर रहा हूं।

सब बातों के विचारोपरान्त 'वचनिका' के रचना-काल पर डॉ० साहब का निष्कर्ष है[2] कि '........यह स्पष्ट कहा जा सकता है कि कवि शिवदास या तो १७वीं शताब्दी, अर्थात् सं. १६३१ के बाद के हैं, या उससे भी बाद के, अर्थात् १८वीं शताब्दी के।' भाषा की दृष्टि से कुछ उद्धरणों की अन्य कवियों की भाषा से तुलना करने के बाद उन्होंने पुनः अपने मत को व्यक्त करते हुए लिखा है[3]—'उक्त उद्धरणों से भी कवि शिवदास सं. १६७५ या १७०० के आसपास के ही लगते हैं। अतः, हमारे मतानुसार कवि शिवदास गाडण सं. १६५० से १६७५ अथवा १७०० के बीच में ही कहीं होने चाहिए और यही वचनिका का रचना-काल भी होना चाहिए।'

---

१ परम्परा, भाग १२, सन् १९६१ ई०, पृ० ३३-४८।

२ आदिकालीन हिन्दी-साहित्य-शोध, पृ० ४४६।

३ वही, पृ० ४४९।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'वचनिका' की एक हस्तलिखित प्रति १७वीं शताब्दी की, अर्थात् सं. १६३१ की प्राप्त है, जो बीकानेर की 'अनूप संस्कृत लाइब्रेरी' में सुरक्षित है। डॉ० साहब स्वयं 'वचनिका' की इस प्रति को प्रामाणिक मानते हैं।[1] जब ग्रन्थ की सं. १६३१ की प्रति प्राप्त है, तब कृति का रचना-काल उक्त समय के बाद का कैसे माना जा सकता है? आश्चर्य है; डॉ० साहब ने इस तथ्य-प्रमाण की कैसे उपेक्षा कर दी? यह कैसे सम्भव हो सकता है कि किसी कृति का रचना-काल तो बाद का हो और उसकी प्रति पूर्व समय की हो? अर्थात्, यह विचार असम्भव है। अतः, सं. १६३१ के बाद का 'वचनिका' का रचनाकाल स्थिर करना हास्यास्पद ही है। कृति की सं. १६३१ की हस्तलिखित प्रति प्राप्त होने के कारण 'वचनिका' का रचनाकाल उक्त संवत् से पूर्व का ही है। इस प्रकार, कवि शिवदास की स्थिति सं. १६३१ के पूर्व की ही सिद्ध होती है। 'वचनिका' की प्राचीनतम हस्तलिखित प्रति की पुष्पिका इस प्रकार है :—

'संवत् १६३१ वर्षे श्रावण सुदि ८ सोम दिने। घटी १६ पल ३५ विशाषा नक्षत्र घटी ३१/४८ ब्राह्मनाम योग घटी ४०/४० अचलदास खीची री वचनिका ॥ महाराजाधिराय महाराय श्री राइसींघजी विजै राज्ये जाणियाणा गांव मध्ये महाराजाधिराय महाराय श्री जोधा तत्पुत्र राज श्री बीदा तत्पुत्र राज श्री संसार चंद तत्पुत्र राज श्री सांग तत्पुत्र राज सांवलदास लिखितम् स्वात्म पठनार्थं। सुभं भवतुः। कल्याणमस्तु। श्री रामचन्द्रजी।'

यह प्रति बीकानेर के महाराजा रायसिंह के राजत्व-काल[2] (सं. १६३०से१६६८तक) में जोधाजी के पुत्र और बीदासर ठिकाने के संस्थापक बीदाजी के प्रपौत्र श्री सांवलदासजी द्वारा सं. १६३१ में लिपिबद्ध हुई थी। पुष्पिका में तथ्यों का जो विस्तार दिया हुआ है, उसके ऐतिहासिक पक्ष का समर्थन इतिहास से होता है। ज्योतिषीय विस्तार की प्रामाणिकता की जांच भी विद्वानों को कर लेनी चाहिए। विद्वान् स्वयं पुष्पिका के आधार पर डॉ० हीरा के रचनाकाल-विषयक निष्कर्ष की सार्थकता को परख लें।

अब यह विचार करना है कि सं० १६३१ के पूर्व कवि ने कब इस 'वचनिका' की रचना की? क्या कोई ऐसा प्रमाण या तथ्य प्राप्त होता है, जिसके आधार पर इसका निर्माण-काल निश्चित् किया जा सके? जब हम इस दृष्टि से 'वचनिका' का निरीक्षण करते हैं, तब हमें एक ऐसा तथ्य मिलता है, जिससे इसके रचनाकाल को स्थिर करने में कुछ

---

१ वही, पृ० ४४६ तथा ४५७।

२ मुंहता नैणसी री ख्यात, भाग ३, पृ० १८१ तथा २१०, प्र३ राजस्थान प्राच्य विद्या-प्रतिष्ठान, जोधपुर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सहायता मिलती है। युद्ध में जिन हिन्दू-राजाओं ने माण्डू के सुलतान का साथ दिया, उनमें कवि ने एक उल्लेख इस प्रकार किया है–'……अवर देवड़ा हींदू-राइ बंदि-छोड़ दूसरा मालदे समरसीह सारिखा।'

इस उल्लेख में कवि ने समरसिंह की समता दूसरा मालदेव कह कर 'मालदेव' से की है अर्थात् उसे दूसरा मालदेव बतलाया है। यह मालदेव कौन है, जिनसे कवि ने इस प्रकार उपमा दी है? राजस्थान में जोधपुर-नरेश राव मालदेव राठौड़ इतिहास-प्रसिद्ध शासक हुए हैं। उन्हीं का उल्लेख कवि ने इस रूप में किया है। वैसे राजस्थान में और भी कई मालदेव हुए हैं, किन्तु अपने कर्मबल पर जो ख्याति इतिहास में राव मालदेव राठौड़ ने प्राप्त की है, वह दूसरों ने नहीं की। अतः वे इस कोटि में नहीं आते, जिससे समता की जा सके। जोधपुर के राव मालदेव ही इस समता-कोटि में आते हैं। इनका राज्य-काल सं० १५८८ से सं० १६१९ तक है।[1] अतः, इस तथ्य के आधार पर मेरा विचार है कि इस 'वचनिका' का निर्माण १६१९ और सं. १६३१ के मध्य किसी समय हुआ। इसकी पुष्टि इसकी भाषा से भी होती है। इसकी भाषा १७वीं शताब्दी के प्रारम्भ की है; जो 'देईदास जैतावत री बेल,' 'रतनसी खींवावत री बेल,' 'राणा उदैसिंघ री बेल' आदि मुगल-सम्राट् अकबरकालीन डिंगल-भाषा की रचनाओं की भाषाओं से बहुत मिलती जुलती है। 'वचनिका' की भाषा अचलदास के समय, अर्थात् सं. १४८० के आसपास की भाषा कदापि नहीं है। वस्तुतः, यह रचना अचलदास खीची की समसामयिक नहीं है और न ही सं. १६३१ के बाद की है, बल्कि शिवदास ने सं. १६१९ और सं. १६३१ के बीच किसी समय चारण-भाटों की बहियों, लोक कथाओं, किंवदन्तियों तथा सुनी-सुनायी बातों के आधार पर इस ग्रन्थ की रचना की है।[2] इसमें आए हुए ऐतिहासिक व्यक्तियों के नाम अधिकांश में कपोल-कल्पित एवं मनगढ़न्त हैं। इतिहास की दृष्टि से यह रचना ऐतिहासिक महत्व की नहीं है, किन्तु काव्य-सौष्ठव की दृष्टि से यह वीर रस की एक उत्कृष्ट रचना है। अब दो एक अशुद्धियों की ओर संकेत कर उनका निराकरण करते हुए लेख समाप्त किया जाता है।

शिवदास ने जिस ऐतिहासिक युद्ध-कथानक को आधार बनाकर इस 'वचनिका' का निर्माण किया है, वह युद्ध-गागरौग गढ़-नरेश अचलदास खीची और माण्डू के सुलतान होशंगशाह के मध्य सं० १४८० (सन् १४२३) में हुआ था,[3] जिसकी पुष्टि

---

१ मुंहता नैणसी री ख्यात, भाग ३, पृ २१५

२ सं० १६३१ वाली प्रतिलिपि मूल की सर्वप्रथम प्रतिलिपि प्रतीत होती है। अपनी उत्कृष्टता एवं रोचकता के कारण इस रचना का प्रचार भी पर्याप्त हुआ है।

३ उत्तर तैमूरकालीन भारत, भाग २, पृ० ५७, प्र० इतिहास-विभाग, मुस्लिम वि. वि. अलीगढ़।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुसलमानी तवारीखों से होती है। डॉ० हरीश तथा अन्य कई लेखकों ने सं० १४८५ में इस युद्ध का होना लिखा है, जो प्रमाण-पुष्ट न होने के कारण अशुद्ध है।

'वचनिका' में दो पंक्तियां इस प्रकार आयी हैं-'बाई सम्मलादे भोज की कान्ता अचल की जनेता। कुल वहूतउ बाई पुहपाई राणा मोकल की सारधू।' डॉ० हरीश ने उक्त अंश का अर्थ करते हुए अपने लेख में लिखा है-'भोज की कान्ता और अचल की जनेता से स्पष्ट होता है कि सफला दे बाई अचलदास की पुत्री तथा भोज की पत्नी थी और कुलवधू राणा मोकल की सारधू थी।[1] यह अर्थ अशुद्ध और अस्पष्ट है। 'भोज की कान्ता और अचल की जनेता' से यह अर्थ है कि सफला दे भोज की पत्नी और अचलदास की माता थी। भोज, अचलदास के पिता का नाम था, इसीलिए 'वचनिका' में उन्हें 'भोजाउत' कहा गया है। इस तथ्य की पुष्टि इतिहास से भी होती है।[2] 'कुल बहू तउ बाई पुहपाई राणा मोकल की सारधू' इस अंश का स्पष्ट अर्थ है-'बाई पुष्पावती राणा मोकल की सुपुत्री और अचलदास की रानी।' यद्यपि यह तथ्य इतिहास की दृष्टि से पूर्ण भ्रामक है, फिर भी पंक्तियों का अर्थ तो शुद्ध और स्पष्ट होना चाहिए था। डॉ० साहब ने एक स्थान पर लिखा है-'गहलोतजी ने अपने इतिहास[3] में अचलदास के पुत्र का नाम धीरज लिखा है और कवि शिवदास ने कहीं भी धीरज नाम का उल्लेख नहीं किया, यह बात समझ में नहीं आती। इसके प्रतिकूल उन्होंने रचना में पाल्हण सी (पाल्हणसिंह) को सम्भवतः अचलदास का पुत्र बताया है।[4] डॉ० साहब के उल्लेख के विपरीत श्री जुगलसिंह खीची ने अपने 'अचलदास खीची री वचनिका का परिचय' नामक लेख में बतलाया है[5] कि 'धीरज' का उल्लेख 'वचनिका' में मिलता है। उनका उल्लेख है-'वचनिका' में भी यह लिखा है कि 'धीरज कहाँ राणा मोकल सी पासि गयौ थौ।' अतः, 'वचनिका' में धीरज के नाम न होने की बात समझ में नहीं आती। पाल्हणसी की पुष्टि इतिहास से होती है। गागरौण-राजवंशावली में अचलदास खीची के पुत्रों में 'पाल्हणसिंह' के नाम का भी उल्लेख मिलता है।[6] अतः सन्दिग्धता की गुंजाइश नहीं।

१४, खटीकान स्ट्रीट, मुजफ्फर नगर, (उ० प्र०)

---

१ आदिकालीन हिन्दी-साहित्य-शोध, पृ० ४३७।
२ भगवन्तरायजी खीची और उनके मण्डल के कवि; डॉ० महेन्द्रप्रतापसिंह पृ० ४७।
३ श्री जगदीशसिंह गहलोत : राजपूताने का इतिहास, मारवाड़-राज्य, पृ० ११५।
४ आदिकालीन हिन्दी-साहित्य-शोध, पृ० ४३६।
५ राजस्थान-भारती, भाग ५, अंक १, पृ० ८३।
६ भगवन्तराय खीची और उनके मण्डल के कवि, पृ० ४७।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समीक्षा

पृथ्वीराज रासो-इतिहास और काव्य

डॉ० राजमल बोरा, **प्रकाशक–नेशनल पब्लिशिंग हाउस–दिल्ली; मूल्य–२५) रुपये,**

प्रस्तुत पुस्तक डॉ० राजमल बोरा की हिन्दी वीर काव्यों पर समीक्षात्मक अध्ययन-माला के प्रकाशन की योजना का प्रथम पुष्प है। पृथ्वीराज रासो लगभग एक शताब्दी से ऐतिहासिकता, प्रामाणिकता, रचयिता, रचनाकाल एवं उद्धारक शृंखला आदि की दृष्टि से एक विवादास्पद काव्य–ग्रंथ रहा है। ग्राउज और बूलर के मध्य प्रारम्भ हुए विवाद की अब तक भी समाप्ति नहीं हो पाई है। कविराजा श्यामलदास, पं० मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या, डॉ० गौ० ही० ओझा, हर प्रसाद शास्त्री, टेसीटोरी, डॉ० दशरथ शर्मा, प्रो० नरोत्तमदास प्रभृति अनेक ख्याति लब्ध इतिहास और साहित्य-मर्मज्ञ विद्वानों ने समीक्षात्मक लेखादि लिखकर अपने प्रबल तर्कों के द्वारा समस्याओं के समाधान में योग दिया है। नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित वृहत् संस्करण के उपरान्त लघु और लघुतम रूपान्तरों के अनेक संस्करण भी प्रकाशित हो चुके हैं। विभिन्न स्थानों में विकीर्ण इसकी सैंकड़ों प्रतियों का पता लगा कर उन्हें प्रकाश में लाने का भी विद्वानों ने प्रयास किया है। डॉ० राजमल बोरा ने पृथ्वीराज रासो से सम्बन्धित अद्यावधि प्रकाशित यथा सम्भव समस्त तथ्यों का समाहार कर अपनी निष्पक्ष विवेक शक्ति के आधार पर उनका विवेचन किया है और यत्र-तत्र कतिपय नवीन स्थापनाएं और सुझाव प्रस्तुत किये हैं।

समस्त पुस्तक सात अध्यायों में विभाजित है। 'प्रकाशन से पूर्व' शीर्षक प्रथम अध्याय में नागरी प्रचारिणी सभा, काशी के द्वारा प्रकाशित वृहद्-संस्करण से पूर्व उदयपुर में प्राप्त हस्तलिखित प्रतियों के आधार पर रासो को इतिहास ग्रन्थ मानकर किये गये विवाद पर प्रकाश डालते हुए कहा गया है कि विवाद में ग्रस्त विद्वानों ने न तो इन प्रतियों की प्रामाणिकता की ओर ध्यान दिया और न उन्होंने उनकी ऐतिहासिक छानबीन ही की। 'वृहद् संस्करण और साहित्य का इतिहास' शीर्षक द्वितीय अध्याय में विद्वान् लेखक ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बृहद् संस्करण के प्रकाशन के उपरान्त हुए विवाद का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत करते हुए ध्यान आकर्षित किया है कि (१) हिन्दी साहित्य के इतिहास ग्रंथों में मात्र बृहद् संस्करण का परिचय दिया गया है-अन्य रूपान्तरों का नहीं; तथा (२) रासो के प्रामाणिता सम्बन्धी विवाद में ध्यान ऐतिहासिक आधार पर रहा है, उसकी पुरातनता को प्रामाणिकता से भिन्न मानकर विवेचन नहीं किया गया है।

तृतीय अध्याय में रासो के मुद्रित संस्करणों का परिचय देते हुए अप्रामाणिक सिद्ध किये गये बृहद् संस्करण के महत्त्व की ओर ध्यान दिलाया गया है। यह संस्करण अब दुर्लभ हो गया है। साहित्य संस्थान, विद्यापीठ के तत्वावधान में डॉ० मोतीलाल मेनारिया इसी संस्करण के आधार पर पृथ्वीराज रासो-कोश तैयार कर रहे हैं। शोध ग्रंथों और लेखों में चर्चित रासो के मध्यम संस्करण के प्रकाशन की आवश्यकता पर भी लेखक ने जोर दिया है।

चतुर्थ अध्याय में लेखक ने देश की विभिन्न संस्थाओं और व्यक्तिगत संग्रहों का निरीक्षण कर रासो की प्राप्त हस्तलिखित प्रतियों का विवरण प्रस्तुत किया है। लघु और लघुतम प्रतियों की प्राचीनता में संदेह नहीं करते हुए भी उन्होंने इनकी अपूर्णता की ओर इंगित किया है। लिखित रूप में आने से पूर्व लेखक ने चारणों और भाटों द्वारा रासो के मौखिक संरक्षण और प्रचार-प्रसार में योग पर भी प्रकाश डाला है। विभिन्न संस्करणों की प्रतियों में प्राप्त प्रशस्तियों, पुष्पिका लेखों में निहित कूट छंदों के आधार पर डॉ० श्यामसुन्दर दास, डॉ० मोतीलाल मेनारिया और डॉ० ब्रजमोहन जावलिया द्वारा स्थापित रासो की प्राचीनता तथा उद्धारकों-विषयक मान्यता पर भी लेखक ने विस्तृत विवेचनात्मक विश्लेषण किया है। डॉ० जावलिया की मान्यता को समीचीन ठहराया है।

पांचवें अध्याय में रासो की पुरातनता और प्रामाणिकता की समस्या पर विचार प्रस्तुत करते हुए विद्वान् लेखक ने निम्नांकित बिंदुओं में अपना निष्कर्ष प्रस्तुत किया है।

(१) चन्दकवि पृथ्वीराज का समकालीन रहा होगा; (२) अकावधि प्राप्त सभी मुद्रित और हस्तलिखित संस्करणों का लेखक चन्द कवि रहा होगा, (३) चंद के नाम से चंद-पुत्रों और उनके उत्तराधिकारियों ने रासो के छंद रचे हैं और अकबर के समय तक रासो कण्ठानुकण्ठ चलता आया है। अकबर के समय के अनेक ग्रन्थों पर रासो के कथानक का प्रभाव पड़ा है। इसकी मान्यता उस समय हिन्दू इतिहास के रूप में थी। (४) रासो का सर्वप्रथम लिखित रूप १६१० ई. के लगभग की (धारणोज वाली प्रति) है-जिसकी पुष्पिका से स्पष्ट है कि उससे पूर्व भी रासो की कोई हस्तलिखित प्रति विद्यमान थी। (५) रासो के विभिन्न संस्करण एक समय के नहीं हैं-उनके लिपिकार, तथा लिपि-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर्ताओं का प्रयोजन अलग-अलग रहा है। इस आधार पर रासो के बदलते और परिवर्द्धित होते स्वरूपों पर प्रकाश डाला जा सकता है। ऐतिहासिक भ्रांतियों के द्योतक होते हुए भी प्राप्त विभिन्न रूप रासो की इतिहास-बोध की प्रामाणिकता सिद्ध करते हैं। लेखक ने इसे इतिहास के रूप में जीने वाला महाकाव्य कहते हुए काव्य-मीमांसकों से इनके काव्य रूप पर विचार करने का आग्रह किया है।

'इतिहास-बोध' शीर्षक छठे अध्याय में लेखक ने रासो के बदलते संस्करणों में बदलती ऐतिहासिक धारणाओं की अभिव्यक्ति पर प्रकाश डालते हुए इस महाकाव्य द्वारा इतिहास-बोध को जाग्रत करने में निभाई गई भूमिका की ओर भी ध्यान दिलाया है। उनका कहना है कि रासो में उक्त परिवर्तन-परिवर्द्धन बदलती ऐतिहासिक धारणाओं के अनुरूप हुआ है। प्राप्त प्रबंध संग्रह में छंदों की प्राचीनता, घटनाओं के विवरण, क्रम तथा सम्बद्ध पात्रों की ऐतिहासिकता, आइने अकबरी में प्रदर्शित रासो के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए रासो के विभिन्न क्षेत्रों में रासो के प्रसारकाल के भी निर्धारण का लेखक ने प्रयत्न किया है। लेखक ने पूर्व स्थापित इस मान्यता की पुष्टि की है कि लघु और लघुतम संस्करणों का सम्बन्ध बीकानेर और जयपुर से रहा है और मध्यम और वृहद संस्करणों में मेवाड़ की गौरव गाथा का प्रभाव है। रासो ने मेवाड़ और तद्नुसार भारत के इतिहास की कड़ी को बनाये रखने का काम किया है। रासो का इतिहास-बोध इतना सशक्त है कि उसने रामायण और महाभारत की भांति भारतीय संस्कृति तथा सभ्यता को अक्षुण्ण बनाये रखने का ऐतिहासक कार्य किया है। यह राजस्थान की परम्परा का मानदंड बनाये रखने और मुगल काल में राजस्थान के नरेशों में अपना सिर ऊंचा रखने में प्रेरणास्रोत रहा है।

सातवें अध्याय में लेखक ने समस्त गुण दोषों और वाद-विवादों से परिपूर्ण होते हुए भी रासो को हिन्दी का वृहत् महाकाव्य कहते हुए हिन्दी महाकाव्य का स्वरूप निश्चित् करने में इसे उपयोगी माना है तथा कहा है कि इस काव्य के आधार पर भारतीय इतिहास के एक अध्याय का विस्तृत परिचय मिलता है। रासो ने काव्य के क्षेत्र में विशेष वीरगाथात्मक प्रवृत्ति का परिचय देते हुए हिन्दी काव्य को नई परम्परा प्रदान की है। रासो के रचयिता के विषय में उनका अभिमत है कि वह काव्यशास्त्र से पूर्ण परिचित था और क्लासिक काव्यों से पूर्ण प्रभावित था।

ख्यातिलब्ध मूर्धन्य इतिहासकार डॉ० रघुवीरसिंहजी द्वारा लिखी गई विद्वत्तापूर्ण समाहरणात्मक प्रस्तावना ने इस पुस्तक में प्राण-संचार करने में अद्भुत योग दिया है। ग्रंथ लेखक डॉ० राजमल बोरा इस स्तुत्य प्रयास के लिये बधाई के पात्र हैं।

डॉ० ब्रजमोहन जावलिया
प्रभारी, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, उदयपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संस्थान का नवीनतम प्रकाशन

महाकवि रणछोड़ भट्ट प्रणीतम्

राजप्रशस्तिः महाकाव्यम्

सम्पादक—डॉ० मोतीलाल मेनारिया

यह विक्रम की अठाहरवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में महाकवि रणछोड़ भट्ट द्वारा संस्कृत भाषा में लिखा गया २४ सर्गों का ऐतिहासिक महाकाव्य है, जो प्रसिद्ध झील राजसमन्द के नोचौकी घाट पर २५ प्रस्तर शिलाओं पर उत्कीर्ण है। इस प्रकार यह भारत भर में सबसे बड़ा शिलालेख तथा शिलाओं पर खुदा हुआ सबसे बड़ा ऐतिहासिक महाकाव्य है।

इस महाकाव्य का मुख्य विषय मेवाड़ के महाराणा राजसिंह (वि० सं० १७०६–१७३७) का जीवन-चरित्र है। प्रथम पांच सर्गों में मेवाड़ का प्राचीन इतिहास भी दिया गया है। महाराणा राजसिंह के शासन प्रबन्ध एवं समकालीन ऐतिहासिक व सांस्कृतिक स्थितियों के अध्ययन की दृष्टि से ग्रन्थ अत्यन्त महत्त्वपूर्ण एवं संग्रहणीय है। संस्कृत भाषा व साहित्य की दृष्टि से भी ग्रन्थ का अपना विशिष्ट स्थान है।

ग्रन्थ के मूलपाठ के साथ-साथ हिन्दी में भावार्थ भी दिया गया है। प्रारम्भ में विस्तृत भूमिका व अन्त में परिशिष्ट ग्रन्थ की अन्य विशेषताएं हैं।

वर्तमान स्वरूप में ग्रन्थ का यह प्रथम प्रकाशन है।

पृष्ठ ३४२ मूल्य ४०) रुपये

प्राप्ति स्थान:—

साहित्य संस्थान, राजस्थान विद्यापीठ, उदयपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संस्थान के संग्रहणीय प्रकाशन

१	महाराणा प्रताप स्मृति ग्रन्थ	३०.००
२	Mewar Through the Ages	५.००
३	बगड़ावत लोकगाथा	७.५०
४	राजस्थान में हिन्दी के हस्तलिखित ग्रन्थों की खोज [चार भाग] ; [अप्राप्य]	१६.००
५	ओझा निबन्ध संग्रह [चार भाग] [स्व० गौ० ही० ओझा के सम्पूर्ण निबन्ध [अप्राप्य]	१७.००
६	पूर्व आधुनिक राजस्थान [अप्राप्य]	७.००
७	Selections from Banera Archives	८.००
८	पृथ्वीराज रासो [चार भाग] [अप्राप्य]	४०.००
९	पृथ्वीराज रासो की विवेचना	१५.००
१०	ब्रजराज काव्य माधुरी	८.००
११	प्राचीन राजस्थानी गीत [बारह भाग]	३२.५०
१२	राजस्थानी लोकगीत [छः भाग] [भाग ४ अप्राप्य]	१५.००
१३	राजस्थानी वातां [सात भाग] [भाग ५ अप्राप्य]	२१.५०
१४	राजस्थानी भीलों के लोक गीत [तीन भाग]	७.५०
१५	आदिनिवासी भील	२.५०
१६	आचार्य चाणक्य [नाटक]	४.५०
१७	राजस्थान दोहावली	२.५०
१८	राजप्रशस्तिः महाकाव्यम्	४०.००
१९	हाड़ौती का स्वतन्त्रता आन्दोलन	२२.००
२०	हंस तीर्थ [काव्य]	८.००
२१	हाड़ौती अंचल के राजस्थानी कवि	८.२५

मुद्रणाधीन

१ कहवाट सरवईया री वात
२ राजस्थानी भाषा
३ राणा रासो
४ Catalogues of Sanskrit Manuscripts
५ डिंगल गीतों की अनुक्रमणिका

प्राप्ति स्थान:—

साहित्य संस्थान, राजस्थान विद्यापीठ, उदयपुर

साहित्य संस्थान, राजस्थान विद्यापीठ, उदयपुर के लिये उमाशंकर शुक्ल, अध्यक्ष साहित्य संस्थान, राजस्थान विद्यापीठ, उदयपुर द्वारा प्रकाशित एवं नारायणलाल गुर्जरगौड़ द्वारा विद्यापीठ प्रेस में मुद्रित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शोध पत्रिका

वर्ष-२६
अङ्क ३-४

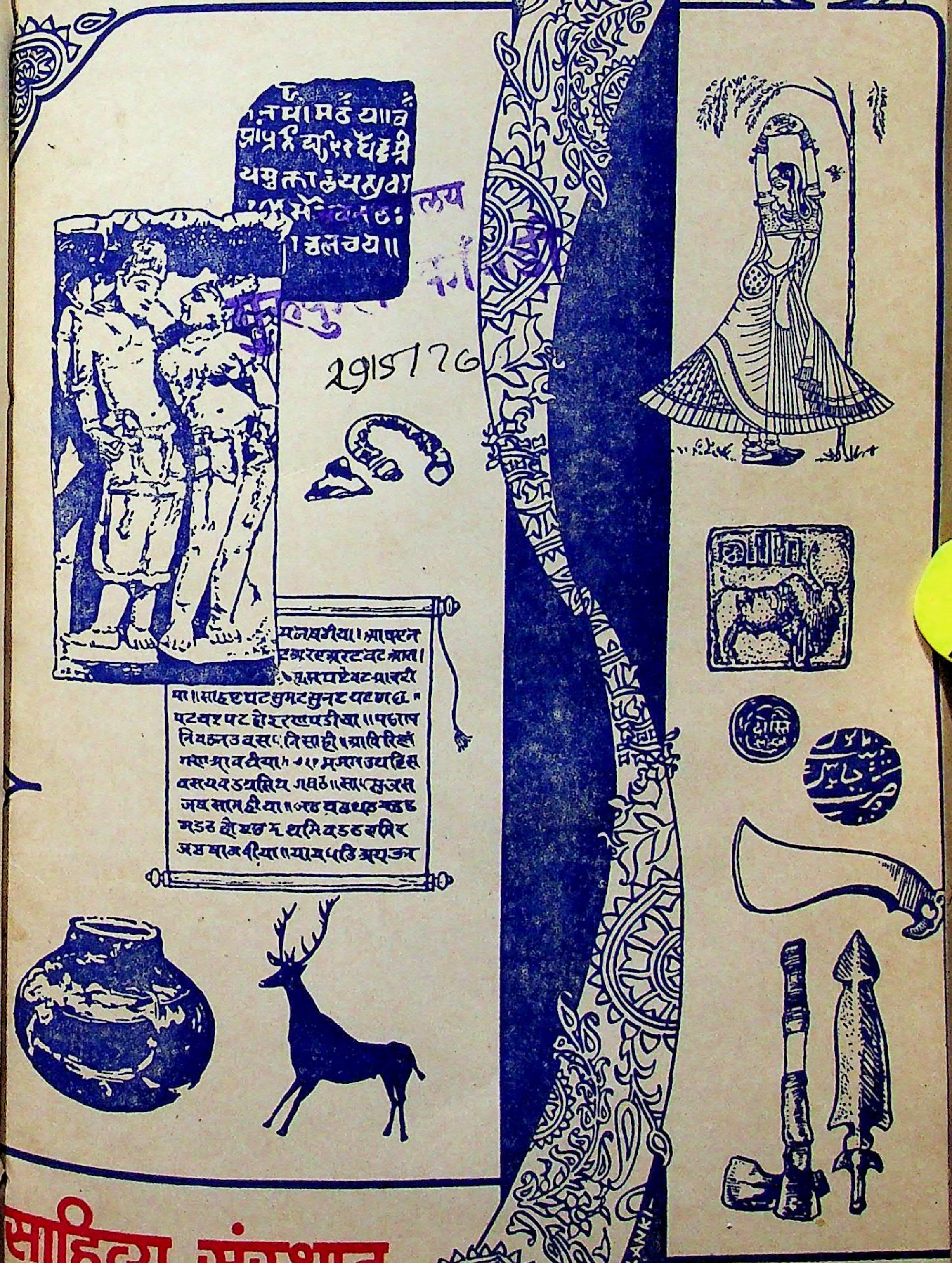

2915176

साहित्य संस्थान,
राजस्थान विद्यापीठ, उदयपुर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुरातन इतिहास, पुरातत्त्व, साहित्य,
भाषा, दर्शन, कला व संस्कृति की
त्रैमासिक अनुसंधानिका

परामर्शदाता
डॉ० रघुबीरसिंह
डॉ० दशरथ शर्मा
डॉ० मोतीलाल मेनारिया
श्री रत्नचन्द्र अग्रवाल
श्री अगरचन्द नाहटा

इस अङ्क का मूल्य : पांच रुपया

वार्षिक } देश में — दस रुपया
विदेश में-पन्द्रह रुपया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहवाट विलास

मूलपाठ

सम्पादक
सौभाग्यसिंह शेखावत   डॉ० देव कोठारी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शोध-पत्रिका

वर्ष २६, अंक ३-४

जुलाई-सितम्बर, १९७५

अक्टूबर-दिसम्बर, १९७५

राजस्थानी बात साहित्य विशेषांक

सम्पादक

डॉ० देवीलाल पालीवाल

प्रबन्ध-सम्पादक

उमाशंकर शुक्ल

साहित्य संस्थान, राजस्थान विद्यापीठ, उदयपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषयानुक्रम

१.	सम्पादकीय	—डॉ० देवीलाल पालीवाल	I–II
२.	कहवाट विलास मूलपाठ	—सौभाग्यसिंह शेखावत एवं —डॉ० देव कोठारी	१–८०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निदेशकीय..

प्राचीन राजस्थानी गद्य साहित्य की अब तक अप्रकाशित एक अत्यन्त मूल्यवान कृति 'कहवाट विलास' का प्रकाशन पाठकों के सन्मुख प्रस्तुत है। साहित्य संस्थान ने प्राचीन राजस्थानी साहित्य के प्रकाशन के अन्तर्गत राजस्थानी पद्य और गद्य विधाओं की कई रचनाएं प्रकाशित की है। राजस्थानी वात या बारता साहित्य की रचना-कहवाट विलास का प्रकाशन पूर्व प्रकाशित ग्रंथों की अगली कड़ी है।

प्राचीन राजस्थानी साहित्य पद्यात्मक रचनाओं का विपुल भंडार रहा है किन्तु राजस्थानी के गद्य साहित्य की परम्परा भी बहुत पुरानी एवं समृद्ध रही है, जिसका अध्ययन न केवल भाषा एवं साहित्य की दृष्टि से महत्वपूर्ण है बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक अध्ययन की दृष्टि से भी वह अत्यन्त मूल्यवान है। राजस्थानी का प्राचीन गद्य साहित्य कई स्वरूपों यथा–वात, वचनिका, दवावैत, पट्टे-परवाने आदि के रूप में मिलता है। राजस्थानी वात साहित्य की परम्परा काफी पुरानी है और प्रदेश भर में विभिन्न स्थानों पर उपलब्ध प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथों में राजस्थानी वात साहित्य की रचनाएं मिलती है। एक ही वात अलग–अलग हस्तलिखित ग्रन्थों में मिल जाती है, जिनमें भाषा, घटनाओं एवं वर्णन शैली का थोड़ा-बहुत अन्तर भी यत्र-तत्र देखने को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिलता है, किन्तु मूल कथानक सहित वात का स्वरूप एक समान होता है। अधिकांश राजस्थानी वातों का विषय ऐतिहासिक, अर्द्ध ऐतिहासिक, धार्मिक, पौराणिक अथवा सामाजिक होता है।

कहवाट विलास, जिसके कई हस्तलिखित ग्रन्थों में "कहवाट सरवहिया री बारता" अथवा "कहवाट सरवहिया री नै अनंतराय सांखला री वात" शीर्षक मिलते हैं, एक ऐतिहासिक स्वरूप की वात है। इसमें कोयलापुर पाटण के राजा अनंतराय सांखला द्वारा गिरनार के राजा कहवाट सरवहिया को धोखे से पकड़वाना, उसको लकड़ी के पिंजरे में बन्द कर भूंगड़े चुगाना तथा कहवाढ के भानजे ऊका द्वारा अनंतराय से बदला लेकर अपने मामा को छुड़ाना और अनंतराय को गिरफ्तार कर उसी पिंजड़े में बन्द करने की कथा है। अनंतराय और ऊका के मध्य हुए युद्ध का वर्णन अत्यन्त स्वाभाविक एवं सजीव बन पड़ा है। यह वात चम्पूशैली में लिखित है। भाषा सहज, सरल और लालित्य युक्त राजस्थानी है। इसको पढ़ने में वचनिका का सा आनन्द आता है।

इस ग्रंथ का सम्पादन साहित्य संस्थान के संग्रहालय के ग्रंथांक १४२ को आधार-प्रति बनाकर किया गया है। संस्थान ग्रथांक ३६८ में उपलब्ध इस वात की एक अन्य प्रति के पाठान्तर भी दे दिये गये हैं। पठन-सुविधा की दृष्टि से प्रत्येक पृष्ठ पर शब्दार्थ भी दिये गये हैं।

इस वात अथवा बारता का सम्पादन साहित्य संस्थान के भूतपूर्व शोध अधिकारी एवं सम्प्रति राजस्थानी शोध संस्थान, चौपासनी के सहायक निदेशक श्री सौभाग्यसिंह शेखावत तथा साहित्य संस्थान, रा० वि० के उप निदेशक डॉ० देव कोठारी ने किया है।

मैं आशा करता हूँ कि राजस्थानी बात साहित्य के इस प्रकाशन का सर्वत्र स्वागत होगा।

डॉ० देवीलाल पालीवाल
निदेशक, साहित्य संस्थान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहवाट विलास

।। अथ कहवाट सरवहिया री बारता लिखंते ।।[1]

दूहो

सुरसत माता सुमत दो, गवरी पुत्र गुणेस ।
करूणानिध कर जोड़कर, मांगूं बुद्धि महेस ।।

बारता

कोयलापुर पाटणनगर जठै अनंतराय सांखलो राज करै। जिको खुरसांण हिंदवांण दोनूं ही राह रै सिरै। कोयलापुर [पाटण] किसोयेक दरसावै। जिण नै देखियां थकां दूजो सहर दाय नहीं आवै।

दूहो

कोयलापुर पाटणनगर, सुरग जिसो सुखवास ।
अनंतराय राजस करै, खट रूत बारै मास ।।

बारता

सो राजा अनंतराय सिंघासण ऊपर बैठो किसोहेक निजर आवै। उण समै मांय देखियां थकां राव, राणा, राजा पण दसत खावै।

दूहो

परगह रूप नरादपत, बरणूं काय बसेस ।
जांणै केहर जूथ मै, नरहर रूप नरेस ।।

बारता

तिण राजा कनै रजपूत किसायेक रहै छै। [जीके जोम रा धापीया जगसिर उप्रवट ही बहै छै।] काळी रा बेवड़ा। सती रा नारेळ[2]। भावंता रा भावता।

पाठान्तर— १. अथ कैवाट सरबहीया अनंतराय सांखला री वात लिखयते।
२. सती री माळा।

शब्दार्थ—खुरसांण = खुरासान देश का निवासी, मुसलमान; राह = पंथ, धर्म; दाय = पसंद; सुरग=स्वर्ग; खट रूत=षड्ऋतु; दसत=दहसत, भय; परगह=परिग्रह; नरादपत = राजा, नराधिपति, ; केहर = केहरी, सिंह; जूथ = समूह; नरहर = नरहरि, नृसिंह; कनै = पास में; जोम = मद, गर्व, उमंग; धापीया = तृप्त; उप्रवट = उपरिवर्ती, विशिष्ट; काळी=पगली स्त्री; बेवड़ा=सिर के दो घड़े, कलश; भावंता=चाहने वालों; भावता = चहेते;

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अणभावंता रा नाटसाल। और राजा रा भाई बेटा अेक सो अेक किसायेक रजपूत कहावै। जिकै जाता काळ नै फैंट पकड़ वतळावै। [कोयलापुर मैं बसती हजार नीवे की छै।] और राजा री आंण समद बारै कोस च्यारसै मे फिरै छै। नै आप जिसा राव, राजा, रावळ सेवा करै छै। और समद री पैदास ऊपजै[1] घणी। सो आवै मिण, मांणक, पुखराज, इराकणी। जिण राजा रै सुमित्री सुजांणसाह। सो बुध रो सामंद मत रो अथाह। और सहर मांय सूं पिणीहार्‌यां पांणी भरण नै जावै छै। जिकै किसड़ीक नीजर आवै[2] छै।

सोरठो

पणघट नार अपार,[3] लाख लाख आवै लंगस ।
मानूं समद मंझार, हंस थके[4] अरु हालिया ।।

वारता

सो पिणीहार्‌यां पांणी भरे नै जावै छै। सो मनूं हंस रा बच्चा मोती चुगै नै थाका थका घरां आवै छै। इण भांत राजा अनंतरायजी री नै लोग री सोभा वण रही छै। सोभा तो इधकी छै पण कवेसुर तो संखेप मातर कहै छै। अेक दिन रै समाजोग राजा अनंतरायजी मनसोभो कीधो। नाव त्यारी करण रो हुकम दीधो। तरां हुकम सुणतां प्रवांण। दौड़िया चौपदार अप्रमांण। ठांम ठांम हेलो दियो। तरां हुकम हुयो। त्यारी ह्वै आवो सिरदार। सो हुकम[5] सुणतां प्रवांण। सकोई सिरदार त्यारी हुय ऊभा आंण। समसथ सिरदार सुणतांई त्यारी हुय आया। और चारण-भाट दूजा कव लोग त्यारी हुय आया। कंसूबल केसरिया साज बणाया। सूंधा अरगजा मैं गरक ह्वै मुजरो करण आया[6]। नाव मैं बिछायत इसी दरसावै छै। जिण नै देखियां थकां खीर समंद ही पिण लज खावै छै।

---

१. निराट, २. सोभा पावै, ३. पणघट पर पणिहार, ४. हंस घणा, ५. हेलो, ६. गरकाव होय हजुर आया।

नाटसाल = नटसाल, टीस, कसक; काळ = यमराज; फैंट पकड़ = बलपूर्वक रोककर; नीवे = नव्बे; आंण = आज्ञा, घोषणा; मिण = मणि; इराकणी = हीरे की कनी; बुध = बुद्धि; लंगस = समूह; हालिया = चले; थाका थका = थके हुए; इधकी = अधिक; कवेसुर = कवीश्वर; संखेप = संक्षेप; मातर = मात्र; समाजोग = समय-योग, देवात्; मनसोभो = मंसूबा, इरादा; तरां = तब; प्रवांण = तत्काल; चौपदार = चोबदार, छड़ीदार; अप्रमांण = अत्यधिक; हेलो = आवाज, पुकार; त्यारी ह्वै = सज कर; सकोई = सब कोई; समसथ = समस्त; कव लोग = कविगण; कंसूबल = कसूमल रंग; सूंधा = सुगंधित; अरगजा = उबटन, सुगंधित लेप; गरक = निमग्न, परिपूर्ण; लज = लज्जा;

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिकण बिछायत ऊपर सिंघासण बिछाय अनंतरायजी बिराजिया। और कनै बेटा भाई भतीजा तिकै पिण अधराजिया। तठै कवीजन लोग गुण गीत कहै नैं सभा में बैठा बिरदावै छै। और भगतणियां पातरियां नीरत कर कटाछ कर भाव बतावै छै। अर म्रदंग, दुकड़ा, सतार, तंबूर स्रब बाजां रो घणणाटो। घूघरां रो ठणणाटो। इसड़ोसोक समाज सोहै छै। सो मांनु नरपत तो राजी हुवैई हुवै पण सुरपत कोई मन मोवै छै।

सोरठा

बाजंत्र सोह बाजैह,[१]. भूप बिराजे कव भड़ां।
प्याला मद पाजेह, अनंतराय लागो उरस॥

कव कीरत कीजैह, रीझै नरपत रूपगां।[२]
द्रब लाखां दीजैह[३], अनंतराय लागो उरस॥

कवित्त

अनंतराय इण रीत, इधक बाजै अधपत्ती।
करै नार न्रतकार, करै कवियण कीरत्ती॥
सूलां सीक समाज, इधक मद धार अपारां।
करै राजा कैतूळ, भूल[४] भड़ थाट जिहारां॥[५]
कवियणां रीझ मदझर करै, सिरहर [नग] सिरताज रो।
दिणियर समांन जगसिर[६] दिपै, राज तेज महाराज रो॥

---

१. छक सोभा छाजेह। २. दीजे नृपति दांन इव। ३. लख मुख जस लीजेह। ४. गूळ। ५. जियारां। ६. जग पर।

जिकण=जिस; कनै=पास में; तिकै=वे; अधराजिया=शासक कुल के बड़े सरदार, बड़े जागीरदार; तठै=वहां; भगतणियां=वेश्याएं; पातरियां=गाने-नाचने का काम करने वाली जाति विशेष की स्त्रियां; नीरत=नृत्य; दुकड़ा=तबले; स्रब=सब, समस्त; घणणाटो=घनन की ध्वनि; ठणणाटो=ठनठनाहट; मोवै=मोहित हो जाता; पाजैह=पिलाते हुए; उरस=आकाश; रूपगां=स्तुति काव्य; सीक=लोह शलाकाओं पर सिका हुआ मांस; कैतूळ=कौतूहल; भूल=भूमते हैं, थाट=थट्ट, जिहारां=वैसे ही; कवियणां=कवियों को; रीझ=ईनाम, मदझर=हाथी; सिरहर=शिरोधर; दिणियर=सूर्य, दिनकर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बारता

इण भांत राजा अनंतरायजी विराजिया कैतुहळ करै छै। नै दुबारा तीबारा दारवां[1] रा प्याला फीरै छै। अतराक समाजोग मै पूरब रो पांवन बाजियो। जिणी सु दरियाव री गाज सुणे नै अनंतरायजी दोय च्यार[2] बार बरजियो। पिण ओ तो पांणी को सभाव छै सो गरजियो सो गरजियो'ई गरजियो।

कवित्त

पवन लहर उड़ पड़ी, गहर जळ नीध[3] गरज्यौ।
सुणें श्रवण सांखलै, बार दोय तीन बरज्यौ॥
उही नीर आगाध, बात तहि करी बिकट्टी।
अनंतराय उणवार, आग-झळ[4] रीस उपट्टी॥
हर ब्रंम सक्र हिक ओड़ हुय,[5] पकड़ करूं सह पाधरा।
कळ मांझ कवण बीजो करै, आज गाज मो ऊपरां॥

बारता

तरां अनंतरायजी कहै-हो ठाकरां, ओ समंद गाजै छै। सो मोनै नहीं पीछांणै छै। पण इण जळ री जायगां थळ करूं जद प्रथी जांणै।

कवित्त

अनंतराय उणवार, हुकम कीधो हुजदारां।
बूरो समंद अबार, जेज मत करो जोधारां॥
कव[6] गोरधन कयौ, आप इसड़ाइज ओपो।
रयत करो इत राव,[7] कांई जळ सिर इम कोपो॥

---

१. दारूवां २ आटवां री। ३. गहर तीह नीर। ३. अंग डल। ५. हर ब्रह्म समंद नृपति हुवै। ६. जद कवि। ७. अनिराव।

अतराक=इतने ही में; बाजियो=बहा; दरियाव=समुद्र; गाज=गर्जन, शौर; बरजियो=टोका,मना किया; गहर=गहरा, भयंकर; जळ नीध=समुद्र; सांखलै=अनंतराय; उही=वही; तहि=तभी; आग-झळ=अग्नि-ज्वाला; रीस=क्रोध; उपट्टी=बढ़ी; हर=महादेव; ब्रंम=ब्रह्मा; सक्र=इन्द्र; ओड़=पक्ष; पाधरा=सीधा; कळ=संसार; मांझ=में; कवण=कौन; तरां=तब; इण=इस; हुजदारां=सेवकों को; बूरो=पाट दो; अबार=अभी; जेज=विलंब; जोधारां=वीरों; इसड़ाइज=ऐसे ही; ओपो=शोभायमान होते हो; रयत=रियायत, इत=इधर; कांई=क्या।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काछ माछ सरण रहे जीव कै, मोताहळ निपजै माहीं।
औ करै गाज इण बात सूं, निध कौ इण सम बड़ नहीं॥

बारता

तरां महियारयो गोरधनजी अरज करी[1]–अन्नदाता, पांणी ऊपर अतरी रीस नहीं कीजै। अेक अरज हूं करूं सो सांभळ लीजै। इण नै बूरीयां थकां घणा जीव जंत मर जावसी। नै जिण रो पाप आवसी। हर इणां मै मोती नीपजै छै। जिणां री पैदास मिट जावसी। औ समद गाजै छै सो हगीगत कवित्त मै मालम कर कई। सो खावंदा सारी ही समझ लई। पिण इसी करो जिण रो कवी तो सुजस करै। और प्रथी ऊपरै अचड़[2] ऊबरै। बड़ा बड़ा राजा थांरा सीवाड़ी छै। जणां कना सूं डंड भरावो। हर सारां ही कना सूं सेवा करावौ। अणी बात सूं प्रथी ऊपरै आपरो सुजस हुवै।

आ बात तो गोवरधनजी री कही राजा री दाय आई। नाव पाछी पाटण नै चलाई।[3] नाव सूं उतर नै गढ़ मै आय दरबार कीधो। हर सुजांणसाह नै बुलाय लीधो। हर फौज-बंधीकरण रो हुकम दीधो। सो सुजांणसाह डेरा आय चोगड़द नै कागद लिख दीधो। तिणां कागद सूं सूरवीर खत्री लाख तीन भेळा हुवा। जिकै इण दूहां जिसड़ा छै—

दूहो

अड़ियां ज्यां जोधां अगां[4] जम ही बेमुख जाय।
काळ हूंत कुसती करै, खवां ठौर खीजाय॥

बारता

इण भांत राजपूत साथे लेनै सुजांणसाह चढतो हुवो। सो पाटण सूं खड़े नै डेरो समंद रै तीरै[5] दियो। और नौरंगपुर रो धणी रिड़मल जोइयो। जिण नै पकड़ण रो

---

१. तरे महीयारे ठाकुरां अरज गोवरधनजी कीधी, २. आच, ३. नै नाव पाटण बलाई, ४. अड़िया जीण जोधा अगै, ५. समंद बारै दीयौ।

काछ=कच्छप; माछ=मछलियां; कै=कई; मोताहळ=मोती; महीं=में; औ=यह; कौ=कोई; महियारयो=चारणों की एक शाखा–महियारिया; हूं=मैं; हर=और; हगीगत=वृत्तान्त; कई=कही, खावंदा=मालिक, स्वामी; लई=ली; अचड़=अचल; ऊबरै=बचै; सीवाड़ी=सीमावर्ती; दाय=पसंद; फौज-बंधी=सेना की तैयारी; चोगड़द=चारों ओर, खत्री=क्षत्रिय; भेळा=एकत्रित; ज्यां=जिन से; बेमुख=विमुख; काळ=यम; हूंत=से, खवां ठौर=कंधा ठोक कर, ललकार कर; खीजाय=खीज कर, कुपित होकर; खड़े नै=प्रस्थान कर; जोइयो=क्षत्रियों की एक शाखा विशेष;

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनसोबो कीधो। जिको रिड़मल जोइयो बडो दातारां सिरै।[१] कव-पंछयां रो प्राग वड़। खटबरन रो आधार। सो बाग-बगीचां मै गोठां करै हर माल उड़ावै छै। जिण सू कांई चारण-भाट मिल हर बेमुख नहीं जावै छै। सो उणरा देस सूं कोस बारा ऊपरा अनंतरायजी री फौज आय नै पड़ी। जिण दिसा हलकारां मालम करी।[2] पण इण रै तो माथै किणी रो बैर बाढ़ हुवै तो डरता रहै। साथ भेळो करै सो रिड़मल जोइयो पांच-पांच दिन गैर महलां हीज रहै। बारै ही मांय सूं नहीं आवै। इसी बातां[3] दिनं भर दिन हलकारा साह नूं पूंछावै।[4] सो अैसी खबर सुणे नै सुजांणसाह लाख अेक रजपूत बुलाया। फौज मांय सूं टाळ नै चलाया। सो रात पाछली रा [अमल मैं] नौरंगापुर सूं नजीक आया। सो पाछला वगत री घड़ी[5] आय लागी हर गजर बागी। जिण बखत री अनंतरायजी रा साथ री [गढ़ रै] नीसरण्या लागी।

कवित्त

दे नीसरण्यां दूठ, चढ़ं दइवांण[6] चलाया।
जाय अड़े[7] रिण जूट, धार सनमुख खगधाया।।
रीठ बाग रूकड़ा[8], उड़ै टूकड़ा[9] अपारां।
बरंग झाट बूकड़ा[10], मुण्ड रड़वड़ै खग मारां।।[11]
अड़वड़ पड़े आंतड़ां अवस, तड़ियल घायल तड़फड़ै।
झड़फड़ै ग्रीध गळलियण [जुध], जबर[12] सूर सामंत जुड़ै।।

---

१. सिरदार, २. हलकारां आय नै कहै, ३. भातां, ४. साह नै खबर पहुंचावै, ५. घड़ीयाल, ६. दबांण, ७. जाय पड़ै; ८. रीठ बाजै रुवड़ां, ९. उड़ै दुबड़ां, १०. वरंग काट ववडां, ११. मांग, १२. लखां।

दातारां सिरै=दानदाताओं का सिरमोर; कव-पंछ्या=कवि-रूपी पक्षियों के लिये; प्राग वड़=अक्षय वट; खटबरन=राजस्थान में ब्राह्मण, जोगी, जंगम, चारण, सन्यासी और यति इन छः जातियों के समूह को खटबरन अथवा षट्दर्शन कहते हैं। गोठां=दावतें; हर=और; हलकारां=हरकारे, दूत; बाढ़=बढ़ा हुआ; गैर महलां=महलों से बाहर; बारै=बाहर; पूंछावैं=पहुंचाता है; टाळ=छांट कर, चुनकर; गजर=घंटी; बागी=बजी; बखत=समय; नीसरण्या=सीढ़ियां; दूठ=मजबूत; दइवांण=विशालकाय, योद्धा; जूट=समूह; रीठ=बौछार; बाग=बजने से; रूकड़ा=तलवारें; बरंग=कवच; झाट=प्रहार, बूकड़ा=वृक्; रड़वड़ै=इधर-उधर लुढ़कते हैं; अड़वड़=आगे से आगे बढ़कर, अस्त-व्यस्त; आंतड़ां=आंतें, अवस=विवश; तड़ियल=बिजली सदृश; झड़फड़ै=झपटते हैं; गळलियण=मांस पिंड; जबर=जबर्दस्त; जुड़ै=भिड़ै।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बारता

इण भांत सूं पोहोर ग्रेक तरवार बागी[1]। कजियो निराठ ग्राछो कीनो। सूर सामंत काम ग्राया नै रिड़मल जोइया नै ढ़ालां री ग्रोट दे नै पकड़ लीनो। सो इण रीत सूं छळकर, बळकर, दावकर, जुधकर ग्रेक सौ ग्रेक राजां नै पकड़िया। नै जीत रा नगारा बजाया। नै सुजांणसाह पाछा पाटण नै चलाया[2] सो कतराक दिनां मै पाटण ग्राया। सो राजा ग्रनंतरायजी घणां हरख सूं सांमा जाय बधाय लाया। हर ग्रेक सौ ग्रेक राजां नै गारा रा ठीकरां मै पांणी पावै छै। जाजम ऊारै भूंगड़ा बीखेर नै मूंढ़ा सूं चुगावै छै। सो कोई राजा ईढ़ राखे नै माथो भाड़ै छै। जिणां रा ढूंगां ऊपर तीखी ग्रारां रा चपरका पाड़ै छै।

इण भांत सूं राजा वंदी खानै पड़िया दुख पावै छै। सो राजा ग्रनंतरायजी मदोग्रंध हुय रया छै। [पिण ग्रा वात श्री परमेस्वरजी नै तो नही सुहावे छै।] इण भाव रो दूहो ग्रागलो प्रस्तावु कवेसुर कहै छै--

दूहो

गरब ग्रहारी राम है[3], निगम कहत हैं च्यार।
फूल्यो सहै न फूल कूं[4], देत डार सूं[5] डार॥

बारता

ग्रंत[6] गरब को ग्राहार करबा वाळो श्रीनारायण[7] कहावै छै। सो ग्रा तो बात च्यार वेद गावै छै। फूल की कली तो पांच दिन रहावै। पण[8] फूल ऊघड़ै जद कै तो खिर पड़ै, का दूजो[9] तोड़ ले जावै। सो फूल ही की फूलणी परमेसुरजी नै नही सुहावै। सो ग्रो तो मिनख रो गरब कदी रहबा पावै। ग्रेक दिन रै समाजोग राजा ग्रनंतरायजी सिरदारां सहेत सिरै दरबार कीधो। हर भगतणियां, पातरियां, गावणीहारां नै[10] महोलो

---

१. बुही, २. पाटण नै खडीया, ३. गरवं ग्रहारि श्रीरमणे, ४. फूल नै सहत है फूल की, ५. डाल तै, ६. ग्ररथ, ७. ईस्वर, ८. हुंर, ९. कोई, १०. ग्राय नै।

कजियो=युद्ध; निराठ=बहुत; गारा=मिट्टी; ठीकरां=मिट्टी के बर्तन के टुकड़े; भूंगड़ा=सिके हुए चने; मूंढ़ा=मुंह; ईढ़=हठ; ढूंगां=नितम्ब, कूल्हे; ग्रारां=ग्रनी; चपरका=घाव; प्रस्तावु=प्रास्ताविक; निगम=वेद; फूल्यो=खिला हुग्रा; डार सूं=डाली से; डार=गिरा देता है; ऊघड़ै=खिले; खिर=गिर; फूलणी=फूलना; सिरै=खास, प्रमुख, महोलो=ग्रवसर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दीधो। इणी रीत सूं सिरै दरबार बैठां अनंतरायजी गुमांन भर मोटो वचन कहता हुवा। अेक सो अेक राजा तो म्हैं पकड़िया। अबै अनमी तो जमीं ऊपर राजा तो रयो नहीं। आ बात सुण नै गोरधनजी अरज करी-अन्नदाता, मोटा हुवै छै, जिके मोटो बचन[1] नहीं कवै छै। हर आ तो श्री परमेसुरजी री मांड छै। जिण रै मांहे[2] मोटा मोटा छत्री रहै छै। तरां राजा अनंतरायजी कही-जमीं ऊपर अनमी फेर छै, तो मोनै बतावो।[3] तरां गोरधनजी कही-अन्नदाता, हूँ तो मिलियो नहीं नै दूजां रा[4] मूंढ़ा सूं सांभळी[5] छै। उगमणी धरती रै बिखै गढ़ गिरनार छै, जठै राजा कहवाट सरवहियो राज करै छै। बड़ो दातार जूझार कवेसुर कहै छै-

सोरठो

पोहव[6] समदां पार, हाका जस नव नव[7] हुवै।
गढ़ सखरो गिरनार, करै राज कैवाट त्रप।

दूहा

रिण त्रंबक रूड़ता रहै, जुड़ता रहै जोधार।
कळ[8] मैं अघट कवाटसी, समहर सार अचार॥

थोगै नाहर थाहरां, घण[9] फौजां घमसार[10]।
सरवहियो[11] कैवाटसी, बाहै तेग बकार॥

बारता

सो साथ बारै अेकलो ही नीसरै नै नाहर नै बतलाय ने तरवार बावै छै।[12] सो नाहर को माथो बढ़े नै सिरोई रो बाढ़ जमीं मै जावै छै।[13]

---

१. जाब, २. उपरै, ३. कहो, ४. बीजा कवेसुरां रै, ५. मुढै सु जसे सांभलीयो, ६. सुजस, ७. नव खंड, ८. कळि, ९. घेरै १०. घंमार ११. सीर सींहां १२. नाह र री सीकार खेलवा जावै छै। सो साथ बारै निसर येकलो ही बतलाय तरवार मारे छै। १३ तुट.

गुमांन=अभिमान; अनमी=अनम्र, नहीं झुकने वाला, वली; मांड=सृष्टि; छत्री=क्षत्रिय; मोनै=मुझे; सांभली=सुनी; उगमणी धरती=पूर्व दिशा; बिखै=में, तरफ, ओर; पोहव=पृथ्वी; हाका जस=यश ध्वनि; सखरो=सुंदर; त्रंबक=नगाड़े; रूड़ता=बजते कळ=कलियुग; अघट=अनुपम, अद्भुत; समहर=समर, युद्ध; सार=तलवार; अचार=आचार, व्यवहार; थोगै=थाह लेना, टटोलना; नाहर=सिंह; थाहरां=गुफाओं में; घण=बहुत समूह; बाहै=चलाता है; तेग=तलवार, बकार=ललकार कर बढ़े=कट कर; सिरोई=सिरोही की बनी हुई तलवार; बाढ़=घाव, धार;

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूहो

श्रेकेलो[1] श्रावध कसै, पमंगां पाखर पूर।
सभ्के सिकार कवाटसी, सेल उथेलण सूर॥

वारता

वड़ा वड़ा गिर झिगरां[2] मैं सिकारां खेलै छै। सो श्रेकलगिड़ बाराह मार मार गिरनार रा बागां मै मेलै छै। सो बागां मै गोठ गजखांना करै छै। सोनारी सुरोई सूं फूल दारू का प्याला [उपरा उपरी] फिरै छै। इसी बात दूजां[3] कवेसरां रै मूंढै सुणी छै। सो राजा नै कही। सो श्रा बात राजा रा मन मांही माई नहीं। तरां राजा गोवरधनजी नै कही—श्रापां इसो मनसोबो उपावां। गिरनार का भेद की बात श्रठै[4] ही मंगवां। राजा बायक—[5]

सोरठो

गोवरधन गिरनार, महियार्‌या जावो महीं।
सारो भेद संचार,[6] श्रांण करो मोयूं श्ररज॥

वारता

दूहो सुणे'र गोरधनजी कहै छै—चारण, भाट हुवै छै, सो तो रजपूत की भूंडी[7] नहीं कहै छै। नै श्रसल रजपूत हुवै सो चारण री प्रतपाळ हीज करै छै। पण लूण री सरीगत[8] छै। सो श्रोड़ो तो नहीं देसू। [पिण] घटती–बढ़ती नहीं कह सूं। [लोक] देख सूं सो श्रांण[9] दरसाव सूं।

---

१. कसे सील्है, २. गीरां परबतां, ३: बीजां, ४. श्रछेत्र, ५. तरां राजा गोवरधनजी न कहै, ६. संभार, ७. वुंडी. ८. सरित, ९. श्राय।

श्रेकेलो=श्रकेला; श्रावध=श्रायुध; पमंगां=घोड़ों; सूर=शूकर; झिगरां=झाड़-झंखाड़; श्रेकलगिड़=वन में श्रकेला विचरण करने वाला सूश्रर; गजखांना=मदिरा के साथ लेने का चरपरा चर्वण; सुरोई=सुराही; फूल दारु=मदिरा की एक किस्म; माई=समाई; उपावां=उत्पन्न करें; महीं=में, श्रन्दर; संचार=संचित कर; श्रांण=श्राकर; भूंडी=बुरी; श्रसल=खानदानी; लूण=नमक, सरीगत=साझा, सम्बन्ध, श्रोड़ो=टाल-मटोल, टोकना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोरठो

भळ गढ़ आवूं भाळ, इधकी नह दाखूं[1] अनत ।
मो[2] कुळ लागै गाळ, देखूं सो दाखूं दुरस ।।[3]

बारता

इसी कहै नै मुजरो कर चढ नै चलाया । कतराक दिनां मैं [गढ़] गिरनार आया । गिरनार रा दरबार मैं [आय] गोरधनजी आसीस दीधी । नै राजा कहवाटजी ऊठनै ताजीम दीधी ।

सोरठो

गढ़ आयो गिरनार, पाटण सूं चारण प्रथम ।
जस कर कियो जवार, सुनमान्यो राजा सरस ।।

बारता

राजा कहवाटजी बूझता हुवा—

दूहो

किण धर सूं आया कहो, गढ़वी गढ़ गिरनार ।
कहो उठै राजा किसो, विलसै राजस वार ।।

बारता

तरां गोरधनजी कहै—

सोरठो

गढ़ पांटण मो गांम, अनंतराय रो ओळगू ।
निध तट सुणियो नाम, आयो हूँ राजा अठै ।।

---

१ भाखूं, २. गह, ३. देखस्यूं जीम केसूं दुरस ।

गाळ=गाली, कलंक, दाखूं=कहूं, दुरस=ठीक-ठीक; दुरुस्त, मुजरो=अभिवादन, धर=धरती, प्रदेश, ताजीम=सम्मान, जवार=जुहार, अभिबादन, सुनमान्यो=सम्मान किया, बूझता=पूछे, गढ़वी=चारण, ठाकुर, ओळगू=प्रशंसक, निध तट=सागर किनारे अठै=यह ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बारता

तरां कह्वाटजी कहै–थे कठै रहो। सो थारां देस रो, गांव रो हर राजा रो नांव कहो। तरां गोरधनजी कहै–कोयलापुर पाटण छै। जठै अनंतराय सांखलो [राजा] राज करै छै। तिण री समंद रै बारै कोस च्यार सै[1] मैं आंण फिरै छै। अतरी बात करे नै डेरां नै सीख कीधी[2] नै पछै आंनै बिदा करण री तजबीज कीधी। और परभात रा गोरधनजी दरबार आया। आंनै देबा [कै] वासतै कड़ा, मोती, हाथी, घोड़ा मंगाया और कह्वाटजी सिरपाव आभूखण सहेत उतार दीधो। [हर] तोसखांना सूं पाग मंगाबा को हुकम दीधो। तरां गोरधनजी कहै–महाराज, इसी कांई फरमावो। पाग बिना तो सिरपाव [सारोही] अलूणो कहावै। तरां कह्वाटजी कहै–थे चारण छो। दावै जठै ही जावो। हर रजपूत [का बेटा] सूं मिलो। हर सीस नमावो। आसीस देवो। हूं छूं अनमी सो माथो नहीं नमाऊं। इण वासतै थांरै तोसाखांना सूं दूजी पाग मंगाऊं। तरां गोरधनजी कहै–

दूहो

प्रथम आंण आई पढूं, बळे आंण व्रजराज।[3]
पोह्व राज री पाग हूँ, हूँ न नमूं महराज॥[4]

बारता

इसा वचन गोरधनजी रा [राजा] सुणै नै माथा री पाग [उतार नै] दीधी। विदा कीधा। और हाथी, घोड़ा, कड़ा, मोती, सिरोपाव, रूपिया दीधा। तरां गोरधनजी कहै–

सोरठो

हाथी बिडंग हजार, जवहर खग मोती जरु।
गढ़वा नै गिरनार, करी रीझ कह्वाट नृप॥

---

१. तिण री कोस च्यारस मैं समंद बारे, २. दीधी, ३. भजराज, ४. पाग सीस मो रहे प्रगट, जीनु सभुं नहीं सुभराज।

कठै=कहां, जठै=जहां; आंण=दुहाई; तजबीज=निर्णय, प्रबंध; देबा=देने; सिरपाव=सिरोपाव, खिलअत; तोसाखांना=भण्डागार, वस्त्रादि रखने का स्थान; अलूणो=शोभा रहित; दावै जठै ही=हर कहीं, इच्छानुसार; आई=आई माता, आवड़देवी, चारणों की एक देवी विशेष; बळे=फिर; पोह्व=राजा; राज री=आपकी; बिडंग=घोड़े; जवहर=जवाहिरात; खग=तलवार; जरु=जड़ित; रीझ=कृपा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बारता

इण भांत[1] विदा होय कितराक दिनां मै पाटण आया। अनंतरायजी सुणे नै दरबार मै बुलाया।[2] सो गोरधनजी पाग तो उतार नै हाथ मै लीधी। पछै राजा अनंतरायजी नै आसीस दीधी। तरां अनंतरायजी कही-पाग उतारण रो कांहो विचार। [जदी] गोरधनजी कही-कहवाटजी अनवी छै। नहीं नमै। जिण सूं पाग उतार हाथ मै लीवी छै। जरां अनंतरायजी रीस मै भाय कहता[3] हुवा—

सोरठो

आखो कत ऊचार,[4] स्रवणां म्हैं ही सांभळा।
गढ़ किसड़ो गिरनार, किसड़ो राव[5] कवाटड़ो॥

बारता

जरां गोरधनजी कहवाट नै देख्यो। गढ़ नै रजपूतां नै देखिया ज्यांरो मुदो कहै छै[6] —

दूहो

खोटी झंगी खोहळा, तठै नहीं जुध-ताळ।
डूंगर ऊपर गढ़ दिपै, बादळ[7] ज्यूं बरसाळ॥

बारता

इसड़ो तो गढ़[8] छै। इसड़ो राजा[9] छै।

सोरठा

नर अनमी[10] नरपाल, अनंतराय दीठा[11] अनंत।
भू मंडळ भूपाल, कोय नहीं कहवाट सो॥

---

१. रीत सूं, २. सो यांने आया सुण नै अनंतरायजी तुरत बुलाया, ३. बूझता, ४. उबार, ५. नृप, ६. गढ़ देख्यो रजपूता नै देख्या जीण रो जुदो-जुदो विवरो कहे छै; ७. बाळद, ८ राजा, ९. गढ, १० नर अनि अनि, ११. देख्या।

कांही=क्या; अनवी=अनम्र; रीस=क्रोध; आखो=कहो; कत=कार्य, कीर्ति; उचार=उच्चारित करो, वर्णन करो; स्रवणां=कानों से; मुदे=आशय; झंगी=झाड़ झंखाड़ युक्त; खोहळा=गुफाएं, घाटियां; जुध-ताळ=युद्ध स्थान; मौका; दिपै=प्रदीप्त बरसाळ=वर्षा ऋतु;

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भांज्या तै भूपाळ; बसुदा मैं राजा बिहद।
नमै नहीं[1] नरपाळ, करड़ै खंध कहवाट सी॥

परत न फेरै पूठ, अंग पोरस दीठो इसो।
आवै जमपत[2] ऊठ, करै राड़[3] कहवाट सी॥

भांज्या सोह भूपाळ, अनंतराय आगै अडर।
नमै नहीं नरपाळ, करड़ो राव[4] कवाट सी॥

सुजस समंदां पार, हाका नित[5] नो खंड हुवै।
गढ़ सखरो गिरनार, करै राज कहवाट न्रप॥[6]

दोहा

गढ़ ढाहण बाहण खगां, हाथ्यां दैण हमल्ल।
जुध जीपण भांजण खळां, अइयो भीच अचल्ल॥[7]

बारता

इसड़ो तो राजा छै। इसड़ा रजपूत रहै छै।

असमर बाहै चढ़[8] उरस, जमां उखेड़ण[9] जाड़।
इसड़ा तो खावंद अचळ, इसड़ा भड़ अवनाड़॥

बारता

[गोरधनजी कहै]–राजा कहवाट [इसो] संकर की सोभा पावै। कनै रजपूत[10] बीरभद्र गण सा निजर आवै। आ सुणे[11] नै अनंतरायजी नै रोस आयो। सो

---

१. न्है मांनैं, २. जम नृप, ३. जंग, ४. नृप, ५. जस, ६. कहवाट सी, ७. यह वो भींव अचल, ८. बढ़ि ९. उखेड़ै, १० कनै सीरदार छै सो, ११. सुणता प्रमाण

तै=तूने; बसुदा=वसुधा; बिहद=बेहद, असीम; करड़ै=मजबूत; खंध=स्कंध, कंधे; परत=परन्तु; जमपत=यमराज; राड़=युद्ध, लड़ाई; सोह=सब; अडर=निडर; सखरो=सुंदर, श्रेष्ठ; ढाहण=गिराने वाला; बाहण=चलाने वाला; हमल्ल=हमला, प्रहार; जीपण=जीतने वाला; भीच=बहादुर; अचल्ल=अटल; इसड़ो=ऐसा; असमर=तलवार; उरस=छाती; जमां=यमराज, जाड़=दाढ़; खावंद=स्वामी; अवनाड़=अनम्र।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानूं सूता नाहर[1] नै छेड़कर जगायो। तरां गोरधनजी कहै–अन्नदाता, अतरो कोप तो नहीं कीजै। [हर] किलो भांजवा[2] रो मनसोबो ठाकुर लोगां नै बूझीजै। और गिरनार म्है देखी छै। लड़ियां तो हाथ [कीही रीत] नहीं आवै। सारी सभा नै बूझो जोई मतो उपावै।[3] अनंतरायजी [सारां] सिरदारां नै बूझै छै–

सोरठा

सला[4] करो सिरदार, इम बोलै राजा अनंत।
गढ़ भांनू गिरनार, किम आंणू कहवाट सी॥

जुध कर मांनू जाय, इसड़ो तो ऊही नहीं।
आवै कवण उपाय, पाटण गढ़ री पाखती॥

बारता

तरां अनंतरायजी रो बचन सुणे नै सुजांणसाह कहै[5]–जुध करबा को तो नहीं कीजै बिचार। और म्हांरी अरज सांभळजै सिरदार–

दूहो

बिणजारो हुय पोट ले, देवूं न कवडी डांण[6]।
ग्रह लाऊं गिरनार पत, तो हूँ साह सुजांण॥

सोरठो

लाखां बाळद लार, बुसतां दो[7] चोखो बिहद।
गढ़ जावूं गिरनार, सरवहियो लाऊं सहज॥

बारता

अन्नदाता, बाळद मैं घणी चोखी[8] चीजां भरे नै ले जाऊं। तिके कहवाटजी री निजर कर अनेक वुध सूं ले आऊं[9]। इसी कही नै गिरनार नै सीख[10] कीधी। [हर]

---

१. काळ, २ भानबा, ३. सारी सभा नै बुभीजै। सो काइ मनसोबो उपवै, ४. सल्ह, ५. बोलीयो, ६. जाउ नै दे मुभांण, ७. बो. ८. आछी, ९. कैवाटजी री नीजर करि अनेक बुध करि भोलाय ले आस्युं, १०. साखत।

बूझीजै=पूछिये; म्है=मैंने; सला=सलाह; भांनू=तोड़ूं; ऊही=वह; पाखती=पार्श्व में; पोट=खेप, बोझ; कवडी=कोड़ी; डांण=महसूल; ग्रह=पकड़ कर; बाळद=टांडा, माल लदे हुए बैलों का समूह; लार=साथ में; बुसतां=वस्तुएं; चोखी=अच्छी; घणी=बहुत; बुध=विधि, प्रकार; सीख=विदाई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घोड़ा दोय जळहर, ढाल ग्रेक गैंडा री साथे लीधी। घोड़ा री तो ग्रा पारख छै—पांणी ऊपर दस बीस कोस तीर जावै। नै ढाल री ग्रा पारख गोळी री लागां रंग री चीटक ही न उडबा पावै। कतराक दिन तो गैला मै रयो। दिन बीस पचीस मैं गिरनार गियो। बाळद तो गढ़ री तळैटी ढाळ दीधी। [नै] चबूतरां का ग्रादम्यां [प्राय] डांण री ताकीद कीधी। म्हांरो डांण उरो दीरावो। ग्रौर म्हांनै नहीं दीरावो तो हाकम कनै ग्रावो। [तरां] सुजांणसाई कहै—

दूहो

डांण न कवडी ग्रेक दयूं,[१] बळे न ग्राऊं बाट।
बसतां चोखी हद बिहद, करसूं निजर कवाट॥

बारत।

थे कहे तो सारी ही बात सही पण हूं डांण देऊं [जि]सो बिणजारो नहीं। हूं तो च्यार महीनां चौमासै ग्रठै हीज रहसूं। ग्रौर दरबार सूं मिलसूं[२] फुरमावसी सो माथै[3] चढाय लेव सूं। इसा समाचार सुणै नै डांणी [तो] चबूतरै ग्राया। साह सुजांण च्यार महीना री छात्रणी रा डेरा दिरवाया।[4] ग्रौर रात रै बखत तो साह भगतणियां रो नाच करावै। बड़ी फजर रा घोड़ा[5] फेरावै। इसा हंगाम मै बिरखा रुत तो बिहाई हर सरद रुत ग्राई।

जरां[6] कहवाटजी फुरमायो- श्रीदेवीजी री पूजा रो सराजांम करो, दसरावो ग्रायो। ग्रौर भाई-बेटा, कव लोग,[7] ठाकर लोगां नै कागद लिख बळावो। तिण मै लिखो-देवीजी रै दसरावा री गोठ ऊपर सताब ग्रावो।[8] तरां भाट मांगळ कहै-महाराजाधिराजु [हिंदवा सुरज यक] ग्ररज हूं करुं सो सांभळजै हजूर। इण गोठ ऊपर

---

१ कोडी येक नै थांनै देउं, २. दरबार मीलया पछै, ३. सीस, ४. करवाया, ५ बडी फजर की बखत साह घोड़ा, ६. तरां, ७. कविजन लोगां, ८. तीण मै लिखो देवीजी री पूजा छै। दसरावा री गोठि ऊपरै सीताबी ग्रावो।

जळहर=घोड़े की एक जाति; पारख=पहचान; चीटक=पपड़ी, टुकड़ा; गैला=रास्ता; तलैटी=तलहटी; ढाल दीधी=उतार दी; चबूतरा=चौकी, चुंगी नाका; डांण=कर, दांण, महसूल, चुंगी; ताकीद=दबाव युक्त ग्रनुरोध, उरो=एक ग्रव्यय जो ग्रटकी हुई क्रिया को पूरी करने पर दबाव डालता है। बळे न=फिर नहीं; बाट=रास्ता; [जि]सो =जैसा, उस तरह का; ग्रठै हीज=यहां ही, डांणी=कर वसूल करने वाले ग्रधिकारी, छावणी=डेरा, पड़ाव; दिरवाया=दिया; बखत=समय; फजर=ब्रह्म मुहूर्त, तड़के; हंगाम=ग्रानन्दोल्लास, बिरखा=वर्षा; रुत=ऋतु; बिहाई=बिताई; सराजांम=प्रबन्ध; सताब=शीघ्र;

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तारापुर पाटण सूं भांणेज ऊकोजी आवै तो सारोई हंगाम दूणो दरसावै।[1] महाराज ऊको छै [इसो] जलाहळ रजपूत। [सो] समंद ऊपरै गैलो हुवै तो करै लंक लेण रो सूत। मांगळ कहै–

दूहा

तारापुर पाटण नगर, गढ़ ऊका रो गांव।
रीझ जवाहर बगसवै, नव खंड पुहुतो नांव ॥[2]

दाता सूरो जोमरद, रिण बंको[3] तरवार।
दन रीझां नव नव दिये, सुजस समंदा पार ॥

बारता

श्रै दूहा सुण [न घणा] खुसी होय फुरमायो–धणी मनवार दे नै भांणेज ऊकाजी नै कागद लिखायो–

दूहो

मनवारचां अत हेत मै,[4] निवरा लिखे निराट।
भांणेजो लावण बगां[5] कागद दियो केवाट ॥

बारता

इसो कागद लिख कासीद [के हाथ दे] चलाया सो कितराक दिनां मै तारापुर [पाटण] आया। कासीद कागद खवास नै दीधो।[6] [हर] खवास[7] जाय ऊकाजी री निजर कीधो। [तिको] कागद [रां] समाचार–

---

१. सारा ही हंगामै। हंगाम दूणो दरसावै, २. रीझां करेज राठवड़, नव खंड पूगो नांम। ३. वांको, ४. मनवारचा अति हित मही, ५. भलां, ६. सो कासीद कागद कवास के हाथ दीयो, ७. कवास,

---

सारोई=सम्पूर्ण; जलाहळ=तेजस्वी; सूत=सूत्र, योजना; जवाहर=जवाहिरात; बगसवै=बख्शिश, ईनाम देता है; पुहुतो=पहुंचा; सूरो=शूरबीर; जोमरद=जवांमर्द; मनवार्या=मनुहार; अत=अति, हेत=स्नेह; निवरा=अति आग्रह; निराट=बहुत; लावण=लाने के लिये, बुलाने के लिये; बगां=शीघ्र; कासीद=पत्रवाहक, संदेशवाहक, खवास=राजा का निजी और विश्वासपात्र सेवक; निजर=प्रस्तुत किया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूहा

कागद बांचे आप[1] कर, जिण मैं[2] लिखे जुहार।
आजे पूजा ऊपरै, साथ लेर सिरदार॥

सर फूल्या पंकज सरस, रित चोखी रिझवार।
ऊका दसमी आव जो, गोठ करां गिरनार॥

वारता

इसो कागद बांच [घणा] खुशी होय कासीद नै [तो] सीख दीधी। हर आरका चढ़वा की ताकीद कीधी। हजार बीस तो रजपूत टाळवा साथे लिराया।[3] सो सिलह करे नै[4] हजूर आया। गढ़ री नै देस री भलांवण भाई सादूळ नै दीधी और पांच[5] हजार घोड़ां री[6] गाढ़ी मजबूती कीधी। और[7] समाचार रावळा मैं राणी गहलोतणी सुणिया, सो कागद नाजर रै[8] हात दे'र हजूर मैं खिनायो।[9]

दूहो

पिव चालण प्यारी सुण्यो, अंग इसो अकुळाय।
ज्यूं मछळी जळ बायरी[10], तड़फ तड़फ जी जाय॥[11]

सोरठो

नीर झरण नैणांह[12], सयणां बिण आवै सरस।
रात दिनां रहणांह[13], मयणां बांणां[14] मारसी॥

दूहो

पीया[15] बिण लागै प्रगट, अत खारा आवास।
जीव हमारा जळ मरै, पिव प्यारा नहं पास॥

---

१. आय कर, २. मझि, ३. साथे तयारी कराया, ४. सो सीलहै मैं पूर होय, ५. पचास, ६. घोड़ा राखि, ७. इसा, ८. कै, ९. हजूर मै समाचार कहाया, १०. बाहरी, ११. तळफ तळफ जीव जाय, १२. नीर धार नयणेह, १३. राजद बिन रयणेह, १४. बांणां जु, १५. प्यारा।

जुहार=प्रणाम; सर=सरोवर; दसमी=दशहरे पर, टाळवा=चुनिन्दा; सिलह=हथियार-बन्द; भळावण=देख-भाल का दायित्व; गाढ़ी=बहुत; दृढ़; रावळा=अंतःपुर; नाजर=नाज़िर, अंतःपुर की मुख्य परिचारिका; खिनाया=भेजा; बायरी=बाहर, बिना; सयणां=साजन; मयणा=कामदेव; खारा=अप्रिय; आवास=महल।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बारता

इसो कागद बाचे'र ऊकैजी मन मैं विचार नै कयो-रावळा मैं त्यारी करावो। गिरनार तो सांवण्यां सहैत नांनेरै जावां जिण रो अटकाव नहीं ।[१] महाडोळ मैं बैठांण नैं फौज मैं लावो ।[2] आ बात तो ठीक छै। थांने ही लारै लेस्यां। हर गिरनार जावां छां जो उठै पांच दिन ज्यादा ही रहस्यां।

औ समाचार नाजर राणी नै समळाया। सो सुणतां प्रवांण असवारी कर फौज मैं आया। अेक रात तो राणी सहेत[3] डेरां सुख कीधो। बड़ी[4] फजर कै वगत कूच को नगारो दीधो। असवारी कर चढै नै चलाया। [सो] कितराक दिनां मैं कूच दर कूच गिरनार [नैडा] आया। [सो] आंरी असवारी देखरा नै सहर का लोग हवेल्यां चढिया। सो[5] घोड़ां रा खुरां सूं रेत रा गैतूळ असमांन नै उड़िया।[6] तिको देखे नै मांगळ कहै[7]-

दूहो

तारापुर पाटण तणा, लै सारा भड़ लार।
बैर उधारा बालणो, गढ़ आयो गिरनार ॥

बारता

इण भांत सूं गिरनार नैड़ा आया। जद वधाईदारां बधाई देण नै दौड़ आया। बधाई सुणै नै [राजा कैवाट] ऊकाजी रै सामां जावण री त्यारी[8] कीधी।

कवित्त

बजे तास आरबां, धूरै त्रमंगल घाई।
सज हाथ्यां सणगार, भूल बादल जरदाई ॥

---

१ गिरनार तो समांण सांजवां जीण रो तो अटकावा ही नांही और रावरा मांहि जाय तयारी करावो, २. फोज मै सतात्री आवो, ३. सूदां, ४. नै, ५. हर, ६. रेत रा दगुल आकास जाय अडीया, ७. तिको देख नै मांगल वाट कैवाटजी नै कह छै, ८. ताकीद।

सांवण्यां=राजपूत महिलाओं का प्रतिष्ठा-सूचक सम्बोधन, रानियों के साथ, नांनेरै=ननिहाल; महाडोल=पालकी; अटकाव=रोक, बाधा; लारै=साथ में; आंरी=इनकी; गैतूळ=बवण्डर, आंधी; वालणो=प्रतिशोध लेने वाला; नैड़ा=निकट; तास=कांसी या पीतल से बना एक वाद्य विशेष, जो संख्या में दो होते हैं; आरबां=चमड़े से मढ़ा हुआ एक वाद्य जो गले में डाल कर दो पतली कमचियों से बजाया जाता है। (तास आरबां=अड़वी तासा); धूरै=नगाड़ों की ध्वनि; त्रमंगल=नगाड़े; घाई=चोट; बादल=बादले रंग का; जरदाई=पीले रंग का;

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सहड़ां करि पोसाख, अड़ा-भीड़ असवारां ।
कड़ा मोति किलंगियां, झलम[1] पुखराज जुवारां ।।

हूँकळ-कळहळ जांगड़ हुवै, साद नकीब सुहावियो ।
कैवाट मिलण ऊका कजै, इंद्र घटा बण आवियो ।।[2]

वारता

इण भांत सूं हाथियां सूं उतरे नै मांमो भाणेज मिलिया। हर पोतदारां नै हुकम दियो सो आगरासाई[3] अमल गळावो।[4] नै गळा मै गळबांया घालेर पावै छै। हर अमल पीवीजै छै।[5] अतरा समाजोग मै रावळा मांय सूं बड़ारणियां[6] ऊकाजी नै कलस वंदावा नै आई। सो किसीहीक निज़र आवै छै। ज्यां नै देखयां [थकां] मुनेवरां रो मन सम्ता नहीं पावै छै-

दूहो

कळस वंदावा[7] नीसरी, नवळ सुरंगी नार।
दास्यां पदमण ज्यूं दिपै, गढ़ पूंगळ गिरनार ।।

वारता

दास्यां गावणा गावती[8] गढ़ सूं उतरी किसीक दरसावै,[9] सो किरत्यां को सो झूमको[10], लालां को[11] सो लूमको निजर आवै। [किनां] हूंमां को सो टोळो- कना अपछरां को हबोळो निजर आवै। इसा हरकां सूं कळस वंदावै छै। नै गीत बधावां गावै

---

१. जलळ, २. जांगि इंद्र घटा चढ़ि आवीयो, ३. आगराई, ४. गलीया, ५. गैला मै गलवाही घाली ने अमल दीजै छै। घनी मनवारां करै पानै छकपीजै छ। ६. गावण्यां, ७. बंदावण, ८. दास्यां गावण्यां, ९. किसीहेक सोभा पावै, १० लुबको, ११. किनां लाला रो।

सहड़ां=वीर,योद्धा; अडा-भीड़=जमघट; झलम=झिलमिल, चमक; जुवारां=जवाहिरात; हूंकळ=हाथियों की चिंघाड़; कळहळ=कोलाहल; जांगड़=ढोली; साद=शब्द, आवाज; नकीब=चोबदार; पोतदारां=खजाञ्चियों; आगरासाई=आगरे की; अमल=अफीम; गळबायां=गले में हाथ (प्रेम प्रदर्शित करते हुए); घालेर=डाल कर; बड़ारणियां=दासियां; किरत्यां=कृत्तिका नक्षत्र; झूमको=गुच्छा; लूमको=गुच्छा; टोळो=समूह; कना=अथवा; हबोळो=स्वर-लहरी; हरकां=हर्ष।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छै। ऊकैजी मोहोरां सूं कळस भरे नै डावडयां[1] नै सीख दीधी। [नै] पाछां सूं दोनूं राजा असवारी कीधी। हाथी चढे नै चलाया। मनूं उरस सूं उतरै नै दोनूं ही इंद्र आया। इण रीत गढ़ ऊपर आया। नै ऊकाजी रा साथ नै डेरो दीधो। [अर] दोनूं राजां सिरै दरबार कीधो।

कवित्त

बणे बिछायत बेस[2], जरी मुखमल जरबाबां।
गोड़[3] तक्या गींदवा, गरक छड़काव गुलाबां॥
उड़ै रंग कैतूळ, जोड़ बैठा जिणबांरां।[4]
बण निछरावळ बेस, हुये द्रब खरच हजारां॥[5]

हरख हुलास आनंद हुय, गांयण मंगळ गाविया।
उण समै त्रपत लागै इसा, दोनूं[6] इंद्र दरसाविया॥

बारता

इण भांत सूं मिजलस होय रही छै।[7] मांतू अफीण की बाड़ो कना केसर की क्यारी फूल रही छै। अतरा समाजोग मैं बाळद मांय सूं बिणजारो [साह] आयो। दरवांन मालम करी'र मांय बुलायो। सो सुजांणसाह [आंण] सिलाम कीधी। राजा कछवाटजी निजर सूं ताजीम दीधी–

सोरठा

गयो साह दरगांह, लटको कर पावां लगो।
मिण मांणक[8] मुकताह, कीधा निजर कवाट री॥

---

१. गावण्यां, २. वीच, ३. गादी, ४. उडै रंग रा गैतुल, भूल सहोड़ां जोधारां। ५. उको अन कैवाट, जोठ बठा जीणवारां, ६. जांणे दोय, ७. मिजलस री सोभा बणि रही छै। ८. मांणिक नग।

डावडयां=दासियां; उरस=आकास, जरबावां=सोने-चांदी के तारों से बना जरी का कपड़ा; गोड़=पास में, गींदवा=छोटा गोल तकिया; गरक=डूबा हुआ; कैतुळ=पताका, हर्षोल्लास; रंग कैतूल=आनन्द का कौतुहल, जिणबांरा=जिस समय, निछरावळ=निछावर, मिजलस=सभा, अफीण=अफीम, कना=किंवा, पास में; दरगांह=राजसभा, दरबार, लटको कर=झुककर, विशेष हाव-भाव द्वारा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खाग सेल खंजरांह, हीरां मै जड़िया बिहद ।[1]
नवी नवी निजरांह, करे साह कहवाट री ।

वारता

ढ़ाल अेक असल गैंडा री नजर कीनी । सो सारांई सरदारां देखतां देखतां ऊकैंजी हात मै लीनी । तरां ऊकैंजी [सुजाण] साह मै पूछयो-ढ़ाल[2] रो मोल छै कांही ? [तरां] सुजांणसाह कयो—[माहाराज] ओ तो जीव रो रखो छै । इण रो तो मोल हीज नहीं । [फैरू] सुजांणसाह कहै—

दूहो

कई कटार कवांणिया,[3] कई कवांण[4] करद्द ।
गोळी लग पाछी गुड़ै, फूटै नहीं परद्द[5] ॥

वारता

ओ[6] बचन सुण ऊकैंजी कही-आ तो पारख लेस्यां । ढाल रो नीसांणो कर गोळी की तो अलबत्त ही देस्यां । सो ढाल रो नीसाणो कर गोळी री दिराई । गोळी लागी जठा सूं रग री चीड़क[7] ही उड़बा न पाई । तरां ऊकैंजी ढाल हाथ मै ले नै मांमाजी सूं मुजरो कर लीनो । [तरां] कहवाटजी कहै—

सोरठो

मांमा हंदो माल, हरख करे लोछो हमै[8] ।
ताळी दहुं[9] कर-ताल, अेक न बागै ऊकड़ा ॥

---

१. हीर जड़ै मधि हेम मद, २. इण, ३. कुवागीयो, ४. कैवाण, ५. फरद्द. ६. इस्रो, ७. चीटकी, ८. हरख रल्यो छो हात सुं, ९. द्वै ।

सेल=भाले; खंजरांह=खंजर, तलवारें; निजरांह=भेंट; सारांई=समस्त; रखो=रक्षक; हीज=ही, फैरू=पुन; कवांणिया=धनुष; करद्द=तलवार; गुड़ै=लुढ़कती है; परद्द=परत, ऊपर की तह; आ तो=इसकी तो; पारख=परीक्षा; अलबत्त=अवश्य; चीड़क=चमक; हंदो=का; लोछो=लेते हो; हमै=अभी; कर-ताल=हथेलियों; बागै=बजती है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बारता

ऊकाजी म्हारा घर मैं आधी चीज वसत[1] हुवै जो उरी लेवे तो कुण बरजै। ई ढाल री बिसाय[2] कांई छै। पण जगत री इसी कैणारत[3] बतावै छै। सो दोनूं हाथ सूं ताळी बाजै छै। अेकण हाथ सूं बाजै नहीं। घणां सूरां [सूं] तो बैरी धूजै हर एक सूर तो मरण पूजै। [तरां] ऊकोजी कहै—

सोरठो

मांमा सारी मांड, दोहूँ कर ताळी दिये।
मह ऊपर रिण मांड, अेक बजावै ऊकड़ो ।।

बारता

मांमाजी दोनूं हाथ सूं ताळी तो रोटी पोवती लुगाई ही बजावै छै। अेकण हाथ तो किणहीक नीकालज्या सूंई बाजै छै।[4] अतरा समाजोग मैं राजा कहवाटजी फुरमायो–अबै सारा ही सिरदार दीवाळै चालो। श्री देवीजी की पूजा को बखत आयो। आ[5] कहे नै सारा[6] साथ सूधा दीवाळै आया।[7] और गांवां-गांवां सूं खाजरू, भैंसां मंगवाया। सो हाजर लेर आया। और धूप, दीप, नईवेद होम कर चंडी की पूजा कीधी। नै[8] देवळ बारै आया। नै खाजरू, भैंसां नै लो[9] करबारी दवायती दीधी। सो आछा आछा इकदांई मोटियार ऊठीया छै नै खाजरू, भैंसां नै लोह करै छै। सो गल-जोड़ तूंबा सा तूटै छै। नै धकधकातो लोही चंडी नै चढ़ै छै। और कवीजन लोग देबी का गुणगीत कहे[10] नै बिरदावै छै। अबै कितराक[11] सिरदारां तो ताजीयां चढ़ै नै आय मुजरो कीधो। तिणां नै चौगांन मैं भैंसो छोडण रो हुकम दीधो।

---

१ वस्तु, २. वीसायत, ३. कैणावत, ४. रिण येक हाथ सुं ताळी तो कीणी नीकालजाआं सुं ही जै बणि आवै छै। ५. इसी, ६. सारा ही, ७. साथ उठी देबी कै देवाळै आया। ८. अर, ६. लोह, १० गुण रूपग गावै, ११ इतराक समाजोग।

बरजै=मना करता है; बिसाय=मूल्य, औकात; कैणारत=कहावत; धूजै=कांपता है; पूजै=प्राप्त होता है; मांड=संसार; मह=मही, पृथ्वी; सारी=सम्पूर्ण; मांड=रचकर; पोवती=बनाती हुई; नीकालज्या=विना कलेजे वाला अर्थात् वीर; सूंई=उसी से; दीवाळै=देवालय; खाजरू=बलि का बकरा; नईबेद=नैवेद्य; लो=लोह, झटका, लोहे के वस्त्र से एक ही वार में मारना; दवायती=आज्ञा; इकदांई=एक उम्र के; मोटियार=जवान; गल-जोड़=गले से जुड़े हुए; तूंबा=कद्दू या लौकी; धकधकातो=गर्मागर्म; लोही=रक्त; ताजीयां=घोड़ों पर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कवित

अत भैंसो इत आय,[1] पाय[2] मद धार अपारां।
ग्रह[3] छोडे चौगांन, जोध लग पूठ जियारां ।।[4]
उड़े रेत अणथाह, धरा हय-नाळ धमंक्किय।
पमंग दौड़ अत भार, पड़ सिर सेस चमंक्किय ।।[5]
पड़ खग गजर रत धार पड़, गिरां नीर मांनू[6] गुड़ै।
इळ पूज अपत कछ्वाट इम, जबर जोध असमर जुड़ै ।।

वरता

इण रीत सूं चौगांन्यो भैंसो मार [देवी का] घणा हंगाम करवाया। उठां सूं असवारी करे रूमनायां रैं चानणै दरबार आया। नै पछै सुजांणसाह नै डेरां नै सीख दीधी। नै[7] रसोड़दारां नै गोठ री ताकीदी कीधी। तरां रसोड़दारां अरज गुदराई[8] – सिरदार पांतीयै पधारजै, गोठ री ढील नई।[9] सो मांमो भांणेज पांतीयै पधार्‌या। दारू मंगवायो। सो खिजमतदार तूंगां भर हाजर लाया। सो केसर्‌यां कसूंबल दारू रा प्याला फिरै छै। ऊपरैं सूलां री सींकां री नुकल करैं छै। कवेसुर कहै–[10]

दूहो

सड़वड़ता सूळा सही, झर झरता घ्रत झार।[11]
प्यालां पर प्यालां पियै, सह छकिया सरदार ।।[12]

---

१. अति काय, २. पाद, ३. गह, ४. जिणवारां, ५. भाला तांम झलकी, चपल जिम खाग चमकीय, ६. मानहुँ, ७. हर, ८. गुजराई, ९. ढील नहीं काइ, १० तरां कविजन लोग कह, ११. फूल पीयाला, १२. संग फीरै, अमलां नुकल अपार।

चौगांन=खुले मैदान में; पूठ=पीछे; जियारां=जिसके; हय—नाळ=घोड़ों के खुरों से; धमंक्किय=कांप रही है; पमंग=घोड़ा; अत=अति; सेस=शेषनाग; गजर=प्रहार; रत=रक्त; गिरां=पर्वतों से; गुड़ै=बहता है; इळ=पृथ्वी; असमर=तलवार; चौगांन्यो=मैदान में दौड़ता हुआ; हंगाम=उत्सव; रूमनायां=चिराग; चानणै=प्रकाश में; गुदराई=प्रस्तुत की; पांतीयै=भोजन करने के समय बिछाया जाने वाला वस्त्र; नई=नहीं; खिजमतदार=सेवक; तूंगां=मदिरा रखने के पात्र; नुकल=वह वस्तु जो शराब या अफीम लेने के पश्चात् मुंह का स्वाद बदलने के लिये खाई जाती है, गजक आदि, सड़वड़ता=भुना जाता हुआ; झार=धार; छकिया=तृप्त, मस्त।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोरठो

[धकधकती मदधार, प्यालां पर प्याला पियो ।]
[सह छकिया सिरदार, अकवकीय बोलै उठै ॥]

वारता

अतराक समाजोग मैं मतवाळां रा डीलां सूं दारू की तुंगां ढुळ ढुळ जावै छै।[1] सो दारू परनाल्यां पड़तो किसोहेक निजर आवै छै –

सोरठो

मचे अेम मतवाळ,[2] परनालां दारू पड़ै ।
बण दूजो बरसाळ,[3] सुरपत दारू[4] बरसियो ॥

वारता

दारू का प्याला पीवै छै नै पावै छै । नै गोठ री परूसगारी होती जावै छै ।

कवित्त

बणे बतीसूं भोजनां, तीस तेवड़[5] बोहोतेरा ।
पूड़ियां बहोत प्रकार, बंण्या पकवांन भलेरा ॥
चुरसाई बोहो चोल,[6] ताछ ताछ बोहोतेरी ।
अथांणां अंबरसां, अनै मुरब्बा इधकारी ॥
विध विध सवाद भोजन वणै,[7] किती मिठाई कानियां ।
कहवाट गोठ इण विध करी, मिजलस हद मिजमानियां ॥

---

१. उण समा मांही मितवालां सुं दारू का तूंगा ढुन जावै छै, २. जीग भेला ढुलि ताल, ३. वांणक जोय वरसाळ, ४. दारू ही, ५. तीखण, ६. चोज, ७. वीद सवाद अन भोजन वणै।

धकधकती=अति मादक; अकवकीय=ऊट-पटांग; डीलां=शरीरों; परनाल्यां=पनाले, नाली के सदृश; मतवाल=महफिल, सभा; बरसाल=वर्षा ऋतु; परूसगारी=परिवेषण, परोसगारी; तेवड़=पकवान, व्यंजन, सब्जी; चुरसाई=नमकीन, चटनी; चोल=लाल; ताछ ताछ=तरह-तरह की; अथांणां=आचार; कानियां=पास में, तरफ, अलग-अलग; मिजमानियां=अतिथि सत्कार ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूहो

ऊंधातो प्याला इधक, सूळां खातां साथ।
ग्रह बाथां गळबाहियां, हाथां ग्रह ग्रह हाथ ॥

वारता

इण भांत सूं गोठ जीमें हर चळू किया। पांन, कपूर, इलायची सहेत[1] बीड़ा लिया।[2] और कवीजन लोग जीमें नै आसीस षढ़ै छै। तिकां नै सुगेर थिरमा बागा सिरपाव बगसै छै[3]। तरां भाट मांगळ कहै—

दूहा

करै सदा कैवाट अप, गोठ अेम गिरनार।
पातां चौसर पांतियै, आवो बरन अढार ॥[4]
कीधा इम कैवाट सी, गोठ तणां गजखांन।
अधपां ऊंबर मांय नै,[5] मिलै न व्याव समांन ॥

वारता

और मतवालां हुवा सिरदार घरां नै जावै छै। तिणां नै रसाला रो लोग बाला जोड़ी घाल घाल घरां नै पुगावै[6] छै। इण रीत कितराक[7] दिन तो गोठ गजखांना कीधी। [हवा डंबर कीधी।] [और] तारापुर पाटण सूं कासीद आयो। जद ऊकैंजी सीख मांग लीधी। तरां कहवाटजी कही–भांणेज थोड़ा[8] साथ सूं थे तो अठै हीज रहो। दूजा साथ नै तारापुर जाबण रो हुकम कहो। कतराक साथ नै तो सीख दीधी। ठावां ठावां सिरदारां नै राखबा री तजबीज कीधी। अबै रोजीना गिरनार का डूंगरां मैं सिकारां खेलै छै। जिके डूंगर किसी भांत रा छै—

---

१. संजुगत, २ बीड़ा हाथ मैं लीया, ३. तिके सुण सुणे सु बां कायरां का मन मैं सोटा सा बहे छै, ४. अठार, ५. अदेवा नै इता उबरै, ६. पहुंचावै, ७. घणा, ८. छड़ा।

ऊंधातो=उड़ेलते हुए; सूलां=मांस; चळू किया=हाथ धोये; थिरमा=एक विशिष्ट प्रकार का कपड़ा; बागा=अंगरखा, जामा; पातां=कविजन; चौसर=चारों ओर; पांतियै=पंक्ति में; अढार=अठारह; अधपां=अधिपति, राजा; ऊंबर=उमराव; व्याव=विवाह; समांन=सम्मान; रसाला=घुड़शाला के; बाला जोड़ी=बाहों में बाहें डालकर, दो-दो आदमी हाथों को ग्रन्थित करके, सहारा देकर; घाल=डालकर; पुगावै=पहुँचाते; हवा डंबर=हवा खोरी; साथ=साथियों को; ठावां-ठावां=मुख्य-मुख्य।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूहो

आंब कदम जू केतकी, बिमला[1] लील बिलास ।
गिर डूंगर गिरनार का, कन दूजो कयलास ।।[2]

बारता

ईं भांत सूं दिव[3] उधारा मोल लेवै छै नै लाखां रुपियां री घोड़ां री रीझां देवै छै। [सो] एक दिन रै समाजोग दोफारां रै बखत वाळद मांय सूं सुजांणसाह आयो । सो चौपदार मालम करी । जद रंगमहल मै बैठा छा उठै ही बुलायो । [तरां] राजा कैवाटजी कयो—सुजांणसाह वे बखत क्यूं आयो । [तरां] सुजांणसाह हाथ जोड़ अरज कीधी[4]—

दूहो

लाख लाख मोलाविया,[5] घोड़ा दोय सुधाट ।[6]
जळ-हरिया लायो जिको, करूं निजर कैवाट ।।

बारता

[ओ] दूहो सांभळ कहवाटजी कयो—घोड़ा अठै हीज मंगावो । [और] फेरणियां नै चोढ़ नै फेरावो । तरां साह कहै-माहाराज, घोड़ा अठै मंगावसो तो बाजी ठेको करता देखसी ।[7] तो ढ़ाल गैंडारी ऊकैंजी उरी लीधी ज्यूं उरा लेसी ।[8] जिण बात सूं घोड़ा अठै नहीं मंगावो तो ठीक छै ।[9] और मारै डेरै पधारो तो ठीक छै[10]। इण बात सूं राजा रो मन लालच [उपरै] आयो । कुदेव[11] रो लेख मिटै नहीं मिटायो । [सो] राजा कहवाटजी खवास नै साथ लै सुजांणसाह डेरै लायो । सो खवास पासवांन दरवाजा वाळां कुणी देखबा[12] न पायो ।

---

१. व्रमल, २. कलास, ३. दिन, ४. हाथ जोड़ नै कवायो, ५. लख लख मोलस मै लीया, ६ सुघाट, ७. तो बाजी कर ठेको देसी तो, ८. ज्यूं ही घोड़ा उरा लेसी, ९ घोड़ा अठे नहीं मंगवाइजै, १० मारे डेरै पधारवा की तजबीज कराईजे, ११. क्युंदइव, १२. लखवा ।

बिमला=विमल, स्वच्छ; लील=क्रीडा, लीला, हरियाली; कन=किंवा; दिव=दिवस; रीझां=दान; दोफारां=दोपहर; बे वखत=असमय; मोलाविया=खरीदे हैं; सुधाट=धाट देश (ऊमर कोट के); जळ-हरिया=घोड़ों की एक जाति, फेरणियां=चाबुक सवार; चोढ़=चढ़ाकर; बाजी=घोड़ा, ठेको=ठोकर; मारै=मेरे; कुदेव=दुर्भाग्य; खवास=निजी सेवक; पासवांन=पास रहने वाले सेवक ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूहा

चहको बांई[1] चीबरी, आडो भुयंग बसेस ।[2]
इसा सुगन[3] कैवाट सी, निकस्यो लेर नरेस ।।
चमू लाख लारै चढै[4], दलां दबावण देस ।[5]
अेक जणां संग वुठ[6] चल्यो, भलो भलो भावेस ।।

सोरठो

भावी बस भूपाळ, लारै भड़ लीधा नहीं ।[7]
तो आयो तिण ताळ, साह मिलण कैवाट सी ।।

बारता

और सुजांणसाह डेरै आंण[8] नै घोड़ा मंगाया, सो सोना री साखत करै नै चाकर हाजर लाया । सो घोड़ा ऊबा किसायक नीजर आवै । सो सप्तास रा साथी [हर] मीरग दोड़ीयौ जाण न पावै । तरां राजा कही–घोड़ा ऊपर फेरणिया नै चोढ़े नै फेरावो । हर दोय खेत मै आमां–सामां आव–जाव करावो । तरां साह कही–माहाराज, भलांई फेरावावो । पण डीलां चढे नै कीमत करावो ।[9] तरां ढाल तरवार तो खवास रै हाथ दीदी । [नै] आप घोड़ा ऊपर असवारी कीधी । [सो] असवारी करतां दोवड़ा डाव करै छै[10] सो मानूं तूटा डाळ ऊपर सूं लींगूर झांप[11] भरै छै । [तरां] सुजांणसाह कहै–

सोरठो

अै घोड़ा इण भाव, फिरै न थोड़ा[12] फेरिया ।
धरो कोस दस धाव, पारख जद आंरी पड़ै ।।

---

१. झांई, २, वले आडो भमगेह, ३. अैसां वण, ४. चलै, ५ दहलै सारो देस, ६ उलठ, ७. पलैटै अेक न करमपन ८, बैठे, ९. माहाराज ही फीरवावै नै डीलां चढ्यां बीना कीमत नीजर न्ही आवै, १०. असवारी करतां घोडो वडा डांण करै छै ।, ११. ठेको, १२. तोडा,

---

चहकी=बोली; चीबरी=कोचरी, एक पक्षी, चमु=सेना; दलां=सेना को; वुठ=उठ कर; भावेस=भवितव्य, होनहार; भड़=वीर; तिण=उसी; ताळ=वक्त, समय; साखत=घोड़े की काठी, जीन; सपतास=सपताश्व; मीरग=मृग; आव–जाव= आना–जाना; फेरावावौ=फेरो; डीलां= स्वयं, शरीर से; दोवड़ा=दुतरफा; डाव=बाजी, दाव; तुटा= टूटा हुआ; लींगूर=लंगूर; झांप=छलांग; धाव=दौड़; आंरी= इनकी,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वारता

ओ दूहो सांभळे नै चलाया । सुजांणसाह आपरा साथ नै कयो थां सूं डेरो चालै सो ले लीज्यो । नहीं चालै सो पड्यो रैवा दीज्यो । पालखी ले नै कोस पांच सात ऊपर आय सांभळ हुज्यो । इणी कहे नै राजा कहवाटजी नै सुजांणसाह घोड़ा चड़ीया । नै दोनूं ही बाला जोड़ी करे नै आघा खड़िया ।[1] और सुजांणसाह रा बेली पाछै हुता । सो राजा कहवाटजी नै कोस पांच सात पर आंण[2] पुंहुंता । तरां सुजांणसाह क्यो माहाराज, पाछा सूं साथ आवै [छै] ज्यां नै आवा दयो । [और] आप घोड़ा सूं थाका[3] सो तो पालकी मैं बीराज ल्यो । [आ बात सुजांणसाह री कही सांभळ नै] तरां पालकी हाजर आंणी । तिण में बिराज लीधा । नै सुजांणसाह पालकी रा कहारां नै समजोतरी कीधी । तरां पालकीवालां गिरनार रो तो मारग[4] छोड़ दीधो । नै कोयलापुर पाटण रो मारग लीधो[5] । तरां राजा कहवाट सुजांणसाह नै कही–गिरनार तो पाछै रह छै ओ मारग आंपणो तो नहीं । तरां सुजांणसाह कयो–माहाराज, आप नै सांची कहूं–कोयलापुर पाटण तो मारो गांम छै । और अनंतराय सांखलो मारा धणी रो नांम छै ।

दूहा

और अनमी पकड़ीया [6], अनवी रयाज आप ।
आयो पकड़ण बासतै, परगट दाखुं पाप ।।

घोड़ा मांणक दूं घणा, कहोज मुतलब कांय ।
ठगवा आयो ठाकुरां, मन सोझो[7] मन मांय ।।

१, ओ दुहो राजाजी नै सुजांणसाह कह आपका साथ्यां नै कुवायो थां सु नही चालै सुं डेरो अठै पड्यो रवा दीज्यो । थां सु चालै सो डेरो पालखी लै न कोस पांच सात उपरै मांनै आय पहुंच लीज्यो ।इसी कहै नै घोडां चढीया सो राजा केवा[ट] जी नै साह सुजांण वाला जोड़ी करि न खडिया । २. जाय, ३. सूं थाका हुस्यो, ४. रस्तो, ५. पाटण ने खड़ दीधा, ६. और अनमी सो पकड़ीया, ७. मन सोदो,

---

रैबा=रहने देना; सांभळ=शामिल; हुज्यो=हो जाना; आघा खड़िया=आगे बढ़े, प्रस्थान किया; बेली=साथी; हुता=थे । आवा दयो=आने दीजिये; थाका=थक गए; समजोतरी=समझाया; धणी=स्वामी; रयाज=रहे; बासतै=वास्ते, लिये; दाखूं=कहता हूं; सोझो=मन में विचार करो ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बारता

आ बात सुणतां प्रवांण लायसी डील मैं लागी। कहवाट रै पगां री झाळ माथै आय लागी। सो राजा कहवाट रा मन मैं खोटी तो घणी ही आवै। पण बिनां डेरै किण ही दाव नहीं आवै[1] ।

सोरठा

बदल्यो बांध बवार[2] माजन नहीं तु नामरद ।
पकड़त खेत पचार, मोनै तो जांणत[3] मरद ।।

आजु[4] करे उपाय, भाई कर भोळावियो[5] ।
पकड़तो रिण मांय[6] ; मोनै तो जांणत मरद[7] ।।

बारता

तरां कहवाटजी कहै–तोनै इसी करणी सी तो तरवार पकड़'र आंणणो थो। कना खेमैं[8] बकार्‌यो होतो तो रजपूती री ठीक पड़ती[9] । इण बात सूं भलां तो कोई नहीं कहसी। प्रथी ऊपरै आछा आछा छत्री सुणसी सो तो [थानुं] नांनत ही देसी। और तू जांणै छै कहवाट नै पकड़ लायो छूं। सो मारो तो क्यूं ही नहीं बीगड़सी। पण पाछै भांणेज ऊको गढ़ मैं रयो छै तो ठीक [ही] पड़सी। घणां सांखला रा माथा तो चंडी नै चढ़ावसी। थारा कबीला रा काळजा मोरां री कांनी कढ़ावसी। [फैर] कहवाट कहै—

सोरठा

गहला तूं'र गिंवार, माझन बुद तो मै नहीं।
गढ़ ऊको गिरनार, रहियो तो पड़सी रयंस[10]।।

---

१. किण ही बख लागबा न पावै, २. गोला तो कुं लगारि, ३. जांणुं, ४ ओछौ, ५. बोलावीयौ, ६. पकड़ सेल रिण पाव, ७. मांडै तो जाणूं मरद, ८. खेत मैं, ९. रजपूती जाणतो, १०. रहस,

---

लायसी=आग के समान; झाळ=ज्वाला; बवार=व्यवहार; माजन=महाजन; पचार=ललकार कर; भोळावियो=धोखा दिया; खेमैं=डेरे पर ही; बकार्‌यो=ललकारा; नांनत=लानत; मोरां=पीठ; कानी=ओर, तरफ; गहला=पागल, गेलो; तूं'र=तुम; गिंवार=गंवार, निबुंद्धि; माझन=महाजन; बुद=बुद्धि; तो=तुम में, रयंस=रंजिस,शत्रुता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बारता

और कैंता हुआ[1]–हूं तीन लाख घोड़ां रो धणी, थां मैं अकेलोईज क्यूं आयो। पण होणहार जबरो[2] छै, जो मिटै नहीं मिटायो। हर श्री परमेसरजी री रचना है सो अप्रबळ कहावै[3]। जो किणी [ही] सूं लखी नहीं जावै। आ बात तो साध सं। कहै छै, नै च्यार वेद गावै। इसी कहे नै आप रा मन मैं केबा लागा[4] —

कुंडलियो

सीता लखमी राम ब्रंम, सुज[5] लारै बळ सेख।
मन डुलियो मारीछ-म्रग, लिखियो मिटै न लेख ॥
लिखियो मिटै न लेख, रांम क्यूं भ्रंमे ब्रंम मय।
हरण सीत को होय, भ्रंमै क्यु लखन जांन भय ॥
ज्यूं ही साह सुजांण, कपट बुध करी करारी।
कर पकड्यो कहवाट, मिटै नहीं लेख मुरारी ॥

बारता

तरां राजा कहवाट कहै[6] –बिना डेरै हुवां काही छै। भूंडी भली हुई [सूं] तो मन की मन माहीं छै। और सुजांणसाह तो पाछला डर रा मारियां घणा उतावळां चलाया। सो पांच दिन पांच रात मैं कोयलापुर [पाटण] आया। सो सुजांणसाह [राजा] कहवाटजी रै दरीखानै लायो। [और अनंतरायजो बतलाया]—

सोरठो

कर मुजरो कैवाट, इम आखै राजा अनंत।
पाछो मेलूं पाट, परणाये गिरनारपत ॥

बारता

[यह दूहो सांभळ नै] कहवाट कहै--

१, इसी कह नै कहुता हुआ, २. सबलो ३, सो अपरबल छै, ४. मन माई कहता हुआ, ५. सजि, ६. जाण्यो,

---

अप्रबळ=बलवान; केबा=कहने; सुज=उनके; सेख=लक्ष्मण; भूंडी=बुरी; दरीखानै=सभा; पाट=सिंहासन; परणाये=विवाह कर; गिरनारपत=गिरनार के स्वामी, कहवाट।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोरठा

भमंग न झेलै भार, पाजां दध-सायर पिलै ।
गड़ लाजै गिरनार, कहो मुजरो किण विध करूं [1] ।।

वारता

[तरां] अनंतराय [फेर] कहै—

दूहो

पग बेड़ी घालूं प्रगट, जड़ दूं तोख जंभीर ।।
कर मुजरो कवाट सी, सहसो दुख्ख सरीर[2] ।।

वारता

[तरां] अनंतराय [फैर] कहै—

सोरठो

ऊगै उलट आदीत, दीखण दिस सुमेर दिपै ।
जे सत छोडै सीत[3], मुजरो कर तोसूं मिलूं ।।

वारता

[तरां फेर] अनंतराय कहै—

दूहो

कह मुजरो क्या नहं करै, इऊं आखै अंतेस ।
जुध खागा मोतूं जुड़ण, दहल पड़ै दस देस[4] ।।

वारता

[तरां फेर] कहवाट कहै [5]—

---

१. कीण नै करूं, २. न तो सहस्यो दुख सरीर, ३. सत जो छोड़ै सीत; ४. जुध संग मो कुण जुड़ै, मारी दहल पड़े चउ देस ५. अनंतरायजी कहता हुआ—

भमंग=शेषनाग; झेलै=झेलता है; सहता है; पाजां=पाल, मर्यादा; दध-सायर=समुद्र; पिलै=लोपै; तोख-जंभीर=लोहे की गोल व भारी हंसली जो कैदियों के गबे डाली जाती है; सहसो=सहन करोगे; आदीत=आदित्य, सूर्य; दीखण=दक्षिण; सत=सतीत्व, शील; सीत=सीता; इऊं= इस प्रकार; अंतेस=अनंतराय; जुड़ण=संयुक्त होना, भिड़ना; दस देस=दस दिशाएं;

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूहो

गंगा उत्तर दिस गुड़ै, संकै मन मैं सेर ।
मुजरो कर तोनूं मिलूं, सरकै दिखण सुमेर ।।

बारता

[तरां फेर] अनंतराय कहै [1]—

दूहो

सौ छत्रधारी सांखला, थोगण अरियां थाट ।
सौ राजा बंध मैं सिड़ै [2], किसी गिणत कैवाट ।।

बारता

कहवाट कहै—

सोरठो

सुण अनंत मद अंध, दौलत मैं दीसै नहीं ।
केम नमाऊ खंध, गळे भार गिरनार रो ।।

बारता

औ दूहा सांभळ कहवाटजी कहै—अनतरायजी अत्तरा अजसो कांही, चोरी कीधी छै। रजपूती [तो] कीधी नांही ।

सोरठो

रजपूती रो राह, अळ मैं[3] नह छै आगलो ।
सो ठग लायो साह, अंजसो मत राजा अनंत ।।

१. अनंतरायजी कहना हुआ, २. सदा, ३. इलम,

गुड़ै=बहे; संकै=सशंकित हो, भयभीत हो; सेर=सिंह, सरकै=खिसके; थोगण=रोकने वाले; थाट=समूह; सिड़ै=सड़ रहे हैं; केम=किस प्रकार; अंजसो=अभिमान; अळ=इला, पृथ्वी; नह छै= नहीं है; आगलो=पुराना;

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बारता

अै बचन [कवाटजी] सुण[1] नै अनंतरायजी नै रीस आई [सो] तोख बेड़ी नै हथ-कडयां [हाजर] मंगाई । फेर कही[2] – सेर अेक भूंगड़ा मंगावो । जाजम ऊपर बीखेरो मूढां सूं चुगावो[3] । [अोर] नहीं चुगै[4] तो तीखी आरां रा चपरका ढुंगां ऊपर दीरावो ।

तरां कहवाटजी कहै—बिखेर्यां भूंगड़ा तो जीनावर चुगसी । हूँ तो थांरो बरोबरियो सूं[5] सो नहीं चुगसूं । हर थांका बख मैं पड़ियो सूं सो मरणो ही कबूल करसूं ।

इसा मरम छेदी बचन सुणे'र अनंतरायजी नै रीस आई । जरां[6] गोरधनजी बीच में अरज गुदराई—अनंदाता, कहवाट इसो रजपूत छै, जो भूंगड़ा तो नहीं चुगसी[7] । आपके सारै छै, मारसो तो मरजावसी । [तरां फेर] अनंतरायजी कही—

दूहो

धर माहे ऊंडो धरूं, गैला बिचै गड़ाय ।
किण बल मुजरो नहं करै, बातां करत बताय ।

बारता

कहवाटजी कहै –

दूहा

डर थारै[8] पण छोड़ दै, गैला अोर गिंवार ।
कदे न मुजरो हूँ करूं, भल मरणो सो बार[9] ।।

अनंत मती हुय[10] आखतो, सुण लीज्यो सह कोय ।
भळकै ऊको भांणजो, जिण दिन मुजरो जोय ।।

---

१. सांभळे, २. अोर, ३ खवावो, ४. खाव, ५. थारो जवाइ छुं, ६. तरां, ७ खावसी, ८. डर धारचा, ९. मरणो हिक बार, १०. वै,

---

तोख=हंसुली के आकार का एक भारी उपकरण जो अपराधी के गले में डाला जाता है; सेर अेक=लगभग एक सेर; जीनावर=जानवर; बरोबरियो=बराबर की प्रतिष्ठा वाला; बख=वश में, पकड़ में; सारै=अधीन, सहारे; ऊंडो=गहरा; गैला=रास्ते, मार्ग; बल=साहस, ताकत; पण=प्रण; गैला=पागल; कदे न=कभी नही; आखतो=उतावला; भळकै=दिखाई दे ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वारता

तरां अनंतरायजी आपरा उमरावां[1] नै कहै—कहवाट तो आंपां नै मरबा कै तांई करड़ा बचन कहै छै। जो अणी नै मारणो तो नहीं। नै जंजीरां मैं जड़ देसूं। जो[2] कतराक दन करड़ापण रैसी। तरां अेक लाकडा रो पींजरो घड़ाय भालां सूं जड़ायो। जिण रै मांय कहवाट नै वड़ायो। सो दरवाजा रा गैला मांय गड़ायो। और दरवाजा मैं लोग आवै हर जावै ज्यांरा पगां सूं धूळ उड़ उड़ नैं झड़ै सो कैवाटजी रा माथा ऊपर पड़ै छै।[3] जठे कहवाटजी रा जीव नैं घणो [ही] दुख छै। पण बंधीखानां मैं अन-प्रसाद तो लेणो महेस माथैं उदक छै। और अठैं तो कहवाटजी मैं इसी बीपत पड़ रही छै।[4] नैं उठै गिरनार मैं ठीक ही नहीं छै।

प्रभात हुवो नैं[5] ऊकोजी दरबार आया। [हर] रजूतां नैं कामदारां नैं भाट मांगळ नै हजूर बुलाया। खवास कै हात मांमाजी [कैवाटजी] नै कहायो- बारै पदारजै [हजूर] दरबार को बखत आयो।

[तरां] खवास नाजर नैं कही-[6] हजूर किसै महल छै। आज दरबार को बखत टळ[7] गयो। बारै माहाराज पधार्‌या नहीं। [तरां] नाजर कही-जीनांना मैं तो माहाराज नहीं। मरदांना मैं हीज रहीया। इसा बचन पाछां आंण ऊकाजी नैं कहिया। ऊकैजी खवास नैं बूझयो सूं पाछो जाब दीधो। काले बिणजारा रै डेरै पदार्‌या छा। बिणजारैं घोड़ा दोय नीजर किया। तरां[8] घोड़ा चढ़े'र [सुजांणसाह राजाजी] चलाया सो दिन आंथियां तांई तो मैं वाट जोई। पछै मैं देख्यो[9] दूजै दरवाजै होय नैं पधारिया।[10] सो दरबार तो पदारयाई नहीं।

इसी सुणतां प्रवांण ऊकाजी नैं सोच आयो। नैं आदमी बिणजारा रै डेरै खिनायो। सो[11] आदमी आय नैं कही- उठै तो बिणजारा रो डेरो कोय नहीं। उठा सूं तो डेरो ले'र

---

१. रजपूतां, २. देखां, ३, सो दरवाजा मैं लोग आवै छै नैं पींजरा माथैं फीरै छै तीण का पगां सूं धुल कैंवाटजी रा मुंडा उपरै खीरै छै; ४. इसी गत बीत रही, ५ और प्रभाते ही उठी, ६ बूझ्यो, ७. ढल, ८. तिण, ९. जाणी, १०. होय नैं दरबार आया, ११. तरां,

---

तांई=लिये; करड़ापण=कठोरता, वड़ायो=प्रवेश करवाया, झडै=पड़ै; अन=अन्न; उदक=जल; ठीक=जानकारी; पाछां आंण=वापस आकर; जाब=जवाब, उत्तर; आंथियां=ग्रस्त हुए; तांई=तक; वाट=इन्तजार, जोई=देखी। खिनायो=भेजा;

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लद गयो। सारा'ई साथ लारां ले गयो। आदमी ऊकाजी नै कहै--[1]

दूहो

कोड़ां धन निजरां करे, दीठो वैरी डाव[2]।
लद विणजारो ले गयो, रांकां पाळण राव ॥

बारता

तरां सारा ही सिरदारां राजा री खबर करण वासतै[3] भाट मांगळ नै त्यारी करियो। सो आपरो डेरो बांधे'र ऊकाजी रै आगै हाजर आंण हुयो। ऊकोजी कहै—

मारा मांमा नै पकड़ ले गयो।[4] जिण री ठीक हुवै तो जमी मैं गड़ाऊँ। उण रा गांव ऊपर गधेड़ां रा हळ हकाऊँ। इसी कहतां ऊकाजी रां मन मैं लाय सी लागी। पण बिना ठीक कूंही बख नहीं लागी। [फेर] ऊकोजी कहै—

सोरठां

मंगळ सारी मांड, कठै[5] ही मालम करै।
आभो ही ऊलांड,[6] ग्रह लाऊं गिरनारपत ॥
मांमा री धर मांय, मंगळ खबरज मोकळै[7]।
जुध कर जम सूं जाय, पकड़ लाऊं गिरनारपत ॥
मंगळ कहैज[8] मोय, सरवहियो संकर कनै।
जदी गुरड़ रथ जोय, कर झालूं कयलास नूं ॥
कोई कहै कैवाट, सुध मांमा थारी सही।[9]
भांज करूं ध्रहबाट[10], सुर नर नाग नरादपत ॥[11]

---

१ विणजारा कौ डेरो दांमयक ही ग्ही पडीयो। उतो सारो साथ ले नै परो चडीयो। आदमी कहे—, २. वरी दीधो डाव, ३. सिरदारां राजा नै सोदबा नै, ४. मांमा नै पकडीयो छै, ५.कव, ६. तो आभो ही उलांझ, ७. मांगळ खबर जै मो कहै, ८. मंगळ जे कह, ६. सुधि थारी मांमा सही, १०. दहबाट, ११. नरेश्वरां,

---

लद गयो=चला गया; कोड़ां=करोड़ों का; डाव=दाव, अवसर; रांकां=रंकों का, गरीबों का; ठीक=सत्य; हकाऊं=चलाऊं; बख=दाव, मोका; मांड=संसार, सृष्टि; आभो=आकाश; ऊलांड=फांद कर, उलांघ कर; मोकलै=भेजे; संकर=महादेव; गुरड़ रथ=गरूड़ रथ; झालूं=उठाऊं; कयलास=कैलाश पर्वत; ध्रहबाट=धरती को चौपट कर दूं, रास्ता बना दूं;

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बारता

मंगळ में इसी सुणी छै। राजा अनंतरायजी सांखलो छै। जो जमीं ऊपरै अनमी राजा नहीं राखै छै। जो पहली पाटण हीज जावो। [हर] पछै देस देस री खबर मंगात्रो।[1] मंगळ मै औ दूहा कया है[2] जो चोड़ै कर बताऊँ।[3] और आकास पाताळ मै जंबूदीप मै कहवाटजी जठै व्है जठां सू लाऊं।[4] अतरी बात सांभळ साथे आदमी ले'र चलाया। सो कतराक दिनां मै कोयलापुर पाटण आया। सो मंगळ गांम सूं नेड़ै आंण बीचारी।[5] राजा [की] हर गांव की बात आवै [छै] पिणगट [ऊपर] सारी। [तरां] मांगळ कहै—

सोरठो

मंगळ औ मन जोय, आयो पिणगट उपरै।
करसी बात सकोय, जात सुभाव नारी जिको ।।[6]

बारता

[तदि] मंगळ पिणघट ऊपरै आय घोड़ां रो घासियो उतार बछावणो कीधो। [जिण ऊपरै आप बेठो]। हर घोड़ां नै आंबा री डाल तळै बांध दीधो।[7] अतरै झूल रा झूल पणिहारीयां आई। सो किसड़ीक दरसाई। सो जांणै सदासिव नै जळ चाढ़बा नै अपछरा कन बीजासणियां आई। तके पांणी भरती बात करै छै—

देखो है सुजांणसाह राजा कहवाटजी नै पकड़ लायो छै। जिको आंपणा राजा सूं मुजरो नहीं कीधो। जदी पींजरा मै घाळ[8] नै दरबार का गैला मै गाड़ दीधो।[9] आ सुणे नै [आप] अकेलो ही [आघो] चाल आयो। दरवाजा रो गैलो बूझे'र दरवाजै आयो। सो दरवाजै आय अठी-उठी देखतो हुयो। राजा कहवाट तो नीजर नहीं आयो। मंगळ कहै[10]——

---

१. खबर पड़ि मां कनै सताबी आवो, २. मंगळ औ दूहा मैं कही छै, ३. दीखाऊं, ४. जंबूदीप मै ठीक हुवै जठा सूं कवाटजी नै ल्याऊं, ५. नेडै आय नै वीचारी, ६. आयो पिणघट उपरै, जद मांगळ मत जोय। जाति सुभाव नारी जिको, करसी बात सकोय ।।, ७. आब की झाल के लगाय दीनौं, ८. जड़ि, ९. गैला मै गड़ाया, १०. जद कहियो यक दूहो,

---

कया है=कहे हैं; चोड़ै=प्रकट, प्रत्यक्ष; नेड़ै=नजदीक; पिणगट=पनघट; सारी=सब; सकोय=सब कोई; घासियो=गद्दी; झूल रा झूल=झुण्ड के झुण्ड; चाढ़वा=चढ़ाने के लिये, अर्पित करने के लिये; कन=किंवा, अथवा; बीजासणियां=योगिनियां, लोकदेवियां; घाळ=डाल कर; गैला=राजपथ; बूझे'र=पूछकर, अठी-उठी=इधर-उधर;

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोरठो

सांभळसी सुभराज, कठैइ होय कवाट सी[1] ।
लेखवसी कुळ लाज, बारठ आयां बोल ही ॥

वारता

ओ दूहो सुणतै ही सुणियो भाट मंगळ आयो[2] । तरां हेलो दे'र [नेडो] बलायो । मंगळ भाट आसीस दीधी ।[3] भालां आगै ऊठणी तो आयो नहीं सूतै ही ताजीम दीधी ।[4] [तरां] कहवाट कहै—

दूहो

हळहळियो[5] फूटो नहीं, मांगळ तो मिळियांह ।
दूभर[6] भरियो रे हिया, ज्यूं दाड़म कुळियांह ॥

सोरठो

मांगळ मो चित मांय, अेक अंदेसो सै इसो ।[7]
जो अतरा दिन जाय, आयो नाहीं ऊकड़ो ॥

वारता

[तरां] मंगळ कहै— अंनदाता, ऊकाजी नै तो ठीक हुई नहीं । ठीक हुवां तो तुरंत आवसी । राजा रामचंद्र लंका मैं करी, जिसी ऊकोजी पाटण मैं करे बतावसी ।[8] [फेर मांगळ कहै]—

सोरठो

बिना ठीक दिन बीत, ऊका काढ़ण सोच अंग ।
अब आवै अणचींत, गिळण अनडपंख ज्यूं गजां ॥[9]

---

१. के थीं ही होसी कँवट, २. ओ दूहो सुत ही सुण्यो जद जाण्यो भाट मांगळ आयो, ३. तरां मांगळ नेड़ो आय नै आसीस दीधी, ४. कीधी, ५. जळजळीयो, ६. सुभर, ७ इक अनेसो छै इतो, ८. दीखावसी, ९. गीलण अनल पंख जाणे गजां।

सांभळसी =सुनियेगा; सुभराज=राजा के लिये आदरसूचक सम्बोधन का एक राजस्थानी शब्द, हेलो=आवाज; हळहळियो=हिल गया. कंपित हुआ; फूटो नहीं=फटा नहीं, टुकड़े-टुकड़े नहीं हुआ; दूभर=भरपूर; कुळियांह=कलिकाएं; मो=मेरे; सै=है; अणचींत=अचानक; गिळण=निगलने के लिये; अनडपंख=अनल पक्षी के पंख; गजां=हाथियों;

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहूँ सांच कहवाट, बालो पाघ न बांधवै ।
बात कहन्ता बाट,[1] आवै पाटण ऊपरां ॥

बारता

मंगळ थां कही सो तो सारी ही [बात] ठीक छै, पण गिरनार पाछा वेगा जावो । [हर] हूँ कहूं जो समाचार ऊकाजी नखै जाय हर सुणावो—

सोरठो

तू कहतो तिण वाय,[2] ताळी तारापुर धणी ।
बाला हमै बजाय, अेकण हाथे ऊकड़ा ॥

बारता

तू कहतो थो आकास पाताल मैं जाऊं हर थांमै काम पड़ै तो अेक हाथ सूं ताळी बजाऊं । और तू कहतो सो रामजी करै मन चायो । ओ कजिया रो बगत नभीक आयो । [फेर कवाटजी कयौ]—

दूहो

छाती ऊपर सेलड़ा, माथा ऊपर बाट ।
मंगळ ऊका नै कहै, कठ पिंजरै कहवाट ॥

बारता

मांगळ अै समाचार ऊकाजी नै कहज्यो नै म्हारी खबर वेगी सी लेज्यो । [जदि] मांगळ कहवाटजी नै तो घणा गाढ़ा समाचार कहिया । [नै सीख मांग] पाटण रो तो पांणी पीधो नहीं । गढ़ गिरनार नै खड़ दिया । दिन पांच तो गैला मै रियौ । छठै दिन गढ़ गिरनार गियो । [तरां] मांगळ नै आवतो देख नै ऊकोजी कहै—

१. वाता सुणता बाट, २. तुं कहतो तीकायता,

बालो=क्षत्रियों की बाला शाखा में उत्पन्न अर्थात् ऊका; वेग=शीघ्र; नखै=पास; वाय=समय; कजिया=युद्ध; नभीक=नजदीक; समीप; सेलड़ा=भाले; बाट=मार्ग; कठ=लकड़ी; घगा गाढ़ा समाचार=बहुत गम्भीर समाचार, गुप्त समाचार; खड़=चल दिया;

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूहो

आवत मांगळ आखियौ, देख मुख्ख अणदांय ।
सकेक ल.धौ कवाट सी, मांमो पाटण मांय ।।

वारता

अतरी बात करतां नेडो आयो । नै ऊकैजी बतळायो, ऊकैजी कहै–

सोरठो

बातां कह बारैठ, किण धर[1] जोयो कवाट सी ।
सरवहियो सालैट, सुण्यो कठै सुरतांणउत ।।

वारता

[जदी] मांगळ कहै–

सोरठा

मैं दीठो पाटण मांय, करड़ै दुख कहवाट सी ।
पहरण बेड़ी पांय, अटकायौ राजा अनंत[2] ।
सहै कवाट सरीर, जबरा भाला पींजरै ।
जड़ियो लोह जंजीर, सादूळो सांकळ बिचै[3] ।।

वारता

औ दूहा सुणतां [प्रमाण] ऊकाजी नै रीस चढ़ी । सो मांनूं सोर गंज मैं आग उड़ पड़ी । कन भूखा केहरी नै गेडियो बायौ । कन सूता नाग री पूंछड़ी [माथै] पग दे'र दबायो । [फेर] ऊकोजी कहै—

---

१. धरती, २. मैं दीठो पाटण मही, पहर्या बेडी पाव । अटकायो राजा अनंत, माहा संकट दुख माय ।।, ३. सादुळो सांखल बिचै, जडीयो लोह जंभीर । श्रोधा चढीयो कि करै, सहै कवाट ससीर ।।,

---

आखियौ=कहा; अणदांय=आनन्दित; प्रसन्न; सकेक=शायद; लाधो=मिला; बारैट=बारहठ मांगळ; धर=धरती, प्रदेश; जोगो=ढूंढा; सालैट=कष्ट युक्त; सुरतांणउत=सुरतांण का बेटा; कवड़ै=कठिन; अटकायौ=रोक लिया; सादूळो=शार्दूल, सिंह; सोर=बारूद; गंज=ढेर; गेडियो=डंडा, छड़ी; बायौ=चलाया;

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोरठा

मांमो रोक्यो मोय, करै कपट आंणू कदी।[1]
तरवारचां हण तोय, सांकळ घालूं सांखला ॥

मामो पाटण मांय, इण ही धरती ऊपरै।
जो घण आगळ जाय, करतो जुध करतार सूं ॥[2]

जो किण ही बिध जाय, पाटण नगर पुहचऊं।
दांतां[3] तिणा दिराय, इम छोडूं राजा अनंत ॥

बारता

अै दूहा सुण[4] नै मांगळ कामदारां सिरदारां नै कहै—आज आगै ऊकाजी नै रजां तो बरज्यो नहीं रहै। आज तो ऊकाजी मैं इसौ रोस दीठौ।[5] मानूं[6] राजा दिख रा जाग ऊपर[7] सदासिव रूठौ।

सोरठो

भाट बचन सुण भूप, ऊससी लागौ ऊरस।
रुद्र कियौ जिम रूप,[8] जिग खोवण दिखराज ज्यूं ॥

बारता

तरां ऊकोजी कहै—सिरदारां म्हारा तो मन मैं मामाजी नै ल्यावण री आवै छै। [नै] अेक घड़ी नीसरै सो बरस बरोबर जावै[9] छै। [फेर ऊकोजी कहै]—

सोरठो

अहवी[10] करो उपाय, पाटण गढ़ जावां प्रगट।
देखां[11] छलां दुराय, अर[12] भांजू राजा अनंत ॥

---

१. कर कपट बाणे कहूं, २. जो रायण गेजाय, करतो जुध करतार सौं, ३. तो दांतां, ४. सांभळ, ५. उग्यौ, ६. बिना, ७. माथै, ८. जमरूप, ९. नीवसै, १०. यहो, ११. दोखी, १२. अरि।

दे'र=देकर; मोय=मेरा; आंणूं=लाऊं; कदी=कब; हण=मार कर; तोय=तुझे (अनंतराय); घालूं=पहनाऊं; घण=बहुत; आगल=आगे; तिणा=तिनके; दिख=दक्ष; ज्याग=यज्ञ; ऊससी=जोश में आकर; ऊरस=आकाश; दिखराज=दक्षराज; नीसरै=व्यतीत होती है; अहवी=ऐसा; दुराय=छिपाकर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बारता

[तरां] मांगळ कहै—महाराज सारा साथ नै बूझीजै। पछै दाय आवै जोई[1] काम कीजै।

सोरठो

भाट बचन भूपाळ, सोहड़ां बुझै साथ जै ।[2]
तेवड़ जुध रिणताळ, कहो भड़ां[3] कासूं करां ।।

बारता

[फेर] ऊकोजी कहै—पाटण आडो [तो] समंद बतावै छै। [हर] समंद आगै घोड़ा हर पाळा नाव मैं बैठ बैठ हर जावै छै। अतै साराई सिरदार कहो सो करां। [पिण] कोई इसी मत कहज्यो कछवाटजी तो छूटै नहीं, आपां पण मरां।[4] जोगीदासजी कहै—[5]

दूहा

पौरस धर परधान इम, दाखै जोगीदास ।
सार बजावां अनंत सिर, बसस्यां सुरपुर बास ।।

दाखै जोगीदास इम, पौरस धर परधान ।
बिण माथा[6] सूं उठ भिड़ां, खड़हड़तै असमान ।।

सोरठो

करां स्याम चो काम, मरस्यां केई मारस्यां ।
नभ धरती लग नाम, जातै जुगे न जावसी ।।

बारता

[तरां] जोगीदासजी कहै—ऊकाजी, अतरी सला कांही कीजै। होणहार छै सोईज होसी, पण चढ़ चालीजै। आगै समंद बतावै छै तो दूर देसां। मरबावाळा मरजासी पण गढ़ तो उरो लेस्यां।

---

१. सा, २. साथ सब, ३. कहो वडां, ४. कैवाटजी ही नहीं छुटै नै आपां पीण मरां, ५. तरां जोगीदासजी फोजदार छा जीगां सुदा सारा ही सीरदार कहता हुवा, ६. मुडा,

---

जोई=वैसा ही; सोहड़ां=योद्धाओं; तेवड़=प्रारंभ कर; पाळा=पैदल; पण=भी; पौरस=पौरुष; सार=तलवार; बसस्यां=निवास करेंगे; खड़हड़तै=युद्ध में उत्पन्न ध्वनि से युक्त, गिरता हुआ;

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तरां भाट मांगळ कहै – जोगीदासजी, थां ऊपरै भुज भार छै, जिसी हीज कही। पण पाटण मैं देखी छै जोर की जायगा नहीं। अनंतरायजी आपां सूं दगो कीधौ छै तो आपां नै छळ वळ कर पाटण [मै] जावणो। पछै वण आवै जो ही उठै कर बतावणो।[1] [तरां फेर] मांगळ कहै—

सोरठो

बातां तणा बमेक, बाळा बाधारण करै।
इसौ किलो नह अेक, अबखी पाटण ऊकड़ा॥

बारता

[और] पाटण मैं देखी छै जो लड़ियां तो किण ही दाव आवै नहीं।[2] हर घोड़ा पांणी मांयलो गूदळो खावै छै, जो कोरड़ दोब ले जावां तो छळावै सही। आसाणी-सुत[3] जोगीदास कहै—

सोरठा

आ तो पाटण अेक, मांगळ तू गाढ़ी सुणै।
इसड़ी भांज अनेक, अह लाऊं गिरनारपत॥

कहै लंक कहवाट, बाट करूं तो दध विचै।
झटकां अरदां[4] झाट, अह लाऊं गिरनारपत॥

दूहो

इसौ चढ़ूं अणचित रो, प्रगट दिखाऊं पांण।
अनंत कबीला अनंत रा, घाल पिलाऊं घांण॥

---

१. देखावणो, २. कीणी ही रीत नहीं आवै, ३. ईसी सुणता, ४. हरि दलि,

---

स्याम=स्वामी; चो=का; बूर देस्यां=पाट देंगे; जोर=ताकत, बल, बराबर की; जायगा=स्थान, जगह; बमेक=विवेक; बाळा=राजपूतों की एक शाखा विशेष; बाधारण=तोड़ें; अबखी=विकट; गूदळो=पानी में पैदा होने वाले एक प्रकार की घास का नाम; कोरड़=डंठल, पत्तों सहित मक्की या ज्वार का डंठल; दोब= दूब; आसाणी-सुत=आशा का पुत्र; दध=समुद्र, दधि; झटकां=प्रहार; अरदां=अरियों, शत्रुओं; अणचित=अचानक; पांण=पराक्रम; कबीला=परिवार; घाल=डाल कर; पिलाऊं=पेलूं; घांण=कोल्हू;

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बारता

[जदि] मांगळ कहै—

दूहो

तूं असर्‌या सारै तीसौ, सुण हो जोगीदास।
कह मांगळ क्यूं नीसरै, भड़ तो जिसड़ा बास॥

बारता

मांगळ कहै—बाप ! बाप !! जोगीदास तू कहै जितरी सांच कर बतावं[1]। पण पाटण मैं देखी है, दगां बिनां हाथ[2] नहीं आवै। और फौज वेई[3] सुणै तो अनंतरायजी नाव पाछी खचाय लेवै। हर गाडां मै रजपूतां नै बैठांण ऊपरै घास चुणाय ले जावां तो कोरड़ी ही तरवार वहसी। हूं कहूं जिण बात रो बाद तो नहीं कीजै। [हर] दावै ज्यूं ही कर बैरीन तो मार लीजै। [तरां] ऊकाजी कहै—

दूहो

मांगळ सी डरपै मती, दाटां पाटण दाय।
कै आणां कहवाट सी[4], मरां तो पाटण माय॥

बारता

[तरां] ऊकौजी कहै—और तो क्यूं ही मत धारो। मांगळ कहै जो गाढ़ी ही विचारो। और तो सारा ही कीजै। [पिण] जैसो टाबर छै जणी नै खबर मती दीज्यौ। [तरां] मांगळ कहै—

दूहो

ऊका बालक अखियै[5], जिम नाहर सुत जांण।
ढहतो अंबर ढाबवै, जिसड़ौ भड़ जैसांण॥

---

१. दिखावै, २. जावणी, ३. बंदी, ४. कैवाट नै, ५. उका बाल नै आखीये,

---

असर्‌या=असिद्ध; सारै=सिद्ध; तीसौ=ऐसा; वेई=लिये; बाद=विवाद; दावै ज्यूं=चाहे जैसे; मती=मत; दाटां=दवा देंगे; दाय=दाव लगा कर; जैसो=कहवाट का पुत्र-जैसा या जसराज; टाबर=बालक; अखियै=कहिये; ढहतो=गिरता हुआ; ढाबवै=थांमता है, रोकता है; जैसांण=जसराज सरवहिया;

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोरठो

जहर खाग नद जोख, नाहर नाग[1] नराधपत ।
रिख अगंन बल रोख, ऊका नहं छोटा इता ।।

बारता

अेक तो जैहर, खाग, नद, जोख, नाहर, सांप, राजा, रिख, अगन, रोख[2] अतरां नै छोटा तो नहीं जाणजै । आं रो तो पराक्रम हीज पछांण जै । जैसा नै ठीक हुवां आपां पहली[3] जावसी । उठै जाय हर तरवार बावैलो[4] तो आंपण दगो बिगड़ जायसी । [तरां] ऊकोजी मांगळ रो बचन मांन लीधो । जैसाजी रा मैहलां तळै जाय नै हेलो दीधो ।

सोरठो

जद महलां तळ जाय, ऊकै वचन[5] आखीयै ।
आव रै जैसा आय, करै सिलह कहवाटउत ।।

बारता

तरां जैसाजी नै ऊकैजी अेक दोय[6] हेलो दीधो । तरां जैसोजी तो सूता छा, सो क्यूं ही ग्यांन नहीं कीधो । तरां ऊकोजी पाछा आय हर मांगळ नै कहै--जैसो नहीं बोलियो । लज खाय र्यो । [तरां] मांगळ कहै--

सोरठो

जैसो रह लज खाय, स्रवणां हेलो न सांभळै ।
अंबर पड़ै धर आय, धर पांणी भेळा धसै ।।

बारता

मांगळ थे कही सो तो सारी ही ठीक छै । पण [यक जणा नै तो अठै ही रखावां हर] ओ ओखांणो छै जो अेकै घर रा दोय जांन ही नहीं जावै छै । अतरा समाजोग मै

---

१. नागद, २. रोस, ३. पली, ४. वुही, ५. बचनज, ६. यक ही,

जोख=जोंक; नाहर=सिंह; रिख=ऋषि; अगंन=अग्नि; जैहर=ज़हर; रोख=रोष; ठीक हुवां=पता लगने से; बावैलो=चलावेगा, दगो=छल; सिलह=कवच, हथियार; लज खाय=संकोच कर रहा; स्रवणां=कानों से; ओखांणो=कहावत; जांन=बारात;

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गाड्यां[1] हजार अेक मंगाई। तकै कोरड़ दोब सूं भरे'र हाजर लाया।[2] और नगारची नगारै चोब दीधी। हर आपका चढ़बा की ताकीद कीधी। घोड़ां री कळहळ होबा लागी। [और] आरबी तासा बागा। जद मांगळ जाण्यो जैसो सूय रयो आयौ नहीं।[3] जद जैसाजी रा महल तळै जाय हेलो दीधी—

सोरठो

नीधसिया नीसांण, सुणै नहीं बोळी सबद[4]।
जैसा थयो अजांण, फूटा कान कवाटउत॥

बारता

[तरां] जैसे जागे नै कही—मांगळ थे कही कह्यौ? ऊकोजी अनंतरायजी ऊपर चढ़ै छै। जिण दिसा हेलो दियौ। [तरां] जैसो कहै—वाह! वाह!![5] आछो अवांण[6] दीधौ। मांगळ म्हारा[7] पीळा आखा रो सो जिसौ ही काम उपगार[8] कीधौ। ऊकोजी भांणेज छै जिको ही मामा री बाहर[9] जावै छै। हर हूं तो कछवाटजी को [सगो] बेटो, मोसूं अठै कींकर रयो जावै। इसी कहे'र आपको डेरो मंगायो। [सो पूरी] सिलह करे'र ऊकाजी कनै आयो। नै कही–वाह, वाह, दादाभाई! आ कांही [सलाह] कीधी। आप तो पाटण नै चढी छो, मोनै खबर नहीं दीधी। हूं तो अठै लाख ही बात नहीं रह जावतो। जदी ठीक पड़ती जद ही पूठ आवतो। इसी भोळी बात[10] नहीं कीजै। [और] आपका नजदीकी होय ज्यांनै तो पांच दिन पैलां खबर[11] दीजै। इसी कहै नै घोड़ा मंगाया। सोना री साखत करै नै चाकर हाजर लाया। जिकै इसड़ा छै[12]—

दूहो

जिके चित्रांमां जेहड़ा, घोड़ा इसड़ै घाट।
उड़ता पंखी आपड़ै, बह पुळ कोसे वाट॥[13]

---

१. गाडां, २. भराय हकाया, ३. जद मांगळ सु रह्यो नही गयो, ४ सद, ५. तरां जैसो कहे भाह मांगळ, ६. अवसांण, ७. हर तुमारो, ८. वुपकार, ९. वार, १०. इसो भोळाय कदे ही, ११. ठीक, १२ जेके घोड़ा कीसड़ाक है, १३. बह पल सो बाट,

---

चोब=डंका; कळहळ=कोलाहल; नीधसिया=बजे; नीसांण=नगारे; बोळौ=बहरा; कही=क्या; अवांण=निमत्रण; आखा=अक्षत; बाह=सहायता के लिये; पूट=पीछे-पीछे; साखत=काठी, जीन; चित्रांमां=चित्र; जेहड़ा=जैसे; घाट=प्रकार; आपड़ै=पकड़ते हैं; बह=चलते हैं; पुळ=पल, क्षण;

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कवित्त

सपतासा सारसा, पळक आरीस पसंमां ।
भरिया नाली भाथ,[1] चमक बीजळां चसंमां ।।
कान कलम केवड़ा,[2] डांण अघांण[3] सदेता ।
सुकांहां हाथी सम अेह, लाल लाख मोलंता ।।[4]
बाळछा चमर उर ढाल बण, पमंग अयाळो पेखिये[5] ।
वाटका पौड़[6] नच थाल बिच, दांमण फिरता देखिये ।।

बजर पौड़ बाटका, चमर झाटका पछोटा ।[7]
हाथी पीड़ हय राव, छजे गाळां अत छोटा ।।[8]
खंध अेहवा[9] कूकड़ा, केवड़ा फाड़ कनोती ।
धरळ[10] खंच धानंक, पसम जांग[11] गलमा पोती ।।
पंखराव धाव इसडा पगां, जुध नराज सनमुख जुड़ै ।
कळ दव्या राग दपटण करै, उड़त घाद पहली[12] अड़ै ।।
चलै पवन चांपता, कहर चाबता कड़ाळा ।
केस पंख्यां कांपता, छिवै जापता छड़ाळा ।।[13]

---

१. भरत, २. केकांण, ३. मृगांण, ४. लखां लख मोलस लेतां, ५. पनग पाल जीम पेखीयै, ६. पाव, ७. नर नीघाट का नीछोटा, ८. उरढ ढाल वाटका, चमर भाटका पछोटा, ९. ग्रीवा, १०. धभर, ११. जिण, १२. उड़त धुवा पल, १३. बडालां ।

कोसे वाट=कोसों का रास्ता; सपतासा=सपताश्व; सारसा=समान; पळक=चमक; आरीस=शीशा; पसंमां=बाल, केश; नाली=पैर की नली; भाथ=भथ, भाता; चसंमां=आंखें; कलम=काटना, छांटना, कान के ऊपर की कनपटियों के पास के बाल; डांण=चाल, छलांग; मृघांण=मृग; सदेता=भरने वाला; बाळछा=पूंछ के बाल; अयालो=अयाल; वाटका=बड़ा कटोरा; पौड़=पदस्थली; दांमण=दामिनी; वजर=वज्र; पछोटा=पीछे से; पीड़=पीड़ा; छजे=घोड़े की टांग में सुम व टखने के मध्य का भाग; खंध=स्कंध; अेहवा=ऐसा; कूकड़ा=मुर्गा; धरळ=पीठ; खंच=खींचा हुआ; जांग=जंघा; गलमा पोती=गद्दे की मुलायम चद्दर के समान जंघा के बाल; पंखराव=गरूड़; धाव—दौड़ने; नराज=एक आयुध का नाम; कळ=बंदूक का घोड़ा, दव्या=दबते ही; राग=आवाज; दपटण=लपकता है; कहर=जोश में, भयंकर; कड़ाळा=लगामें, छड़ाळा=भाले ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ललक राग लागियां, सळक बीजळी सळावां ।
मांकड़ जिम मलफता, जाण चक्री आव जावां ।।
धर कदम क्रोध धावां ध्रुवै, पड़ै फूट पाखांण रा[1] ।
सुभ गुण सुलछ लीधां सरब, दियण ठेक अगडांण रा[2] ।।

वारता

इसड़ा तो घोड़ा साथै लीधा । और किसाहेक सिरदार साथै त्यारी कीधा । धणी रै काम टूक टूक हुय जावै । [और] कजिया रै बगत [ज्यानै] ओछाह सूं आवै । जिकै तरवार बावतां[3] पाछौ नहीं झांकै । [और] स्याम रै काम काया[4] काच सीसी ज्यूं फौड़ नाखै । जिकै काळी रा कळस [5], सती रा नारेळ कहावै । जातां मरतां रा साथी निजर आवै । गऊ बिरामण रा पाळणहार[6] । दोखिया री छाती[7] मै आग सिलगावणहार[8]। दुसमण की छाती मैं सेल को सो साल । [अर] धणी रा मूंढ़ा आगै बजर की ढाल । जिकै जाता काळ सूं जखड़ी करै । नरदेव नाग कुणी सूं न मरै[9] । जिकां नै रैकारो ही गाळ सो लागै । माथै तिणो मेल्या लायसी [उठ] लागै । साथे लीधा इसड़ा रजपूत । जिकै जुव रै बखत मेर सा[10] मजबूत ।

सोरठा

लीधा जो भड़ लार[11] अेक अेक सूं आगळा ।
ज्यूं कप[12] भाळ जुझार, हर लीधा रावग हथण[13] ।।

---

१. धरै कदम क्रोप ध्रुव ध्रुव जीसुं, पड़ै फूट भाखाण रा ।, २. मोडाण डाण झांफै मलफ; बीडंग इसा बखांण रा ।।, ३ भावता, ४. देह, ५ वेहड़ा, ६. प्रतिपालण ार ७. हीया, ८. आग सी बालणहार, ९. न डरै, १०. सुमेर सा, '११ लीना जोवड़ लार, १२. कपि, १३. हरि लीनां रावण हथाण,

---

सळक=बीजली की कौंध की तरह; सलावां=लपटें, चमक; मांकड़=बन्दर; मलफता=उछलते; ध्रुवै=बहते हैं; पाखांण=पाषाण, पत्थर; ठेक=टप्पे से कूदते हुए; अगडांण=मृगों की दौड़; कजिया=युद्ध; ओछाह=उत्साह, उमंग; स्याम=स्वामी; दोखिया=दुश्मनों; सेल=भाला, साल=घाव; बजर=वज्र; झखड़ी=विवाद, झगड़ा; रैकारो='रे' की आवाज करके पुकारना, तुकारा देना; तिणो=तृण; मेर सा=सुमेरू पर्वत जैसा, पहाड़ जैसा; आगळा=वढ़-वढ़ कर; कप=कपि, बन्दर; भाळ=भालू; हर=श्रीराम; हथण=मारने के लिये;

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कवित्त

सुहड़ बड़ा दस सहस, लिया इसड़ा भड़ लारां ।
राम लिया कप रींछ[1] , जोध लंका परजारां ॥
रातंबर रथ[2] राह, बिखम रोकै[3] जद बाटां ।
ईसा घोड़ा भड़ ईख,[4] बजर[5] पेलै खग झाटां ॥
स्याम रै काम जावै सधर, पिसण पेल थाटां परै ।[6]
बळ होय माग समंदर बिचै, कळह दैत हूँता करै ॥
भाला झल भूतांण, हलै दियण[7] हटाळा ।
बिकट[8] ग्रेम बानैत, लड़ण काज लंकाळा[9] ॥
आखै कोय[10] अनंत, पगां गळ लोह् पैरावां ।
पाटण नगरी परा, हल गढ़ पाड़ हंकावां ॥
इम करै जोस लागा उरस, रोस धार रजवाट रो ।
ऊजाळो आज जग ऊपरां, करां लूण कहवाट रो ॥
भड़ बंका बानैत, जोध लंक लूटण जेहा ।
निडर सिंह नखतैत,[11] अप्रबल पंडव ग्रेहा ॥
आपै रिण[12] औछाव, धसै सनमुख खग धारां ।
राज दंतां दै[13] घाव, हकै[14] अरिपाल हजारां ॥
भिड़जांम[15] उरस छिबता बहै, जोध चसम[16] बीजूजळा ।
कर जोस[17] चढ़्या पाटण कजै, अेक अेक हूँ आगळा ॥

---

१. कपि राज, २. रो, ३. ऐक, ४. इसड़ो भड़ हुयक, ५. जबर, ६ कीण समै गयण धर दीस खीस, पेल हथां ढावै परै, ७. दइवांण, ८. बकटै ९. लडण कजि जाएै लंकाळा, १०. कोप, ११.नवन, १२.मर, १३.गज दंतां देव, १४.हेक, १५.भड़ जोम, १६.बसम, १७.रोस,

---

सुहड़=योद्धा, सुभर; परजारां=जलाने के लिये; रातंबर=सूर्य; बिखम=विषम; बाटां=मार्ग; पेलै=नष्ट करते हैं; झाटां=प्रहार; पिसण=शत्रु; थाटां=सेना; परै=दूसरों की; माग=मार्ग; कळह=युद्ध, दैत=दैत्य; हूँता=से; झल=ज्वाला; भूतांण=भूतों के समान; हलै=चलती है; हटालां=हठियों; बानैत=धनुर्धारी; लंकाळा=सिंह; गल=गला; लोह्=जंजीर; पाड़=गिराकर; हकावां=चलायेंगे; रजवाट=रजपूती; लूण=नमक नखतैत=नाखूनों वाले; पंडव=पांडव; अरिपाल=शत्रुपालक; भिड़जांम=घोड़े; छिबता=स्पर्श करते हुए; बहै=चलते हैं; चसम=आंखें; बीजूजळा=बिजली युक्त ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूहो

जोध जिकै दरजोध रा,[1] पलटै कदै न पाव ।
सिर ऊपर रूठा फिरै, रंग दै राणा राव ।।

वारता

अतरा समाजोग मैं नगारची तो नगारै डाको दीधो । हर ऊकैजी'र जैसेजी पागड़ै पग दीधो । आरबी वाजा बाजै छै । बड़ा राग मैं पांना[2] लागै छै । इसी रीत सूं सहर वारै आया । [सो] आंरी सोभा देख नै मांगळ बिरदाया—

कवित्त

नीर चढ़ै नवकोट, धरै[3] भड़ रोस धिगारां ।
चढ़ अरियां धरचाक, नाद त्रांबाळ[4] नगारां ।।
जाय[5] ऊको जिण बार, आज[6] सिर अनंत अकाजा ।
कायर उर कंपणी, सुरां मुख नूर सकाजा ।।
चहुं दिस बगुल हय खुर चढ़ै, गयण तूल रज गाड़िया ।
इण भांत[7] कमध ऊका अडर, चढ़तां अतरा चाढ़िया[8] ।।

सोरठा

रावण ऊपर राम, कंस ऊपर जांणै किसन ।
सिव दिख ज्याग संग्राम, इण बिध चढ़ियो ऊकड़ो ।।

कौपे राम[9] कंठीर, मद भांजण गजराज मन ।
भमंग पीठ[10] पग भीर, इण बिध चढ़ियो ऊकड़ो ।।

---

१. दास जीके दुज दीन रा, २. दूहा, ३. धीर, ४. त्रांबागल, ५. जय, ६. अजय, ७. अण भंग, ८. चढ़ै तै येता चाढीया, ६. जेम, १०. पुछ,

---

दरजोद=दुर्योधन; डाको=डंका; पागड़ै=घोड़े की जीण के दोनों ओर लगे पायदान । पांना=शहनाइयों के पाने; भड़=योद्धा; रोस=क्रोध; धिगारां=क्रोध में धधकते; धरचाक=सेना; त्रांबाळ=नगारे; अकाजा=कार्य हेतु; बगुल=वायु का बवण्डर; गयण=आकाश, गगन; तूल=धूल का बवण्डर; कमध=कमधज, राठौड़ों की एक शाखा; दिख=दक्ष; ज्याग=यज्ञ; कंठीर=सिंह;

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बारता

दूहो जैसा रो[1] —

सोरठो

रीस करै खग राज, अहि कुल खोवण ओपियौ ।
अनंत दळां सिर[2] आज, इण बिध जैसो आवियौ ।।

बारता

इसी रीत सूं चढे'र चलाया, सो कोस दोय ऊपर गाडा कनै आया । गाडा नै साथ नै कूच दर कूच चलाया[3] । सो दिन पांच-सात मै समंद री खाड़ी रै तट आया[4] । [सो] उठै डेरो करे नै आपका सिरोपाव तो उतार दीधा । हर जाटां रा सिरोपाव कीधा । दस दस हाथ का पोतिया हर [वास की] डांगा मंगाई । पांच पांच पलां रा बागा हर दुपटी धोवत्यां कराई । इण भांत ऊकाजी री लार दस बीस सिरदारां[5] जाटां रा सिरपाव बणाया । सो घास रा[6] पूळा हाथ मै ले'र नाव मै बैठ हर चलाया । पार उतरै दरवाजै आया । पोळियै मालम करी, जद बैठां छा जटै ही बुलाया ।

दूहो

कर डांगां धोती करै, जाट रूप कर जांम ।
ऊकै कियौ अनंत नै, रांम रांम जी रांम ।।

बारता

इसो राम राम कर नै ऊकैजी कयौ—समादुया छो सरदार । ओ[7] जाटां रो बचन सुण अनंतरायजी हँसिया अपार । जद ऊकैजी कयो—मैं जाट मोकळ मुवा छां । म्हांरा कया रो रोस मती कीज्यौ । हर म्है तो हाथां री कमाई करां, जो देख लेज्यौ । जद अनंतरायजी [जाटां नै] बूज्यौ—थे कठै रो हो । थांरा देस रो हर गांम रो नांम कोहो । [तरां] ऊकोजी कहै—म्है तो मालवा देस रा पटेल छां । म्हांरी जात जाट छै

---

१. जेसो कीसडोक है, २. परि, ३. खडीया, ४. समंद रै कांठलै जाय पडिया, ५. आदम्यां, ६. पनरा वीस, ७. इसो,

---

भमंग=सर्प; अह=अहि, सर्प; अनंत=अनंतराय; पोतिया=साफे; डांगा=लाठियां; पलां=पल्ले; बागा=अंगरखे; दुपटी=दो पट्टियों; धोवत्यां=धोतियां; पोळियै=द्वारपाल; समादुया=अस्वस्थ; मोकल=मुक्त; मुवा=मुंह के; रो हो=रहते हो;

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओर मालवा मै तुरकांणो[1] छै। सो म्हांनै दुख दै छै। निराट म्हांरो मांचो राली दूध दही रैवा नहीं पावै। इण दुख आगे म्हांसूं रहणी नहीं आवै। ओर आपका देस[2] मांही सुख घणो बतायो। जिण सूं कबीलो डेरो गाडां मै[3] घास घाल लायो[4]। हजूर आयो। आप बतावसो जठै ही खेती करसां। आप नै हजारां रुपिया रो हासल भरसां। जदी ऊकैजी घास रा पूळा हाथ मै ले'र आपका साथ नै मांहोमाय बतलाया। देखां, राजा रा घोड़ा घास खावै छै'क नहीं खावै छै। इसो घास देख सांखलां घणी सरायो। अनंतरायजी कयो—इसो अनोपम घास कठां सूं लायो।

तरां ऊकैजी कही—आप रै दाय आयो[5] छै तो म्हांके कनै घास छै, जो घोड़ा नै भलां ही चरावो। ओर हूं परभाते घास रा गाडा लाऊं जो परभाते दरवाजै अपल परवांनगी दिरावौ[6]। जद दरवाजा री अपल परवांनगी कीधी[7]। हर जाटां नै डेरा नै सीख दीधी। अतरी बात करै'र ऊकोजी डेरै आया। ओर ताछ-ताछ रा भोजन[8] करै'र साथ नै जीमाया। इसी रीत सूं रात नै तो डेरां दिया[9]। परभात रा उठ दातण कुरळा किया। गंगा जळ सूं सिरदारां सनांन कीधा। सोळै ही प्रकार रा बीरांमणां नै दान दीधा। ओर भागवत भारथ बचवाया। हर तुलछी का मंजर सीस पर चढ़ाया। ऊकैजी जैसेजी अमल गळवायो सो तासळौ भरै नै चाकर हाजर लायो।

दूहा

अमल उठायो ऊकड़ै, पौरस धर करपांण[10]।
करौ भड़ां कहवाट रा, जद मन मरणो जांण ॥

मरां तो जग सिर ऊबरां, बरै अछर इण बार[11]।
ज्यां अपजस छै जीवतां, तो जीवियां ध्रकार[12] ॥

---

१. तुरकांणी, २. मुलक, ३. डेरो डांडो, ४. लै नै, ५. लागो, ६. करावो, ७. कराई, ८. जीमण, ९. रातन तो सोय रया, १०. पोरस कर धरिपांण, ११. अछर बरां उण बार, १२. ध्रकार,

---

मांचो=खाट; राली=रजाई; हासल=लगान; मांहोमाय=आपस में; सरायो=सराहना की, कठां सूं=कहां से, अपल=पक्की, पुख्ता; ताछ-ताछ रा=भांति-भांति के; भारथ=महाभारत; तुलछी=तुलसी; मंजर=मंजरी; तासळो=कटोरे नुमा बड़ा बर्तन; करपांण=कृपाण; ऊबरां=कल्याण हो, बरै=वरण करें; अछरा=अप्सरा; ध्रकार=धिक्कार;

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बारता

अमल उठायौ हर ऊकै कही—सिरदारां, चांद-सूरज रहै, जितरै बात जावै नहीं[1]। तरां परधान जोगीदासजी सहेत[2] सारा ही सरदार कहता हुवा-महाभारथ में कैरव-पंडव लड़िया ज्यूं लड़ां जुवा जुवा।

दूहो

ऊका तो आगै अडर, हुचक[3] दिखावां हाथ।
कैरव पंडव ज्यूं करां[4], भिड़ै खेत[5] भाराथ॥

ग्रीधण[6] देवां गूद गळ, माथो पेस महेस।
अचड़ करां बर अच्छरां, दाद दिये दस सेस[7]॥

ऊका तो आगै इधक, पाटण मथ[8] भुज पांण।
दध नै दांणव देवतां, मथियो घाल मथांण॥

खेलां कोरा खाग सूं, आडै लोह आरांण।
सोली न मेलूं सांखला, जद रजपूती जांण॥

सारा सिरदारां कयौ, छकि अमलां बक छैल।
तीरथ धारां भूलतां[9], गलां ऊबारण[10] गैल॥

बारता

इसी रीत सूं बातां करै छै। [नै] मूछां ऊपर हाथ फैरै[11] छै। इसी रीत से उरस छिबता देखै नै मांगळ कहै छै—

---

१. सही, २. सुधा, ३. हींचक, ४. लड़ां, ५. कुरखेत, ६. ग्रीभ्रण, ७. दाद लीया दस देस, ८. मथां, ९. भुलै तन, १०. ऊबारां, ११. घरै,

---

जुवा-जुवा=अलग-अलग; हुचक=उछल-उछल कर; खेत=रण-क्षेत्र; भाराथ=युद्ध; ग्रीधण=गिद्धों को, गूद=मांस, गळ=भोजन; पेस=पेश करेंगे; अचड़=उत्तम कार्य, कीर्ति; मथ=मथना; पांण=शक्ति; मथांण=मथनी, रई; लोह=शस्त्र-प्रहार; आरांण=युद्ध; सीली=शिथिलता, ढिलाई; बक=बांकुरे; छैल=शौकीन; धारां=तलवार की धारा; भूलतां=स्नान करते हुए; गलां=कहानी; ऊबारण=बचाना; गैल=मार्ग; छिबता=छूते हुए;

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूहो

अमल किया परधान ओ, दूणो जोगीदास ।
मुख सूरज आरण मंडे,[1] पोहो मंड जोत प्रकास ।।

दूणा डौढा चौगणा, अमल किया अणपार ।
ओप सोगुणा जोस अंग, जिण बिरियां जोधार ।।

बारता

तरां जैसोजी कहै—दादा भाई, अतरी सला कांही कीजै ।[2] ओर सिरदारां नै तो गाडा मै बैठाणजै, नै वेगा सा भरावौ । तरां जैसाजी नै गाडां मै बैठाणै'र आठ आठ सिरदारां नै अेक अेक गाडा मै बैठा चुतराई सूं घास चुणायौ ।[3] सौ गाडा नाव मै मेले दोय दोय जणा साथै होय हर खड़िया ।[4] गाडा नाव सूं उतारे दरवाजा नै खड़िया जावै छै । तिणां रौ घास देखे'र सांखला घणौ सरावै छै । गाडा दरवाजा मै आया नै पोळियै गाडा घणा जाणै'र बरछी बाही । सो कंवर जैसाजी रै साथळ फूटै नै दोनूं ही पसवाड़ां दरसाई । तरां जैसैजी जाण्यो लोही सूं भरी बारै जावसी, तो म्हांरो दगौ बिगड़ जावसी । जदी आपका दुपटा का पला सूं बरछी रौ लोही पूंछ लीनौ । पोळियै सेल काढ़ लीनौ । सेल काढे नै देखै तो धोळौ निजर आयौ । जद बोलियौ नहीं, नै मन मै नहंचौ आयौ ।

सोरठो

बायो सेल बिचार, साथळ फूटै नीसर्यौ ।
सो पट पूंछ सवार,[5] आवण बारै यूं दियौ ।।[6]

बारता

इसी तरै[7] सूं गाडा लै'र दरबार आयौ । सो राजा अनंतरायजी घास देखै नै घणो सरायौ । फेर अनंतरायजी कहै—चौधरियां, म्हारां घोड़ा नै ओहीज घास चरावसो, तो थारां घास रौ गरथ परो देस्यां,[8] हर [घणी रीझां] इनामां पावसो । [तरां] ऊकैजी

---

१. मुख सूरज ज्यूं अरूण मंडे, २. कांई करावौ, ३. चतुराई सु भरैलो, ४. खड़ दीया, ५. सावर, ६. आवण बाहर दीध इम, ७. इण रीत, ८. दीरावस्यां,

---

आरण=युद्ध; पोहो=पृथ्वी; बिरियां=वेला, समय; खड़िया=चले; साथळ=जांघ; पसवाड़ा=पार्श्व; नहंचौ=विश्वास, निश्चय; ओहीज=यही, इसी; गरथ=मूल्य;

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कही– माहाराज, ई घास सूं घोड़ां रै दूणो मच चढ़सी। नै घास आछा बुरा री तो गाडा खोलियां खबर पड़सी। ऊकौजी कहै—घास नांखण नै जायगा बतावौ।

तरां अनंतरायजी कहै— सांमली बागर मैं ले जावौ। जद ऊकौजी गाडा बागर मैं लाया। बंदणा ढीला करै नै अेक साथै गाडा हजार ऊंधाया। गाडा ऊंधावतां मांय सूं सिरदार तरवार पकडियां हीज ऊठीया। सो जांणै कजळी वन रा हाथियां पर केसरी सिंघ छूटीया। कना आकास रै मारग तारा सा तूटीया। कना बीरभद्रजी सागण[1] [वीर] जूटीया। कना काळजवन ऊपरै मुचकंध री आंख ऊघड़ी। कना अचांणक गयणाग हूं बीज पड़ी। कना [मयंत] हाथ्यां रा जूथ पर अनळपंख आया। कना गजराज री वाहर श्रीनारायण धाया।[2]

दूहो

कुलफ खुली चीतां कना, दीठा हीरणां डार।
हाथ्यां ऊार[3] हालिया, सिंह सादूळ सिकार॥

कवित्त

खागां ताम खणक, चलेक चौसठ चिरताळी[4]।
जांझर रंभा झणक, कणक चाख प्रत्तकाळी[5]॥
चाचर सूरां चणक, वणक[6] भैरव बंब्राळां[7]।
घूघर बावन घणक, सणक हद चलै सराळां॥
भणकिया सूं[8] कंगळ भळळ, टांम त्रमाकां ठगकिया[9]।
तणकिया सूर यूं घावतन, परणण रंभा परखिया[10]॥

बारता

तरां ऊकौजी कहै—भाई-भाई[11] रजपूतां इसी कीज्यौ। अनंतराय नै मारणो नहीं। हर जीवतो पकड़ लीज्यौ। ओर ओ काम आवैलो तो इण री बात रह जायली। अनंतराय मैं कुपीत करणी है, जो मुवौ तो नहीं हुवैली[12]। आ सुणै मांगळ कहै—

१. साघणां, २. चलाया, ३. हंदी, ४. रणंक चौसर चीरताळी, ५. कणंक चोष्ट पत्रकाळी, ६. भणंक, ७. बंबराळा, ८. सुर, ९. ठांम ठांम त्रंब ठणंकीया, १०. तिण कीया सुर उछव त दिन, घरणण रंभा पणकीया, ११. नाइ भाइ, १२ ओर अनंतरायजी मैं कुपीत ही न्ही करणी आवैली,

नांखण=डालने की; सांमली=सामने की; मच=मस्ती; बागर=घास के ढेर; सागण=स्वयं; ऊघड़ी=खुली; गयणाग=आकाश; कुलफ=बंधन; कणक=रक्त; चाचर=मरतक; सराळा=बाण; कुपीत=प्रतिकार; दुर्व्यवहार;

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोरठो

इसड़ी बात अजब्ब, करी न कोई फिर करै[1] ।
गाडां भरै गजब्ब, आण उलाळी ऊकड़ा ।।

दूहा

उलटा गाडा आविया, आडै लोह अरांण ।
जमदाढां खांडां जकड़, मचियौ घाण मथांण ।।

गाडा खूटे खग ग्रहे, ऊठै भड़ अणपार[2] ।
जूटै झड़ खागां जबर, धर रत-श्रोणी धार[3] ।।

बारता

इसी रीत सूं तरवार वहै छै। हर मूढ़ा सूं मार-मार कहै छै। और ऊकाजी रा बेली गढ़ मै कहवाट री आंण कढावै छै। हर तरवार वावै छै। सो [कैंवाटजी री] आंण सुण नै किळादार अभैसिंघ नै [इसो] रोस आयौ। सो जीणै बळती लाय माहै घीरत ऊंधायो।

दूहो

अभैसिंघ उपडांखियौ[4], कर झालै कैवांण ।
मो ऊभां गढ़ मांय नै,[5] और फिरै किम आंण ।।

बारता

और किळादार किला रै [साथै] सौ दोयसै सिरदार छा, जो तो जाय जुटिया। और भाई-बेटा आप-आप री रैवास मांय सूं तरवार पकड़्यां हीज उठीया।

---

१. कालि मैं करी नै फेर करै; २. उलटे गाडा खग ग्रहे, उठै भड अण पार, ३. बुठे झड खाग बजर, धर रत स्रोणां धार, ४. यमसेन यम भाखियौ, ५. रै मही,

---

उलाळी=उलट दी; जमदाढ़ां=कटारें; खांडां=तलवार; मथांण=उलट-पुलट; झड़=प्रहार; रत=लाल; श्रोणी=रक्त; बेली=साथी; लाय= अग्नि, ज्वाला; घीरत=घी; उपड़ांखियौ=उखाड़ा; झालै=लेकर; कैवांण=कृपाण; जुटिया=भिड़े; रैवास=आवास;

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूहा

ऊठचौ बंधव अनंत रो, नीडर गोपीनाथ ।
आयौ सांमो आवतां, भिड़ करतो[1] भाराथ ।।

आप[2] महल बैठो उठै, कंवर भंवर किसनेस ।
सुण हाको दोड़ै सरस, बीहद चढ़ती बेस ।।

इकदांई उठिया इसा, सांईना सिरदार ।
काढ़े अइ खागां करां,[3] जुटै आण जूझार ।।

वारता

भाई बेटां रजपूतां नै अनंतरायजी कहै छै—देखां किसड़ीक तरवार वाहो छै। इण गढ़ मांहै तो आण बड़िया छै। सो पाछा चोढ़ छाती हर बारै किसायक ले जावो छौ। इसौ कजियो करो जो सूरज रहै जतरै जगत सरावै[4] । आज रा कजिया री बात [जातां] जुगां नहीं जावै ।

दूहो

इण बिध बोल्यो अनंत, भड़ व्है[5] ज्यो भल्लांह ।
कर ढालां कैवांण ग्रह, हुइ हल्लां हल्लांह ।।

वारता

अठी सूं ऊकाजी रौ साथ हर उठी सूं अनंतरायजी रौ साथ आयौ। सो राय आंगण बीच [आय नै] भचाको खायौ। जठै कतराक सूरा तो तरवार बावै छै। कतराक सूरा गुरजां चलावै[6] छै। उसस उसस हर कटारयां जड़ै छै। सो जांणै इन्द्र का बज्र कोड़ कोड़ पड़ै छै ।

सोरठा

फट माथा धड़ फाड़, खाग राड़ मै इम खिरै ।
बज्र[7] इन्द्र बेछाड़,[8] पाहड़ ऊपर जाण पड़ ।।

---

१. जुठण, २. आय, ३. काटे उनगी खग करो, ४. सुरज हात सरावै, ५. होई, ६. जड़ै, ७. बर, ८. वेब्राड़,

---

भाराथ=युद्ध; बड़िया=आ घुसे; चोढ़=चढकर; कजियो=युद्ध; भचाको=टक्कर; गुरजां=गदा; उसस उसस=उछल-उछलकर;

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जोध अड़ै जिणवार, जड़ै दूठ खागां जकड़ ।[1]
पड़ै सीस अणपार, दड़ी दौट जाणै दियो ।।

दूहा

हड़हड़ रिख नारद हंसै, ग्रीध झड़ाफड़ खाय ।
बड़बड़ धावां बोलतां, जुद्ध लड़ै भड़ जाय ।।

भरळक इम[2] भाळा बहै, परळक निकसै पार ।
बरळक धकधकती बिचै, धर[3] खरळक रत धार ।।

सोरठा

घावां हिक घटकाह, हुय बटका दूरा हुवै ।
राड़ तणा रटकाह, अटका जांणै ऊतरै ।।

बज डंका जिण बार, मन संका मानै नहीं ।
जुध बंका जूझार, जुड़ लंका कप भाल जिम ।।

दूहो

ग्रीध गहका[4] गज्जिया, बजिया डंक महेस ।
तजिया कायर खेत तद,[5] मन रंजिया मुनेस ।।

वारता

इण समै मांय कंवर किसनेस[6] तरवार बावै छै। जिण सूं भड़ां रा दो दो टूक होय जावै छै। तिणां नै देख नै गोवरधनजी महियारियो सरावै छै –

दूहा

कजियो इम कीधो[7] कंवर, जग भारत भड़ जेम ।
बड़का खागां इउ बगै, टाबर ढूंढण तेम[8] ।।

---

१. जटक, २. सेम, ३. बधर, ४. पहका, ५. प्रांण तदि, ६. किसनसिंघ, ७. जुटो, ८. टाट ढंढ तेम,

---

दूठ=बहादुर; दड़ी=गेंद; दौट=डंडा, बल्ला; हड़हड़=अट्टहास; झड़ाफड़=चीर-फाड़कर; भरळक=भळभलाते; परळक=दमकते हुए; बरळक=बड़ा घाव; खरळक=खळ-खलाहट की ध्वनि; घटकाह=पिण्ड; बटका=टुकड़े; राड़=लड़ाई; रटकाह=शोरगुल; गहका=ध्वनि; गज्जियां=गरजते हुए; डंक=डंका; मुनेस=नारद; बड़का=चोट; बगै=बजती है; ढूंढण=होली के दूसरे दिन मनाई जाने वाली एक रस्म;

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कंवर अनै ऊका तणा, सुभड़ लड़ै संग्राम ।
हुय लथोबथ हाक हुय, होळी ख्याल हंगाम ।।

बेढ[1] चढन्ता बेसभळ,[2] करै लोह किसनेस ।
मूछां रा बुहार मिल, दाद दियै दस देस[3] ।।

बारता

सूरा तो लुथबुथां होय नै तरवार बावै छै। जिण सूं फूठरा चाचरां रा[4] फाचरा होय जावै छै। जके माथा लोही में चौफाड़ होय नै पड़िया छै। जके जांणै सुरसती नदी मांहै कमळ उघडिया छै। कतराके तो सूरां रा माथा धरती तूंबा सा पड़ै छै। धड़ जके मांहोमाय खागां अड़ै छै। तरवारचां रा कड़ाका[5] माथां मैं लागै छै। जको जांणै होली का ख्यालां मैं खांडा का कड़ाका बागै छै। घणां रा फीफरा भखभखाट[6] करता बोले छै। लोहा सूं धापिया सूरा मद छाकिया सा बोलै[7] छै। नै सूरमा भड़ां रा माथा धरती पड़िया होट डसै छै। जिणां नै नारद रिखेस जोगण्या [आम सामां] ताळी दैर हंसै छै। राय आंगण मैं लोही बहतो इसौ दरसायो सो जांणै आज इन्द्र पतंग रो मेह बरसायो। घणां रा डील जनेऊ घाट[8] उधड़ जावै छै। घणां रा धड़ बिनां माथै तरवार बावै छै। केई धरती पड्या तड़छा खावै छै। सो जांण लोटण कबूतर लोट जावै छै। किळादारां रा हाथां रा तीरां सूं भड़ां रा डील फूटै छै। सो फिरंगी फुहार री पतंग री फुहार छूटै छै।

कवित

बहै तेग बिकराळ, पड़े जोधार अपारां[9] ।
जड़ै टूक जरदाळ, बजे डाक[10] भयंकारां ।।
बजर झाट बिकराळ[11], अथग खग धार बरस इंद ।
खळक श्रोण बह खाळ, नाळ रत बहै नीर नद[12] ।।

---

१. बेहद, २. वेस चल, ३. मोसर केस भुहार मील, दाखे दाद दनेस, ४. ज्यां सु फूट रा फूटरां का, ५. बड़ाका ६. लकभकाट, ७. डोलै, ८. जबुत्रु, ९. पडे जोध अपंपर, १०. बणै हर, ११, बरसाल, १२. बद,

---

लथोबथ=गुत्थमगुत्था; हंगाम=हल्लागुल्ला; बेढ=युद्ध; बुहार=भोंहे; फूठरा=सुन्दर; चाचरां रा=सिरों के; फाचरां=टुकड़े; फीफरा=फेफड़ा; पतंग=हल्का पीलापन लिए हुए लाल रंग; तड़छां=कुलांच; जरदाळ=कबच वाले वीर; डाक=डमरू, एक वाद्य यन्त्र; बजर=वज्र; रत=रक्त, लाल रक्त के;

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बह चाळ अचूका खग बगै, कट अरियां कपाळ रो[1] ।
इक हात ताळ बागी इधक, रंग ऊका रिणताळ रो ॥

द्रब सूर चखांज दोठ, जांण अंगीठ अगन झळ ।
काळ रूप जिम कीट, बूंह लग चीठ खंच बल[2] ॥
धाक धोक गज धीठ, घड़ो मजीठ सोस गत ।
अनड़ बजर की सीख[3], पलट नहं फेर पीठ प्रत ॥
भड़ भाट-भीट गोलां बजर, वहै नीठ रथ भांण रो ।
लोह पाट-पीट इधको लगै, रीठ बाज रूकांण रो ॥

फूल घावां फरड़का, अंग लरड़का उड़ेवा ।
झिलम टोप झरड़का, खाग जरड़का खुलेवा ॥
सोकतीर सरड़का, वहे[4] खरड़का बगतर ।
ठैले प्रेत ठरड़का, रूले दरड़का रगतर ॥
बरड़का सूरमां सिर बड़ै, डसण वीर करड़क डसै ।
गरड़का ग्रीध लेवण घणूं[5], दूर रंभ हड़भड़ हंसै ॥

चोफाड़ां चाचरा, उड़ै फाचरा अपंपर ।
अछै खाग आचरा, घड़च ताछ ताछ रा (रूलं) घर[6] ॥
कटै सीस[7] काचरा, ग्रीध डाचरा लिये गट ।
नारद सिव नाचरा, बिढ़ै साचरा महाभट ॥
पाचरा दीध गयंदां पीठ, असमर ओछाड़[8] आचरा ।
नाचरा झूल रंभा निकट[9] बरे सूरा सत बाचरा ॥

---

१. करमाल रो, २. भुहले चीठ मुछ बल, ३. इट, ४. बाण, ५. गल ले घणुं, ६. घड़च ताछ रा रूलै धर, ७ कसीस, ८. ओजड़, ९. तिकट,

---

कपाळ=मस्तक; चखांज=चक्षु; अंगीट=अंगीठी; कीट=भयंकर, इन्द्र, अर्जुन; बूंह=भोहें; चीट=चिपकी; धीठ=धृष्ट; मजीठ=मजीठे के रंग जैसा लाल; नीठ=कठिनता से; रीठ=झड़ी; रूकांण=तलवारों; फूल=पैनीधार, तलवार; फरड़का=फरड़ फरड़ की ध्वनि; लरड़का=लीरे, सीधे लम्बे टुकड़े, झिलम टोप=एक, प्रकार का टोप; झरड़का=लम्बे टुकड़े; जरड़का=जड़ने से; सोकतीर=तीरों के अजस्र प्रहार; सरड़का=सनसनाते; टरड़का=ठरड़-ठरड़ की ध्वनि; दरड़का=रक्त का तेज बहाव; बरड़का=घावयुक्त; करड़क=करड़-करड़ की आवाज; आचरां=हाथ के; नाचरा=नृत्य; ओछाड़=उत्साह, उफान; झूल=समूह;

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बारता

चौसठ जोगण्यां श्रीधण्यां मंगळ करै छै। भूल का भूल रंभावा का सूरमां नै बरै छै।

दूहा

जिम गयंण तारा झड़ै, अछरां खड़ै बिमांण।
पड़ै भूलरा सुरपुरी[1], अड़ै बरण कज आंण ॥

आवै गळमाळा अछर, अंतराळा पग आय।
बिकराळा जोधा बणै, ज्वाळा क्रोध जगाय ॥

बारता

असी रीत सूं अपछरां तो बरबा नै अड़ै छै। अेक अेक जणां[2] ऊपर पांच-पांच जणी पड़ै छै। घणी जण्यां भीड़ मैं बरबा नै आवै छै। सो बरमाळा भूलै हर हार ही पहरावै छै।[3] इम्रत का प्याला भरे नै सूरां नै पावै छै। नै घणा गाढ़ा सुस दिरावै छै।

दूहा

प्यालो रंग रो पीवजै,[4] आईजी[5] री आंण।
बैठ बिवाणां सुख करो, जी बालम घण जांण ॥

पड़्यौ सीस धर[6] ऊपरै, धड़ बाहै खगधार।
बनड़ो जोगीदास बण, अछर बनी अणपार ॥

कवित

गाज तबल[7] घण घरर, थरर उर कायर थटी।
करर जोध अत क्रोध, भरर सल तीर भ्रकुटी ॥
सरर तीर बगि सोक, परर नहीं भज होय पर।[8]
उरर मांझ अणपार, तरर रत छुटे भीजतर ॥

---

१. पड़ै ढुल रा सुरपति, २. सुरा, ३. भुलि नै हार हीय हरावै छै, ४. प्याला अे क्युं नहीं पावो, ५. थानै आईजी, ६. धरती, ७. गाजे, तबल, ८. भीज होय तपर,

---

खड़ै=चलावे; अंतराळा=आंते; सुस=शपथ, प्रतिज्ञा, आईजी=आई माता; बनी=दुल्हन;

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लुटै जोध धरर बीच घाव लग, हरर सहत जोगण हंसी।
हथलेव अछरर हाथ हुय, बरर रंभ इंदपुर बसी॥

वारता

इसी रीत सूं जोगीदासजी नै अपछरा बरै छै। नै हीरा मोत्यां री निछरावळ करै छै। इसी रीत सूं दूजा सूरा तरवार बावै छै। नै टूक टूक हुय जावै छै। अेक हाथ मैं तो अपछरा रो हाथ झाललियो छै। अेक हाथ सूं तरवार बावै छै। आंरो तमासो देख नै रिख नारद घणो सरावै छै। जणां नै अपछरां कैवै छै, नरदेह भांज हर सुरदेह पावै छै। पण जणां रा मन मैं फेर तरवार बावण री आवै छै। [तीणां नै] अपछरा कहै—ख्यातीला[1] पीव थांरा तो मन मैं आहीज आवै छै। नरदेह तो टूक टूक करी पण सुरदेह रै लाग जावै छै। अतरो तो कोर नहीं करीजै। भलां अबै तो मां सांमोहो भाळीजै[2]। नरलोक रो तो रोस परो निवारो। हर बिवांणां बैठ नै सुरलोक[3] पधारो। जुद्ध मैं चंडी का हर सिव का डाक बागै छै। [ज्यूं ज्यूं] सूर सामंतां रा माथा आकास लागै छै। नै गोरधनजी महीयारचो तरवार बावै छै। नै आपरा भड़ा नै जुदा जुदा विरदावै[4] छै। लड़वे कूं सूरा लड़ावा कूं महापूरा असा बिरद कहावै छै। सो सूरां नै तो रोस अणावै[5] छै। हर आप तरवार बावै छै।

दूहो

गोवरधन बाही घणी, असमर जुड़ खग आय[6]।
जात सो बिसां चोढ़ जळ, पड़ियो धर जस पाय॥

वारता

इसी रीत तरवार बावा रो हाको हुयो। सो गढ मैं हर सहर मैं न मायो। राजा कहवाटजी [सुता ही] सुण पायो। जद जांण्यो भांणेज ऊको आयो।
[तरां] कहवाट कहै—

---

१. हो जी खातीला, २ देखी जै, ३. इन्द्रलोक, ४. बतलावै, ५, तो जोस चढ़ावै, ६. असमर जुध विच आय,

---

ख्यातीला=ख्याति प्राप्त, उत्साही; आहीज=वही; मां=मेरे; डाक=डमरू, वाद्य; महापूरा=परिपूर्ण; अणावै=उपजाते, पैदा करते; असमर=तलवार; बिसां=चारणों की १२० शाखा; जल=उज्जवल करके;

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोरठा

कळहण कटकेह,[1] कहजै पाटण मैं किसौ।
झींक उड़ै झटकेह, आयो दीसै ऊकड़ौ।।

धर अंबर इक धार, अरक रजी चढ़ आंथियौ।
समहर बागो सार, आयो दीसै ऊकड़ौ।।

कळहळिया केकांण, आज पाटण ऊपरै।
रथ रवि थयो रातांण[2] आयो दीसै ऊकड़ौ।।

रूकां आकारीठ, भोट पड़ै माथै भड़ां।
छोडण मांमा पीठ, आयो सहीज ऊकड़ौ।।

वारता

उठै तो हाको सुणै नै कहवाटजी मन मैं नेठाव करै छै। अठी गढ़ मैं मारोमार तरवार बहै छै। सूरमा बरण नै आंमा-सामां अपछरां रा बिवांण फिरता किसाहेक निजर आवै छै। सो जांणै डोलर हींडा रा पालड़ा ऊंचा हर नीचा जावै छै। औ समो देख नै मांगळ कहै[3]—

सोरठा

अपछर धर[4] असमांण[5], बरणवार[6] बरकाज बह।
जिम डोलर[7] पट जांण, इम दीसै नभ ऊकड़ा।।

रातम्बर मुख रोख, तोड़ण अर ऊभौ तठै।[8]
झोका ऊका झोक, अरक आप मुख आखियो।।[9]

---

१. कळहळ होय कठ है, २. रथ अथमीयो रातांणा, ३. इसो समो देख नै मांगळ भाट ऊकाजी नै हर जेसाजी नै बिडदावै छै। ४. धड़, ५. अहमाण, ६. वरण वध्या, ७. जिम मेलर। ८. रातंबर मुख झाळ रूप, ९, मुख उचरै।

कळहण=कोलाहल; कटकेह=सेना का; झींक=जड़ी लगना; रजी=रज, धूल; कळहलिया=हिनहिनाये; केकांण=घोड़े; रूकां=तलवारों की; आकारीठ=झड़ी, प्रहार, युद्ध; भोट=भुट्टे; नेठाव=धैर्य; डोलर हींडा=ऊपर नीचे चक्कर लगाने वाला एक तरह का झूला; पालड़ा=पलड़े, पालने; रातम्बर=रक्त वर्ण; झोक=शीघ्रता से प्रहार।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बजे सोक बिकराळ, पंखराळां जू पालटै ।[1]
गुड-लोही भरगाळ,[2] अवल धपाया ऊकड़ा ।।

ऊका बाय अबीह, पत गरिया सारी प्रथी ।[3]
धजवड़ धौळै दीह, पिसण अनेकां पाड़िया ।।[4]

मचियो घांण मथांण, अनंतराय रै ऊपरै ।[5]
कस जमडाढ़ केवांण,[6] आयो आछो ऊकड़ा ।।

खळकै स्रोणी खाळ,[7] ग्रीध गळां लेवै गटक ।
बरंग किया बांहाळ,[8] आछट[9] खागां ऊकड़ा ।।

रीठ बगी[10] घण राड़, बसुदा रंग रातो भयो ।
पूरब जेम पहाड़, सूरज ऊको[11] सोहियो ।।

बारता

ऊकोजी कजियो करै जिण सूं गढ़ ने जमी राता हुवा किसाहेक निजर आवै[12] छै । परभात रा सूरज ऊगां पूरव रा डूंगरां री सोभा पावै छै ।

सोरठा

बहै खाग बिकराळ[13] अनंत दलां सिर ऊकड़ा ।[14]
(तिम) दाबै लोहा तार, सबणीगर साबण[15] मही ।।

समहर बागो[16] सोक, रातंबर मुख इम रटै ।
भोका ऊका भोक, रंग तो जसा कवाटउत ।।[17]

---

१. पंखराळां भुला यह खड़ी, २. लोही भर गाला, ३. पत गरीया उका वयण यबीह, ४. पीसण अनेक पाडीया, सारी प्रथी धजवड धोलै दीह, ५ अनंतराय दल उपरा, ६, कमज कम ठुढ केवाण, ७. स्रोण खालाह, ८. चरंग कीयां चालाह, ९. आछटन, १० भगी, ११ उगा, १२. दरसावै, १३. बकार, १४. सिर कड़ा, १५. साबु, १६. बांणां, १७. भोका उका तोनै भोक, रंगा जैसां केवाट रा ।

सोक=सरड़ाटा; पंखराळा= बाण; गुड-लोही=रक्त प्रवाह और घाव; अबीह=निर्भय; धजवड़=तलवार; पिसण=शत्रु; बरंग=टुकड़े-टुकड़े; आछट=आघात; सबणीगर=साबुन विक्रेता; जसा—जसराज;

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बारता

ऊकोजी जैसोजी तरवार बावै छै । सो जांण सबणीगर साबण[1] मै तांत चलावै छै । इण भांत सूं सूरा लड़ै छै । नै अपछरां रा बीवांणां चढ़ै छै ।[2]

दूहो

कंवर खग बाहै किसन, इन्द्रजीत जिम आप ।[3]
सात बीसी संग[4] सुभड़ां, धड़ पड़ियो लड़ धाप ।।[5]

बारता

इण रीत[6] अेक सो अेक भाई बेटां सूधो कंवर खेत पड़ियो । राजा अनंतरायजी भाग नै बादळ महल जाय चढ़ियो ।
(तरां) भाट मांगळ कहै–

दूहो

घट सूका कायर भगा, रावळ कूकारोल ।
ऊका अरियां ऊपरां, रूक कियण रणचोळ ।।[7]

बारता

इण रीत [सू बादळ महलां रै गलै] तरवार बहती देख नै राणी गहलोतणी कहै । छोरी राणी नै कहै–[8]

सोरठो

बादळ महलां बाट, झट खागां[9] जोधा झड़ै ।
[छोरी कहै] कळ दबियौ[10] कैंवाट, आयो बाहर[11] ऊकड़ो ।।

बारता

अै बचन छोरी रा मूंढा रा सुण नै रांणी नै सुध आई । हर मन में बिचार्‌यो-किणी रीत सूं राजा बंचै तो ऊकाजी नै कहूं ।[12] ऊकोजी है मारा बहनोई । तो रांणी गहलोतणी कहै—

---

१ साबु, २. वीवाणां अड़वडै छै, ३. जिम आय, ४ साथे, ५. खग धाय, ६. भांत ७. रूकां देय रे चोळ, ८. राणी गहलोतणी छोरी नै कहै, ९. झटकां क्यु. १०. हलियो, ११. वोहड़, १२. ऊकाजी सु बचै ।

तांत=चर्म तन्तु; सात बीसी=एक सौ चालीस; रावळ=अन्तःपुर; कूकारोळ=रोने-चिल्लाने की आवाज; कळ दबियौ=जंजीरों से बंधा हुआ ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोरठा

ऊका म्हार आज, कर चूड़ो राखै कमध ।
मो बेटी महाराज, करूं पेस कहवाट री ।।

तरां रांणी गहलोतणी कहै—ऊकाजी अबै तो मो सांमो देखीजै । आज राजा मनै कांचळी री बगसीजै । तरां मांगळ कहै—ऊकाजी, राणी रो वचन सुण नै राजा नै नहीं मारसो तो घणी सोभा बदसी । च्यार जुगां ताई चांद सूरज रैसी जितरै कवेसुर सुजस कहसी । [फेर] मांगळ कहै—

दूहो

प्रथमी दध संकर ब्रहम, सूरज चंद सहास ।[1]
ऊका थारो नर अमर,[2] जग करसी जसवास ।।

बारता

तरां ऊकोजी कहै— अनंतरायजी रीस मैं आय नै मरजावतो पण भलो अवसाण दीधो । नै महलां रा पगतिया चढै नै अनंतरायजी रो हाथ पकड़ लीधो । [तरां] ऊकोजी कहै— अनंतरायजी, थारां पगां मैं बेड़ी घाल हर पींजरा मैं जड़ावसूं । अोर म्हारा मामा मैं कुपीत करी जतरी कुपीत थां मै करावसूं । इण रीत सूं अनंतरायजी नै[3] [हाथ पकड़ नै] ऊकोजी नीचा लाया । सो इसो समो देख नै मांगळ बिरदाया—

सोरठो

ऊका भूखो आवियौ, लांगा[4] ज्यूं ही लंक ।
कोयलापुर कूको हुवौ[5], आड़ो बळियो अंक ।।

पीछटै जोध पछाड़, उछळै जळ ओछै मछी ।
बाला तू बेछाड़,[6] अढंग गढां सिर[7] ऊकड़ा ।।

---

१. सहाय, २. अनर, ३ रो, ४. लंगडा, ५. कोयलापुर मैं कूकहै, ६. बाला तू बो बाड़, ७. अडंग ढाया ।

चूड़ो=स्त्रियों के सुहाग का प्रतीक-चूड़ा या चुड़ला; मो=मेरे; काचळी=कंचुकी; बदसी=बढ़ेगी, कही जायेगी; अवसाण=अवसर; पगतिया=सीढ़ियां; कुपीत=दुर्व्यवहार; लांगा=हनुमान; कूको=पुकार; बेछाड़=काबू में न आने वाला वीर ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खळहळता रत खाळ, पळ भखती पंखण पिया ।
पिसणां[1] रत परनाळ, अवल चलाया ऊकड़ा ॥

बळे अछर[2] बरमाळ, हींडळती पैरचां हियै[3] ।
रंगिया खग रणताळ, ऊभो जोतर ऊकड़ा ॥

नीधस जैत[4] नगार, भूंह मूंछ अणियां भिड़ी[5] ।
ऊका मुख इण बार, सूरज बारै सोहियौ ॥

अड़ै सीस असमान, जग बातां रहसी जरू ।
जैसा बड़ा जवान, कीधो जंग केवाटउत ॥

जैसा तो भड़ जेम, सुत व्हैतो सुरराज रै ।
अटक रावण घर अेम, कोय न हुतो केवाटउत ॥

अनत सोहड़ अणपार, केई भड़ उला पड्या ।[6]
नीधस[7] जैत नगार, जैसौ ऊकौ जीतिया ॥

जाजम पर जोधार, इळ पड़िया लागै इसा ।
जेहवो खेत तिजार, ओला पड़ियां[8] ओपवै ॥

कजिया मैं गोठ रा भाव रो कवित्त

मसतक[9] बाटी मेल, मांस कर साथ जिमायो ।
घर लोही घ्रत धार, गीत मिल जोगण गायो ॥
कर चाटू केवांण, आप परूसण ऊकौ ।
सोहड़ पांत सांखला, धार खग धारां[10]ढूकौ ॥
कव जेम ग्रीध जयकार कर, गोठ खाय गजखांनियां ।
इण भांत करी ऊकै अचड़, मगज धार मिजमांनिया ॥

---

१. पीयणा, २. अपछर, ३. हींडलतीय हस्यां हीय, ४. नीदसं जीत, ५. भीली, ६. पडीया केई उला प्रगट, ७. नीदसे, ८ मार्‌यौ, ९. मसतग, १० घालण ।

पळ=मांस; पिसणां=शत्रुओं के; रत=रक्त; नीधस=नगाड़े की ध्वनि; तिजार=तिजारे के पौधे का फूल, अफीम का खेत; ओळा=ओले, उपल; चाटू=लकड़ी का चम्मच; परूसण=परोसने वाला; अचड़=अचल ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बारता

तरां ऊकोजी कहै–मांगळ अनंतरायजी नै कहवाटजी कनै ले चालो। सो कहवाटजी नै बारै काढ़ो नै अणां नै पींजरा मांय घालो। तरां मांगळ अेकलो हीज [चलाय नै] कहवाटजी कनै आयो। हर कहवाटजी बतळायो–

सोरठा

आयो मांगळ ऊक, आयो कन आवण कहै।
कोयलापुर मैं कूक, माची किण बिध मांगळा।।

[तरां मांगळ कहै]–

त्रहत्रहता त्रांबाट, बाजीजै बाला तणां।
कानां केम कवाट, सुण सूतो सुरताणउत।।

बारता

तरां ऊकैजी उठै आय नै पींजरा रा बंध तो परा बाढ़ीया[1] नै छाती उपरां सूं माला पर काढीया।[2] नै कहवाट नै बारै काढ लीधो। [तरां] जेसैजी हर ऊकैजी लोहां मैं झकबोळ हुयोड़ां[3] मुजरो कीधो कहवाटजी [घणा] खुसी होय छाती रे लगाय[4] लीधा। अो समो देख नै मांगळ कहै—

सोरठो

मुजरो[5] इतो मरोड़, मुजरो मामा सूं करै।
जीज्यो बरस[6] करोड़, अरक तपै ज्यूं ऊकड़ा[7]।।

बारता

तरां ऊकै जी कही– मामाजी इक हाथ सूं ताळी बागी सो देखीजै। अोर अनंत-रायजी नै पकड़ लायो छूं सो आंमै कुपीत करीजै। जद कहवाटजी कही– आ बात तो तोसूंहीज वण आई अोर तैं मूंढा सूं कही सो सारा ही सांच दिखाई।
[फेर] कहवाटजी कहै—

---

१. कटाय, २. करि, ३. लोही सु सुरंगा हुवां ४. भीड़, ५. मुजयता, ६. जुग, ७. अरक इति भुव ऊकड़ा।

त्रांबाट=तांबे के पेंदे के नगाड़े; झकबोळ=तरबतर; अरक=सूर्य; आंमै=इनमें; तोसूंहीज=तुझ से ही; मूंढ़ा=मुख।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोरठा

झटकां ऊठी झाळ, पाटण नगर प्रजाळियो[1] ।
तै ताळी रिणताळ, अवल बजाई ऊकड़ा ॥

बह लोही बिकराळ, खाळ पड्या भू खादरां ।
तै ताळी रिणताळ, अवल बजाई ऊकड़ा ॥

ऊका ताळी अेक, तूं कहतो बागी तिका ।
झमक खगां रिणझेक, अवळ बजाई ऊकड़ा ॥

वारता

अै दूहा कहे नै कहवाटजी ऊकाजी नै घणी स्याबास दीधी । जद ऊकोजी कहै-थांरा प्रताप सूं हुई छै । आ कहे नै फेर सलाम कीधी । ऊकोजी कहै– इण अनंतराय रो काळो मूंढो करे नै गधेड़ै चढावो । पछै अणी नै तोख,बेड्यां,हतकड्यां जड़ावो । भाट मांगळ कहै– और तो कुपीत अबारू मती करावो । इण नै ठीकरा मैं पांणी पाय नै भूंगड़ां तो बेगा चुगावो[2] । तरां भूंगड़ां [लेबा] नै तो आदमी नै मेल्यो नै आप साराई साथ सूं दरबार आया । और आपरा नै अनंतरायजी रा आछा आछा रजपूत पड़िया ज्यांनै दाग दिराया । [और] चाकर भूंगड़ा लायो जो अनंतरायजी रा मूंढा आगै कीधा । नही खाधा जद तीखी आरां रा चपरका दीधा । अो समो देख नै [भाट] मांगळ कहै–

दूहो

अइयो अणभंग ऊकड़ा, पोरस भड़ अणपार ।
सहतो गाज न सायरां, आज दई तै आर ॥

सोरठो

उणहिज[3] दूंगै आर, भोजन वेहिज भूंगड़ा ।
अनंतराय इण बार, सहै सरीरां सांखलो ॥

---

१. जपरजली, २. चरावो, ३. वाइ जै ।

झटका=शस्त्र प्रहारों से; झाळ=ज्वाला; प्रजाळियो=जला दिया; रिणताळ=रणभूमि; खाळ=नाले; खादरां=गड्डे; तोख=गले में डालने की बेड़ी; अबारू=इसी समय; ठीकरा=मिट्टी के घड़े के टुकड़े; दाग=दाह; गाज=गरज, गर्जन; सायरां=सागरों की; आर=पैनी लोहे की छड़; दूंगै=नितम्ब ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धंस सनमुख[1] खग धार, पगरीपग बाळी प्रगट।
अनंतराय रै आर, आछी दिराई ऊकड़ा ॥

नरपतियां घर न्हाळ,[2] बंध्र कर कर लायो बड़ा।
पाटण नगर प्रजाळ, आ संग ऊभो ऊकड़ा ॥

वारता

तरां कहवाटजी कहै-[ऊकाजी], अनंतरायजी [घणां] राजां मैं कुपीत करी छी नै खोटा करम करिया छा। जो तो ऊका आं आंरा किया भुगत लिया[3]। घणा राजां नै भूंगड़ा चुगाया छा। जो भूंगड़ा पण चुगिया छै। इण कुमांणस मैं कुपीत करां जतरी ही थोड़ी कहावै। पण इणनै पाछो गादी बैसांणां[4] तो जमी ऊपरै आपणी वात आछी रह जावै। तरां ऊकोजी कहै-आपरी वात कुण मेट करै छै। आपरी बात कुण मेट करै छै। आपरो हुकम हुवै जो करां।[5] पण सुजांणसाह मैं कुपीत करण रो हुकम कीजै। आ सुणे नै मांगळ ऊकाजी नै कहै—

सोरठो

कळखां[6] बारै काढ़, सौ राजा बंध्र मैं सिड़ै।
बेगो सो फंद बाढ़,[7] आंख्यां देखै ऊकड़ा ॥

वारता

इसी सुणे नै अेक सो अेक राजा बंध मैं छा ज्यां नै तो बारै कडाया[8]। नै सुजांणसाह नै पकड़वानै चाकरां नै खींनाया। सुजांणसाह नै आंण नै मूंढो काळो कीधो। गधेड़ा[9] ऊपर चाढै ने सहर बारै काढ दीधो। अनंतरायजी ने पाछा गादी बैठांण दीधो। पछै आपरै नै जैसाजी रै लागी छी जीण रो पाटो पींड कीधो। और अनंतरायजी रै अेक सो अेक भाई बेटां रै बेर्यां छी जणा रो साहो[10] कढावो। अठी ने अेक सो अेक राजा छा ज्यां रो बीमाव[11] मंडायो। ओ समो देख ने [भाट] मांगळ कहै—

---

१. साउ. २. नाल ३. ईण रा ईण भुगतिया, ४. बैठांण, ५. आपरो हुकुम कुण लोपे छै। सला हुवे सो करीजै, ६. कलषोय, ७. ज्यां रा बगे राव फंद बाढ़े, ८. था सो तो बध माय सु. ९. रासबा, १०. नव रेखा साबो, ११. व्याव।

धंस=प्रविष्ट होकर; बाळी=जला कर; संग=साथ; बैसांणां= बैठावै; मेटे=लोपे; कळखां=कारावास; फंद=बंधन; बाढ=काट; साहो=लग्न; बीमाव=विवाह।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोरठा

ब्याव रचाय बिजोग, पाटण मै रचिया प्रगट ।
साथे हरक'र सोग, आछा रचिया[1] ऊकड़ा ।

गांड[2] फाटतां गोठ, के रोवै गावै किती ।
सोग[3] हरक सँलोट, आछो रचियो ऊकड़ा ।।

बारता

[तरां] मांगळ कहै– बाप, बाप, ऊकाजी इसी तो पाटण मैं तुहीज रचावै । सो मन मैं तो रोवै छै चोड़ै गवावै । इसी तो पाटण मै तुहीज कर दिखावै । और राजां सूं आ बात बण हीज नहीं आवै । अतरा समाजोग मै सारा ही राजां बींद बण नै केसरिया कीधा । नै घणा हरक सूं आंमां-सांमां फूलदारू रा प्याला पीधा । जदी कविजन लोग कहै—

सोरठा

सारा बींदां सैत, केसरियां बागो कियां ।
नवल बनो[4] नखतैत, आगल दीपै[5] ऊकड़ा ।।

बणियो मोड़ बखांण, जगमग नग हीरां जड़्यो ।
भळहळ ऊगो भांण, सरवहियो कहवाट सी ।।

बारता

इण रीत[6] सूं तोरण बांधे हर चंवर्‌यां मैं फेरा खावै छै । नै लुगायां मंगळ गावै छै ।

सोरठा

सोव्रन कुंभ संवार, मंडप तणाया[7] मुखमलां ।
निपट अनोखी नार, चंवर्‌यां मै गावै चतुर ।।

बींदणियां नै बींद, चंवर्‌यां सूं पर[8] चल्या ।
उलट घटा छिब इंद, सोव्रन रा बादळ सजै ।।

---

१. कीधो, २. गोडि, ३. सोग, ४. बींद, ५. दीसै, ६ भांति ७. बणाया, ८. परण ।

नखतैत=नक्षत्रधारी; चंवर्‌यां=विवाह मंडप, सोव्रन=स्वर्ण; कुंभ=कलश; संवार=सजाकर, बींदणियां=दुलहिनें, परैं=दूर; उलट=उमड़कर ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पोल-प्रवाहां[1] पात, लाखां धन रीझां लिये।
ध्रव जै[2] रूपा धात, करै उठै[3] कहवाट सी॥

बारता

इण रीत सूं परण नै डेरै आया। जद अनंतरायजी सारा बींदां नै गोठ करे नै जीमाया। अनंतरायजी नै भांज्या हर परणै नै नगारा बाजिया। सो जाण भादवा मैंमंत माय ईंद सा गाजिया। और अनंतरायजी रा हाथी घोड़ा पालखी [और आछो डेरो] साथे लीधा। बाकी डेरो रह्यो छो, जो कविजनां नै त्याग मैं लुटाय दीधो। नै अनंतरायजी नै कोयलापुर पाटण रो राज दीनो। हर आप सारा राजावां सहेत गिरनार नै कूच कीनो। इण तरै सूं फौजां रा घमसांण[4] गढ़ गिरनार नै चाल्या आवै छै। जिणां [रा पगां] सूं सेसनाग री फुणां लचका खावै[5] छै। घोड़ां रा खुरां सूं रेत उड़ै छै। जिणां सूं सूरज ही नहीं सूजै[6] छै। नै उड़ता पंखी मांय अमूझै छै। फौज मैं मद वहता हाथी गाजै छै। जिणां री गाज[7] सूं इन्द्र ही लाजै छै। और कोतल घोड़ा [सोन री साखत सूं] मूंढा आगे चालै छै। नै नकीब हाका करता हालै छै। इण रीत सूं फौजां चाली आवै छै। गिरनार रा पटायत आडा फिर फिर गोठां जीमावै छै। इण रीत गोठां जीमता गढ़ गिरनार नेड़ा आया। और बदाईदार बदाई देण नै दौड़ आया। बदाईदारां बदाई रो दिरब पायो। बदाई सुण सिरकार[8] का लोगां नै [इसो] हरक आयो। सो जांण सूखती खेती पर मेह बरसायो। और रणवास में जाय बधाई दीधी। तिकां नै तास-बादला सहेत मोत्यां की बधाई कीधी।

दूहो

दिया बधाईदार नै, जळहळ पनां जुहार।
मानूं झड़ मोत्यां तणो, बूठो इंद उणबार॥

बारता

इण रीत बधाई सुणै नै रसाला रो लोग उमायो-उमायो फिरै छै। और कळस वधाबा री तकीद करै छै। और गढ की हर सहर की लुगावां कळस लेर[9] नीसरी। सो जांण इन्द्र नै बधाबा अछरा उतरी।

---

१ प्रभा कवि, २. जउ, ३. बूठो, ४. दल, ५. जाबे, ६. दीसे, ७. सूण, ८. सहर का, ९. वधावा नै।

प्रवाहां=स्तुति–गायक; ध्रव=बरसती है; धात=धातु; मैंमंत=मदोन्मत; ईंदसा=इन्द्र के समान; त्याग=दान; कूच=प्रस्थान; घमसांण=समूह; फुणा=फन; लचका=लचकना; अमूझै=घबराते हैं; पटायत=जागीरदार; आडा=सामने; नेड़ा=समीप; दिरब=द्रव्य; झड़=झड़ी; बूठी=बरसा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिर सकुंभ[1] सोना तणा, निकसी ले सिर नार ।
वारूं इण छिब ऊपरै, सह अपछर सो वार ।।

चंदबदनी म्रिगलोचनी, सोव्रन देह सकाज,
लज-सांवळ तोड़े लियां, ग्रह[2] चाल्यो गजराज ।।

सज सिंणगार सहेलियां, ओपंती इण बार ।
मनहुँ सोभा मंडप[3] री, गढ़ आई गिरनार ।।

मुख देख्यां लाजै मयंक, हिरग आंख[4] लज होय ।
अंग देख्यां लाजै अछर, सोव्रन अंग[5] सकोय ।।

आंज[6] नयण अनोप इत, काजळ रेख कराय ।
मांनहु स्याही कवांण मझ, पांण जहर दई पाय ।।

बारता

इण भांत [सुं लुगायां] सिंणगार करै कळस बधावा नै आई । अठीना सूं कह्वाटजी री फौज आई । सौ कैसी हीक दरसाई—

कवित

घटा जेम गजराज, पंत-व्रुग दंत पळविकय ।
कव दादुर जयकार, बीज[7] जिम सेल भळक्किय ।।
कंठ मोर नकीब, हाक मिल करत हजारां ।
गाज इन्द्र अग्राज, गाज इम घुरत नगारां ।।
बिध बिध अनेक सिरपाव बण, घटा बरण इण घाटरी ।
सुरपति जाण आयो सघण, कना फौज[8] कह्वाट री ।।

---

१. सरस कुंभ, २. गह, ३. माझ की, ४. हिर छांखे, ५. रंग, ६. आरौं, ७. बीजल, ८. सेन ।

सांकळ=शृंखला; ओपंती=सुशोभित; कवांण= धनुष-बाण; पंत-वुग=बक पंक्ति; सेल=बल्लम, घुरत=घोष करते हैं; सघण=मेघों सहित ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बारता

अठी सूं तो सरब राजां सहेत राजा कहवाटजी आया। अठी सूं सहर का लोग लुगायां कळस बधावा ने आया। तिके कळस बधावती गीत गावै छै। तिणां रा गीतां री नै डील री छटा देखै नै अपछरा ही लजावै छै।[1]

दूहो

लगथगती कर कळस ले, सुनमुख आय सकाज।
कर बंदण मेले कळस, मोहर रुप्या[2] महराज॥

बारता

इसी तरै[3] सूं कळस वांधे'र [आगा] चलाया। सो सहर का लोग सूधा बाजार मैं आया। ओर महाजन लोग लखेसरी[4] सोना रूपा री मुठियां भरै छै। [नै सीलामां करै छै] नीजर निछरावळ करै छै। ओर तास बादलां सूं ओछाडचो बाजार किसौहेक नीजर आवै, सो जांण सांवण भादवा रा महीनां मैं बादळ दरसावै।

दूहो

सोह बाजार सिंगारियो, तास जरी जरतार।
जिण बेळां मांहे जरू, निरखीजै गिरनार॥

सोरठा

गजगमणी गिरनार, कांमण गोखां गात कढ़।
सांवण मास सुढार, दांमण फरती देखजै॥[5]

दूहा

कामण जरी पौसाककर, ऊभी महलां आय।
मंड भादू बादळ मही, दणियर सो दरसाय॥

---

१ लाज पावै छै, २. मोहरूर, ३. रीत, ४. खसरी, ५. दामणी बादल देखीयै।

लगथगती=प्रेम से लड़खड़ाती; सूधा=सीधे; लखेमरी=लक्षपति; तास बादलां=बादले से बने हुए ताश, कपड़ा; ओछाड्यो=आच्छादित; सुढार=सुन्दर; दांमण=दामिनी; दणियर=दिनकर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गीत बधावा गावती, महल[1] महल मंझार।
उण बेळा अफछर जिसी, निरखीजै वे नार ॥

बारता

इण रीत सूं मे'लां मैं चढ़ लुगायां गीत बधावा गावै छै। श्रोर असवारी ऊपर गुलाल की पोटलियां बावै छै। श्रोर असवारी आगै जांगड़ गावै छै। भगतणियां को नाच होतो आवै छै। इण रीत हंगामा होता दरवाजै आय हाथी सूं उतरिया। तास बादलां का पगमंडा बिसतरिया। श्रोर रथां मांय सूं बीनणियां नै पीरोयत गठजोड़ा बंधाया। इण रीत कुळ देवी पूज गठजोड़ा छोड़ दरबार[2] आया। श्रोर कहवाटजी सारा राजावां सेहेत दरबार कर बिराजिया। नै नोबत नगारा बाजिया। पछै नवी[3] स्याम को बखत हुयो। जद नाजर सारी राण्यांरा बछावणां जुदा जुदा कराया। नै जुदा जुदा बीड़ा दिराया। पोहोर डोड रात गई जद महलां आया। श्रोर ताछ-ताछ का दारू मंगाया। श्रोर नाजर कै हाथ राण्यां नै ताकीद कराई। सोळै ही सिणगार सज आप आप रै महल आई।

दूहा

बणठण राणी बिहद[4], इम सख्यां संग[5] आत।
इंदराणी साथै अछर, इंद परण[6] कूं जात ॥

साड़ी मांहे सांपरत, दीखै मुख अणदाय।
झळकी जांणे बीजळी, मांनू बादळ मांय ॥

आई महलां ऊपरै, लियां सखी बोहो लार।
मदन तणै जांणे महळ, आई रति इण बार ॥

लाजन्ती पिव पाय लगि, नयणां उपज्यो नेह।
दादर सूखी देह पर, मांनू[7] बूठो मेह ॥

---

१. महलां २. बारै, ३. नीमा, ४. बणी ठणी हद बेहद, ५. सखी मंड, ६. परसण, ७. मांनू कहु।

निरखीजै=दिखाई देती है; जांगड़=ढोली; पगमंडा=पांवड़ें; बिसतरिया=बिछाए गए; पीरोयत=पुरोहित; गठजोड़ा=ग्रंथि-बंधन; स्याम=शाम, सायं; डोड=डेढ़; ताछ-ताछ=भांति-भांति; सख्यां=सखियां; सांपरत=सप्रत्यक्ष।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गायणियां आई घणी, सझियां बोहो[1] सिणगार।
करे सिलांम अळापकर, तार खंचे तिणबार ।।

झमक-झमक नूपर झणक[2], थई थई त्रत[3] थाय।
निरख नाचबा नारियां, अछरा ही लज आय ।।

किलांण हूंत अलापकर, सुणे बिहंग लग सोय।
सुख सेजां पोढ़ै रही, हरक कहवाट त्रप होय ।।

बारता

इसी रीत सूं च्यार पोहर रात तो आणंद मैं नीसरी। ओर परभात रै बगत गावणहार लोगां नैं हजारां रूपियां री रीझ इनाम करी। ओर राजा कहवाटजी ऊकौजी जैसोजी सारा राजावां सहेत दरबार आया। ओर फौजदार जोगीदास रा बेटा नैं दरबार बुलाया। नै दूजा ही सरदारां नैं हजूर बुलाया। तिणां रा घणा आदर कीधा। नै पटा बधारा दीधा। ओर अेक सौ अेक राजा छा ज्यांनै गोठ कर बीदा कराया। घोड़ा हाथी कड़ा-मोती दिराया।

दूहा

भोजन भांत अनेक बण, दारू मांस दपट्ट[4]।
महपतियां नै हेत मन, कीधी गोठ कवट्ट ।।

भद्रदंती हय थाट बण,[5] ऊंट थळी खगसार।
पोसाखां गहणां[6] सहत, इग विध दिया अपार ।।

अेक सूं अेकण आगळा, राजा रावळ[7] राव।
करै मुजरो कहवाट नै, पैर पैर सिरपाव ।।[8]

---

१. घणां, २. झांणण, ३. लचत, ४. दबट्ट, ५. हय भाट भणि, ६. सीरपावां भुख, ७. राणां, ८. पहरै यु सिरपाव।

तार=वाद्यों के तार; खंचे=खींचे, कसे; झमक-झमक=झणकार की ध्वनि; बिहंग=विहंग, पक्षी; बधारा=वृद्धि के; बीदा=विदा; दपट्ट=अधिकता से, दपट कर; कवट्ट=कहवाट; भद्रदंती=हाथी; पैर पैर=पहन-पहन कर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वारता

इसी तरै[1] सूं सिरपाव पहर नै ऊकाजी कनै आया। आय नै विणती करता हुआ—

दूहो

अनंतराय रोक्या यहां,[2] मागध जूं दुखमाय।
किसन जूं ही ऊका कमध, आप छुड़ाया आय।।

वारता

मगद देस रै राजा जुरासींध बीस हजार आठ सै राजां नै बंध मैं दिया। सो श्रीकिसन जुरासींध नै मार राजा नै काढ़ लिया। बंध मांय सूं इसी रीत मांनै अनंतरायजी कनां सूं छुड़ाय लिया। इण बात रो आपनै मोटो जस आयौ।

तरां ऊकौजी कहै—आछां करणवाळो तो श्री ईसवर छै। इसी कह घणी यारै-लबै कीधी। ऊकैजी आपरी तरफ सूं कड़ा मोती देनै सीख दीधी। उठा सूं राण्यां सूधा चलाया सो कतराक दीनां मैं आप आप रै घरै आया। पछै अेक दिन रै समाजोग राजा कहवाटजी ऊकौजी जेसौजी दरबार वणायो। उण समै मांय भाट मांगळ आयौ नै कही—ऊका थारी बात दातार सूरो सुणसी। तिण रो तो सीस आकास उड़सी। अोर सूबां[3] कायरां री छाती मै घड़ां सा[4] पड़सी। दातार सूरां नै तो लागसी इम्रत सी प्यारी। सूबां कायरां नै लागसी जहर सी खारी। दातार सूरो सुण करसी दांन। सूंब कायरां रा धूजसी प्रांन। दातार सूरा नै तो आ बात घणी सुहावसी। नै सूंब कायरां नै आ बात नहीं भावसी। कवि तो सुजस कहसी। जुग जुग आ बात रहसी। इसी रीत सूं मांगळ भाट बिरदाय अर सुभराज कियौ[5]। तरां मांगळ नै लाख-पसाव कियौ। [तरां] मांगळ कहै—

सोरठो

ईहग चारण आय, हर जेहड़ो भाटां हुवो।[6]
मन चींत्यो मिल जाय, कलब्रिछ ज्यां[7] ऊका कमध।।

---

१. इण रीत, २. अम्हा, ३. सुमां, ४. धड़का, ५. दियो, ६. हर भाट जीसड़ो हुवै, ७. ज्यां ही।

मागध=मगध नरेश-जरासंध; किसन=श्रीकृष्ण; यारै-लबै=चापलूसी; सूबां=सूम. कृपण; घड़ा सा=धड़का; सुभराज=आशीष; ईहग=कवि; मनचींत्यो=मनचाहा; कलब्रिछ=कल्पवृक्ष।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बारता

उण समै मांय गिरनार कोई चारण भाट आवै छै। ज्यां नै मनचिंत्या माल [राजा कवाटजी नै ऊकाजी कनै सूं] मिलै छै।[1] नै राजा कहवाटजी ऊकौजी राजा करण ज्यूं झलै छै।

सोरठा

हय गैवर[2] नग हीर, कव पातां[3] रीझां करै।
समदां वाळी[4] सीर, सरवहियौ कहवाट सी॥

गढां सिरै गिरनार, सरवहियौ राजां सिरै।
सोहो जाणै सैंसार, कोटां धणी कहवाट नै॥

बारता

इण रीत सूं वरस अेक भाणेज ऊका नै गढ़ गिरनार राख्या। नै घणा हरख[5] कीधा। मनचाया[6] माल खाया उड़ाया अर दीधा। तिण समै मांय बिरखा रित घटा आई। सो धटा री रूप देखै नै ऊकैजी राजा कहवाट कना सूं सीख मंगाई। जद कहवाटजी कहै—भाणेज सीख सीख कांई करो। गिरनार को राज तो थांरा हीज भुजां[7] छै। थे तो अठै हीज रहो। तणां [फेर] कहवाटजी कहै--

दूहो

क्यूं मांगो ऊका कमध, इण रित सीख अबार।
रंग[8] महलां राजस करो, सहलां रमो सिकार॥

तरां ऊकौजी कहै—मांमाजी अठै तो मारो घर छै, हठ नहीं कीजै। पाछै मारा देस मैं भोमियां रो जोर छै सो मांने तो सीख ही दीजै। इण रीत सूं कहवाटजी तो घणी

१. पावै छै, २. हय गय, ३. कवियां नै, ४. चाली, ५. हंगाम, ६. मनचीत्या; ७. दीमो, ८. बैठा,

झलै छै=शोभा पाते हैं; कव पातां=कविगण; सीर=प्रवाह; कोटां=दुर्गाधिप; सहलां=पहाड़ों पर; रमो=खेलो; भोमियां=भूस्वामियों।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आरलवै[1] कीधी। पण ऊकैजी तो सीख मांग लीधी । तरां कहवाटजी ऊकाजी रा वाखांण करै छै।

दूहा

राठौड़ां री कुल त्रिया, गरभ न सीळ धरन्त ।[2]
ज्यां भरतारां भांजणा, ते भाजणा न जणन्त ।।

त्यां ऊपर सांचो तपै, तीन पोहर आदीत ।
डिगै नहीं ब्रमंड डिग्यां, जुध खागां अगजीत ।।

बारता

ऊकाजी राठोड़ां ऊपर तीन पोहोर सूरज तपै छै। जो तो थे सारी ही साची कीधी। इसी आरैलवै[3] करै नै सीख दीधी। कहवाटजी आछी आछी चीजां वसतां दीधी जो ले नै तारापुर आया। ज्यां नै भाई सादूळ नै सहर रा लोग सांमा जाय नै वधाय लाया। हर'अठै गिरनार मैं राजा कहवाटजी रीझां कर गोठां करै छै। और तीख-चोख करबा री[4] मन मैं हूंस धरै छै। घणा कवेसरां नै हाथी घोड़ा गांम देवै छै। और आलीजा भंवर हुवा थका दिन महोला[5] लेवै छै। तिणां री कवेसुर सुजस करै छै --

दूहा

केई घोड़ा गांव[6] की, केई गयंद कहाय ।
करां चढ़ै कहवाट रै, लंका दियै लुटाय ।।[7]

तारां ज्यूं सारो जगत, पळकै जोत प्रकास ।
सूरज ज्यूं ही कहवाट सी, इधको जोत उजास ।।

---

१. आरेल भी, २. सीला गरभ धरंत, ३. आरैल भी, ४. कर बाकी ५. दीन मोल, ६. घोड़ा अरू गांम, ७. तो लंका देह लुटाय

आरेलवै=आजिजी, अनुनय; अगजीत=विजय प्राप्ति में अग्रणी; कवेसरां=कवियों को; आलीजा भंवर=अलबेले रसिक; महोला=व्यतीत करना ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पांख-हमाउ कहवाट अर, सांचो अंह सभाव ।
ज्यां सांमो देखै जरू, रांकां करै'ज[1] राव ॥

तेरा सै सताळिस मो, सुकल पख महा मास ।
तीज गरू की बात तद,[2] प्रतगो राज प्रकास ॥

दानव अरि हरि नांम दख, जात सखी बर जांण ।
हर जेठी के सुत कहो, बात कवाट बखांण ॥

अठारासै चोपनै, संमत कात्रक[3] मास ।
कीसन पख मांहे[4] कथी, बात कहवाट विलास ॥

बारता

आं दोनूं दूहां मैं बात रा कहबा वाळा रो नाम छै । हर जात छै । हर समंत भीती छै सो बाचो सो बिचार लीज्यो ।

अेती श्री कहवाट सरवहिया री नै अनंतराय सांखला री बात संपूरण लिखतु । पुस्तक ठाकुरां राज श्री श्री १००८ श्री फतैसिंघजी कंवरजी श्री श्री सगतसिंघजी वचनारतु खांप मेड़तिया बिसणदासोत राजसथांन बरड़ोद मधे जा राठोड़ रांमसींग भींवसिंघोत रा चीरंजीवो चरण कमलायनु लिखतु खराड़ी रा खीडिया नरसींगदास भैरुदासोत संमत १९०८ रा जेठ बद १४ गुरवार संपूरण लिखी छै । बाचो सीखो जो सिरदार जै श्री भैरूंनाथ री बचावसी ।

दूहो

जब लग मेर अडग है, जब लग सिस हर सूर ।
जब लग आ पोथी रहै, जब लग गुण भरपूर ॥

---

१. कर दे । २. तीज गरू कवाट तद, ३. कातीग, ४. पडवा ।

पांख-हमाउ=पक्षी विशेष; महा=माघ; कात्रक=कार्तिक; मांहे=में; कथी=कही ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

112760
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुजस लीज्यौ जगत मैं, कीज्यौ कर उपगार ।
दया धरम चित राखज्यो, असगत के आचार ।।

बारता

इण बात मैं दोयसै पैंतीस तो दूहा छै । चोईस कवित्त छै । बाकी री बारता छै सो बिचारसी । श्री रांम रांम रांम ।

दूहो

गढ़ बांका गिरनार मैं, थिर घोड़ा भड़ थाट ।
नर अनमी रहियो निडर, कीधो राज कवाट ।।

ओ दूहो श्री कहवाटजी मैं नरसिंगदास कयौ छै । रावळ श्री फतैसिंघजी रा पुरमावण सु ।[1]

---

१ संबत १९०५ रा असाड वद २ करमसोत रिडमलसिंघ कृत मनोरथाणां मध्यै लिखतं जोहडा नरसिंघदास जोधपुर मध्ये ।

दोहा–कटी ग्रीवा भइ कुबरी, नीचे रहिया नैण ।
थ्यां दुखां पोथी लिखी, नीकां रखियौ सैण ।।१।।

श्री रस्तु : ।। कल्यांणमस्तु

दोहा–दुलहनि राज वसंत की, दूल्यो नंद कुमार ।
जाचक तो वे जानिजे, वंदी । पित अपार ।।१।।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महाकवि रणछोड़ भट्ट प्रणीतम्

राजप्रशस्तिः महाकाव्यम्

सम्पादक—डॉ० मोतीलाल मेनारिया

विक्रम की अठाहरवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में महाकवि रणछोड़ भट्ट द्वारा संस्कृत भाषा में लिखा गया २४ सर्गों का ऐतिहासिक महाकाव्य है, जो प्रसिद्ध झील राजसमन्द के नोचौकी घाट पर २५ प्रस्तर शिलाओं पर उत्कीर्ण है। इस प्रकार यह भारत भर में सबसे बड़ा शिलालेख तथा शिलाओं पर खुदा हुआ सबसे बड़ा ऐतिहासिक महाकाव्य है।

इस महाकाव्य का मुख्य विषय मेवाड़ के महाराणा राजसिंह (वि० सं० १७०९–१७३७) का जीवन–चरित्र है । प्रथम पांच सर्गों में मेवाड़ का प्राचीन इतिहास भी दिया गया है। महाराणा राजसिंह के शासन प्रबन्ध एवं समकालीन ऐतिहासिक व सांस्कृतिक स्थितियों के अध्ययन की दृष्टि से ग्रन्थ अत्यन्त महत्त्वपूर्ण एवं संग्रहणीय है। संस्कृत भाषा व साहित्य की दृष्टि से भी ग्रन्थ का अपना विशिष्ट स्थान है।

ग्रन्थ के मूलपाठ के साथ-साथ हिन्दी में भावार्थ भी दिया गया है। प्रारम्भ में विस्तृत भूमिका व अन्त में परिशिष्ट ग्रन्थ की अन्य विशेषताएं है।

वर्तमान स्वरूप में ग्रन्थ का यह प्रथम प्रकाशन है।

पृष्ठ ३४२ मूल्य ४०) रुपये

प्राप्ति स्थान:—

साहित्य संस्थान, राजस्थान विद्यापीठ, उदयपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संस्थान के संग्रहणीय प्रकाशन

१ महाराणा प्रताप स्मृति ग्रन्थ
२ Mewar Through the Ages
३ बगड़ावत लोकगाथा
४ राजस्थान में हिन्दी के हस्तलिखित ग्रन्थों की खोज [चार भाग] [अप्राप्य]
५ ओझा निबन्ध संग्रह [चार भाग]
[स्व० गौ० ही० ओझा के सम्पूर्ण निबन्ध [अप्राप्य]
६ पूर्व आधुनिक राजस्थान [अप्राप्य]
७ Selections from Banera Archives
८ पृथ्वीराज रासो [चार भाग] [अप्राप्य]
९ पृथ्वीराज रासो की विवेचना
१० ब्रजराज काव्य माधुरी
११ प्राचीन राजस्थानी गीत [बारह भाग]
१२ राजस्थानी लोकगीत [छः भाग] [भाग ४ अप्राप्य]
१३ राजस्थानी वातां [सात भाग] [भाग ५ अप्राप्य]
१४ राजस्थानी भीलों के लोक गीत [तीन भाग]
१५ आदिनिवासी भील
१६ आचार्य चाणक्य [नाटक]
१७ राजस्थान दोहावली
१८ राजप्रशस्तिः महाकाव्यम्
१९ हाड़ौती का स्वतन्त्रता आन्दोलन
२० हंस वीर्य [काव्य]
२१ हाड़ौती अंचल के राजस्थानी कवि

मुद्रणाधीन

१ कछवाट विलास
२ राजस्थानी भाषा
३ राणा रासो
४ Catalogues of Sanskrit Manuscripts
५ डिंगल गीतों की अनुक्रमणिका

प्राप्ति स्थान:—

साहित्य संस्थान, राजस्थान विद्यापीठ, उदयपुर

साहित्य संस्थान, राजस्थान विद्यापीठ, उदयपुर के लिये उमाशंकर शुक्ल, अध्यक्ष, साहित्य संस्थान, राजस्थान विद्यापीठ, उदयपुर द्वारा प्रकाशित एवं नारायणलाल गुर्जरगौड़ द्वारा विद्यापीठ प्रेस में मुद्रित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Compiled
1999-2000

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar